

Vikas Singh

ॐ गं गणपतये नमः

शुभ



लाभ



जन्मपत्रिका

Vikas Singh

Astrologer Eeshan

Varanasi

9450831636

astrologereeshan@gmail.com

सूचना

ज्योतिष एक विज्ञान है जिसके अंतर्गत ग्रहों का मानव जीवन पर पड़ने वाले प्रभावों का अध्ययन किया जाता है। इसके प्रभावों की भविष्यवाणी करने हेतु ग्रहों की स्थिति एवं इसके बल की गणना की जाती हैं। जन्मपत्रिकाओं की गणना अति सटीक है जिसमें बिल्कुल सही रेखांश प्रयुक्त हुए हैं। सामान्य तौर पर इसमें चित्रापक्षीय अयनांश का प्रयोग किया जाता है जबतक कि आप दूसरे अयनांश का विकल्प न मांगें।

कम्प्यूटर जन्मपत्रिकाएं मुख्य रूप से पाराशरी पद्धति पर आधारित हैं। हालांकि इसमें ताजिक पद्धति, जैमिनी पद्धति, कृष्णमूर्ति पद्धति, प्रश्नशास्त्र एवं पाश्चात्य पद्धतियों का भी ज्योतिषीय गणना में मिश्रण किया गया है। फलादेश मुख्य रूप से विभिन्न प्राचीन शास्त्रों जैसे बृहत् पराशर, होराशास्त्र, मानसागरी, सारावली, जातकभरणम्, बृहत् जातक, फलदीपिका, जातक पारिजात के अनुरूप, साथ ही अपने अनुभवों का भी समावेश करके बनाया गया है। फिर भी, ज्योतिष का मार्गदर्शन लेकर हम अपने भविष्य का संकेत मात्र प्राप्त कर सकते हैं। सिर्फ सृष्टि के निर्माता ब्रह्मा ही यह भविष्यवाणी कर सकते हैं कि आनेवाले समय में क्या घटित होगा?

यह जन्मपत्रिका जन्म तिथि, जन्म समय एवं जन्म स्थान पर आधारित है जो कि जातक ने हमें उपलब्ध कराया है। अतः आंकड़ों की सटीकता से संबंधित हमारी कोई जिम्मेवारी नहीं है। ज्योतिषीय गणना एवं फलादेश जातक द्वारा उपलब्ध कराए गए विवरण के ऊपर आधारित है। जन्मपत्रिका में दिए गए फलादेश जातक के लिए सिर्फ संकेत मात्र है जिस पर जातक को सावधानीपूर्वक अमल करना चाहिए न कि हूबहू जैसा फलादेश में कहा गया है, बिना सोचे समझे उसे अपने जीवन में लागू करने की कोशिश करनी चाहिए। जन्मपत्रिका के विभिन्न पृष्ठों में दी गयी सूचनाएं किसी भी प्रकार के विवाद अथवा वैधानिक कार्यवाही के लिए उपयुक्त नहीं है। अतः जातक की स्वयं की कार्यवाही से उत्पन्न हुए किसी भी क्षति के लिए हम उत्तरदायी नहीं हैं।

Vikas Singh

Model: 20yrskundali

SrNo: 115-120-105-2123 / 6802

Date: 27/03/2024

लिंग _____: पुल्लिंग
जन्म तिथि _____: 21/10/1995
दिन _____: शनिवार
जन्म समय _____: 06:06:00 घंटे
इष्ट _____: 00:50:48 घटी
स्थान _____: Khagaria
राज्य _____: Bihar
देश _____: India

अक्षांश _____: 25:31:00 उत्तर
रेखांश _____: 86:27:00 पूर्व
मध्य रेखांश _____: 82:30:00 पूर्व
स्थानिक संस्कार _____: 00:15:48 घंटे
ग्रीष्म संस्कार _____: 00:00:00 घंटे
स्थानिक समय _____: 06:21:48 घंटे
वेलान्तर _____: 00:15:17 घंटे
साम्पातिक काल _____: 08:17:47 घंटे
सूर्योदय _____: 05:45:40 घंटे
सूर्यास्त _____: 17:12:00 घंटे
दिनमान _____: 11:26:19 घंटे
सूर्य स्थिति(अयन) _____: दक्षिणायन
सूर्य स्थिति(गोल) _____: दक्षिण
ऋतु _____: शरद
सूर्य के अंश _____: 03:20:29 तुला
लग्न के अंश _____: 07:03:49 तुला

अवकहड़ा चक्र

लग्न-लग्नाधिपति _____: तुला - शुक्र
राशि-स्वामी _____: सिंह - सूर्य
नक्षत्र-चरण _____: पूंफाल्गुनी - 3
नक्षत्र स्वामी _____: शुक्र
योग _____: ब्रह्म
करण _____: तैत्तिल
गण _____: मनुष्य
योनि _____: मूषक
नाडी _____: मध्य
वर्ण _____: क्षत्रिय
वश्य _____: वनचर
वर्ग _____: श्वान
युँजा _____: मध्य
हंसक _____: अग्नि
जन्म नामाक्षर _____: टी-टीकम
पाया(राशि-नक्षत्र) _____: स्वर्ण - रजत
सूर्य राशि(पाश्चात्य) _____: तुला

चैत्रादि संवत् / शक _____: 2052 / 1917
मास _____: कार्तिक
पक्ष _____: कृष्ण
सूर्योदय कालीन तिथि _____: 12
तिथि समाप्ति काल _____: 14:29:18
जन्म तिथि _____: 12
सूर्योदय कालीन नक्षत्र _____: पूंफाल्गुनी
नक्षत्र समाप्ति काल _____: 12:38:11 घंटे
जन्म नक्षत्र _____: पूंफाल्गुनी
सूर्योदय कालीन योग _____: ब्रह्म
योग समाप्ति काल _____: 17:46:27 घंटे
जन्म योग _____: ब्रह्म
सूर्योदय कालीन करण _____: तैत्तिल
करण समाप्ति काल _____: 14:29:18 घंटे
जन्म करण _____: तैत्तिल

घात चक्र

मास _____: ज्येष्ठ
तिथि _____: 3-8-13
दिन _____: शनिवार
नक्षत्र _____: मूल
योग _____: धृति
करण _____: बव
प्रहर _____: 1
वर्ग _____: मेष
लग्न _____: मीन
सूर्य _____: धनु
चन्द्र _____: मकर
मंगल _____: मकर
बुध _____: तुला
गुरु _____: कुम्भ
शुक्र _____: मीन
शनि _____: वृश्चिक
राहु _____: मेष

Astrologer Eeshan

Varanasi

9450831636

astrologereeshan@gmail.com

चलित तथा निरयण भाव चलित

चलित अंश

भाव	भाव संधि	भाव मध्य
1	कन्या 22:17:00	तुला 07:03:49
2	तुला 22:17:00	वृश्चिक 07:30:11
3	वृश्चिक 22:43:22	धनु 07:56:33
4	धनु 23:09:45	मकर 08:22:56
5	मकर 23:09:45	कुम्भ 07:56:33
6	कुम्भ 22:43:22	मीन 07:30:11
7	मीन 22:17:00	मेष 07:03:49
8	मेष 22:17:00	वृष 07:30:11
9	वृष 22:43:22	मिथुन 07:56:33
10	मिथुन 23:09:45	कर्क 08:22:56
11	कर्क 23:09:45	सिंह 07:56:33
12	सिंह 22:43:22	कन्या 07:30:11

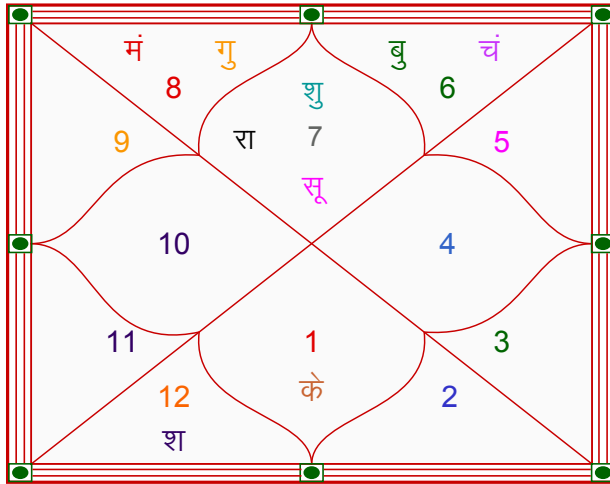
निरयण भाव चलित

भाव	राशि	अंश
1	तुला 07:03:49	
2	वृश्चिक 06:06:46	
3	धनु 06:37:36	
4	मकर 08:22:56	
5	कुम्भ 10:22:11	
6	मीन 10:27:30	
7	मेष 07:03:49	
8	वृष 06:06:46	
9	मिथुन 06:37:36	
10	कर्क 08:22:56	
11	सिंह 10:22:11	
12	कन्या 10:27:30	

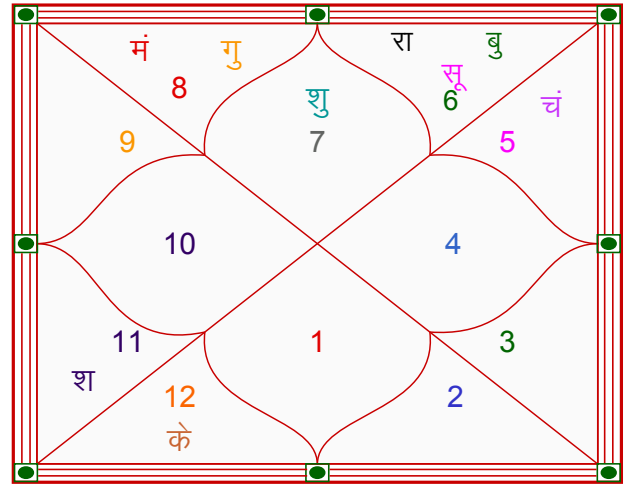
तारा चक्र

जन्म	सम्पत्	विपत्	क्षेम	प्रत्यारि	साधक	वध	मित्र	अतिमित्र
पू०फाल्गुनी	उ०फाल्गुनी	हस्त	चित्रा	स्वाति	विशाखा	अनुराधा	ज्येष्ठा	मूल
पूर्वाषाढा	उत्तराषाढा	श्रवण	धनिष्ठा	शतभिषा	पू०भाद्रपद	उ०भाद्रपद	रेवती	अश्विनी
भरणी	कृत्तिका	रोहिणी	मृगशिरा	आर्द्रा	पुनर्वसु	पुष्य	आश्लेषा	मघा

चलित कुंडली



भाव कुंडली



Astrologer Eeshan

Varanasi

9450831636

astrologereeshan@gmail.com

ग्रह स्पष्ट तथा उनकी स्थिति

ग्रह	व	अ	राशि	अंश	गति	नक्षत्र	पद	नं.	रा	न	अं.	स्थिति
लग्न			तुला	07:03:49	318:51:11	स्वाति	1	15	शुक्र	राहु	राहु	---
सूर्य			तुला	03:20:29	00:59:40	चित्रा	4	14	शुक्र	मंगल	शुक्र	नीच राशि
चंद्र			सिंह	23:04:35	13:07:55	पू०फाल्गुनी	3	11	सूर्य	शुक्र	शनि	मित्र राशि
मंगल			वृश्चि	06:18:21	00:42:55	अनुराधा	1	17	मंगल	शनि	बुध	स्वराशि
बुध			कन्या	15:12:15	01:03:13	हस्त	2	13	बुध	चंद्र	गुरु	मूलत्रिकोण
गुरु			वृश्चि	20:05:11	00:11:13	ज्येष्ठा	2	18	मंगल	बुध	शुक्र	मित्र राशि
शुक्र			तुला	19:30:59	01:14:41	स्वाति	4	15	शुक्र	राहु	मंगल	मूलत्रिकोण
शनि	व		कुंभ	25:03:04	00:03:05	पू०भाद्रपद	2	25	शनि	गुरु	बुध	स्वराशि
राहु			तुला	02:43:11	00:00:17	चित्रा	3	14	शुक्र	मंगल	शुक्र	मित्र राशि
केतु			मेष	02:43:11	00:00:17	अश्विनी	1	1	मंगल	केतु	शुक्र	मित्र राशि
हर्ष			मकर	02:48:54	00:00:44	उत्तराषाढा	2	21	शनि	सूर्य	गुरु	---
नेप			धनु	29:02:39	00:00:32	उत्तराषाढा	1	21	गुरु	सूर्य	मंगल	---
प्लूटो			वृश्चि	05:25:29	00:02:06	अनुराधा	1	17	मंगल	शनि	शनि	---
दशम भाव			कर्क	08:22:56	--	पुष्य	--	8	चंद्र	शनि	शुक्र	--

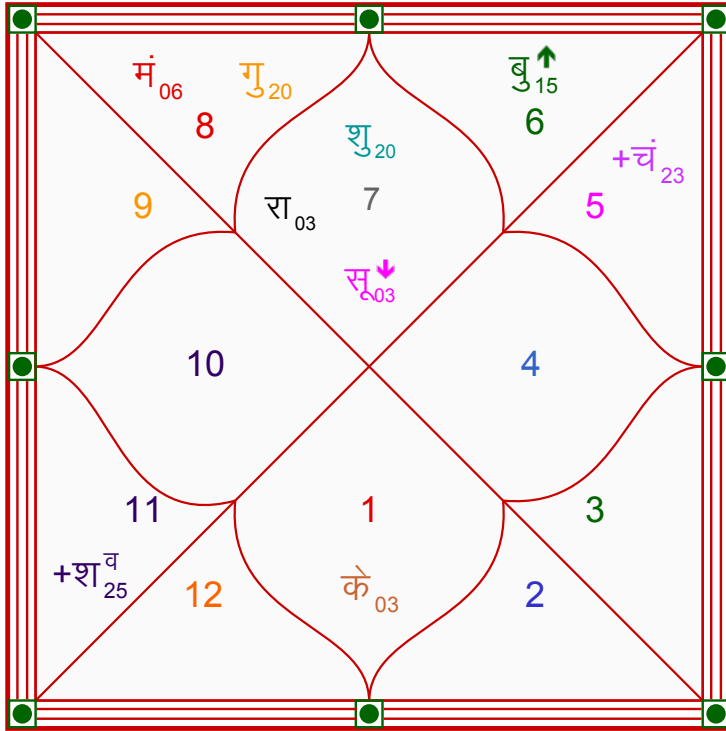
व - वकी स - स्थिर

अ - अस्त पू - पूर्ण अस्त

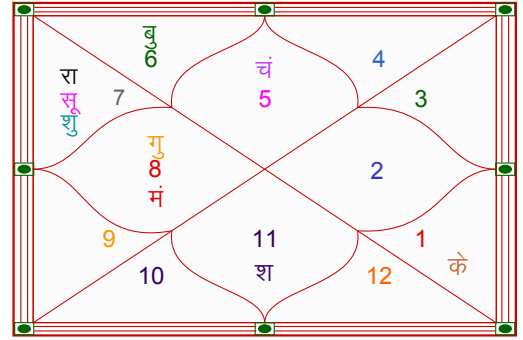
राहु : स्पष्ट

चित्रपक्षीय अयनांश : 23:48:01

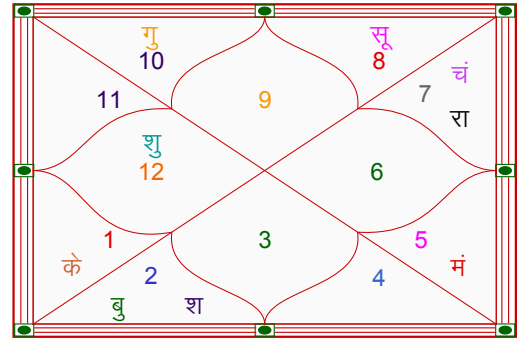
लग्न-चलित



चन्द्र कुंडली



नवमांश कुंडली



Astrologer Eeshan

Varanasi

9450831636

astrologereeshan@gmail.com

शुभाशुभ ज्ञानम्

शुभाशुभज्ञान आपको अपने मित्र एवं शत्रु वर्ग का बोध कराता है। मूलांक, भाग्यांक एवं मित्रांक से मित्रता एवं साझेदारी करने से लाभ तथा सहयोग की प्राप्ति होती है। साथ ही शुभ दिन एवं वर्ष उन्नति कारक तथा शुभ ग्रहों की दशाएं लाभदायक होती हैं। इसी प्रकार मित्रलग्न लाभदायक एवं मित्र राशि से घनिष्ठता होती है।

शुभरत्न धातु एवं रंग धारण करने से शारीरिक एवं मानसिक स्वस्थता बनी रहती है तथा भाग्य रत्न धारण करने से सौभाग्य में वृद्धि होती है। शुभ समय में कोई भी कार्य प्रारम्भ करने से उसमें इच्छित सफलता की प्राप्ति होती है। साथ ही इष्टदेव का ध्यान एवं जप से मानसिक शान्ति तथा सफलता मिलती है। शुभ पदार्थ अन्न, द्रव्य आदि का दान या व्यापार शुभ दिशा में करने से वांछित लाभ प्राप्त होता है। इस प्रकार शुभाशुभज्ञान का दैनिक जीवन में प्रयोग शुभफलदायक सिद्ध हो सकता है।

मूलांक	3
भाग्यांक	1
मित्र अंक	3, 5, 7, 9, 1
शत्रु अंक	4, 8
शुभ वर्ष	21,30,39,48,57
शुभ दिन	शनि, बुध, शुक्र
शुभ ग्रह	शनि, बुध, शुक्र
मित्र राशि	वृश्चिक, मेष
मित्र लग्न	मकर, मिथुन, सिंह
अनुकूल देवता	सूर्य
शुभ रत्न	हीरा
शुभ उपरत्न	जरकिन, ओपल
भाग्य रत्न	पन्ना
शुभ धातु	रजत
शुभ रंग	रजत
शुभ दिशा	दक्षिणपूर्व
शुभ समय	सूर्योदय
दान पदार्थ	मिसरी, दधि, श्वेतचन्दन
दान अन्न	चावल
दान द्रव्य	दूध

Astrologer Eeshan

Varanasi

9450831636

astrologereeshan@gmail.com

अंक ज्योतिष फल

Model: 20yrskundali

SrNo: 115-120-105-2123 / 6802

Date: 27/03/2024

नाम	Vikas Singh
जन्म तिथि	21/10/1995
मूलांक	3
भाग्यांक	1
नामांक	3
मूलांक स्वामी	गुरु
भाग्यांक स्वामी	सूर्य
नामांक स्वामी	गुरु
मित्र अंक	6, 9, 1
शत्रु अंक	4, 8
सम अंक	2, 5, 7
मुख्य वर्ष	2010,2019,2028,2037,2046,2055,2064,2073
शुभ आयु	15,24,33,42,51,60,69,78
शुभ वार	मंगल, शुक्र, गुरु
शुभ मास	मार्च, जन, सित
शुभ तारीख	3, 12, 21, 30
शुभ रत्न	पुखराज
शुभ उपरत्न	सुनहला,पीला हकीक
अनुकूल देव	विष्णु
शुभ धातु	स्वर्ण
शुभ रंग	पीत
मंत्र	ॐ क्रां क्रीं क्रौं सः भौमाय नमः
शुभ यंत्र	मंगल यंत्र

8	3	10
9	7	5
4	11	6

Astrologer Eeshan

Varanasi

9450831636

astrologereeshan@gmail.com

अंक ज्योतिष फल

आपका जन्म दिनांक 21 हैं। दो एवं एक के योग से आपका मूलांक 3 होता है। मूलांक तीन का अधिपति गुरु ग्रह है। अंक दो का चन्द्र तथा एक का सूर्य है। अतः आपके जीवन में गुरु, चन्द्र तथा सूर्य ग्रह का शुभ-अशुभ प्रभाव रहेगा। मूलांक स्वामी गुरु के प्रभाव से आप एक विद्वान व्यक्ति कहलायेंगे। विद्या के क्षेत्र में आपकी उन्नति होगी। धर्म-कर्म के कार्यों में रुचि रखेंगे। अधिक आयु पर आप आध्यात्म के क्षेत्र में चले जायेंगे। आप एक अनुशासन प्रिय व्यक्ति रहेंगे एवं अपने अधीनस्थों से अपेक्षा रखेंगे कि वह भी अनुशासन में रहें। आप काम में शिथिलता या देरी पसन्द नहीं करेंगे। इससे आपके मातहत आपके विरोधी होंगे।

सूर्य के प्रभाव से आप एक दृढ़ प्रतिज्ञा व्यक्ति होंगे। स्वभाव में हठीपन भी रहेगा एवं आप अपने कार्यक्षेत्र में सूर्य के समान ही चमकेंगे। लेकिन चन्द्र प्रभाव से कभी कभी अंधेरे का सामना करना पड़ेगा। इससे आपके मन में निराशा के भाव आयेंगे। आपका जीवन सन्तुलित रहेगा एवं ऐसे कार्यों में आपका मन लगेगा जहाँ कार्य ईमानदारी से होता हो। आप स्वयं अपनी मेहनत तथा सच्चाई पर भरोसा करेंगे और इसी के सहारे सफलताएं अर्जित करेंगे।

आपकी ऐसे कार्यों में रुचि रहेगी जहाँ बुद्धिजन्य कार्य होता हो। लेखन, पठन-पाठन, भाषण, ज्ञान-विज्ञान के क्षेत्रों में कार्य करने पर आपको अच्छी सफलताएं प्राप्त होंगी। सूर्य, चन्द्र, गुरु के संयुक्त प्रभाव से आप अपने जीवन में उच्चता को अवश्य प्राप्त करेंगे एवं आपकी अन्तिम अवस्था काफी खुशमय रहेगी।

भाग्यांक एक का अधिष्ठाता सूर्य ग्रह को माना गया है। इसके प्रभाव से आप अपने कार्यक्षेत्र में एक चतुर, बलवान, बुद्धिमान, राजसी ठाटबाट को पसन्द करने वाले स्पष्ट वक्ता होंगे। आप स्वभाव से गम्भीर, उदार हृदय, परोपकारी, सत्य के मार्ग पर चलने वाले यशस्वी तथा विरोधियों को परास्त करने में विश्वास रखने वाले शूरवीर व्यक्ति के रूप में पहचान स्थापित करेंगे। आपका जीवन चक्र एक राजा की भाँति संचालित होगा अर्थात् आप हुकूमत पसन्द, स्वतंत्र तथा स्थिर विचार धारा पर निर्भीक चलेंगे। अहं या स्वाभिमान आपमें कूट-कूट कर भरा होगा।

आपकी महत्वाकांक्षाओं की पूर्ति, आपकी मेहनत से होगी। अधिकारों में वृद्धि होगी। सूर्य अग्नि तत्व का द्योतक होने से आपका तेज समाज के विभिन्न क्षेत्रों में व्याप्त होगा। जीवनी शक्ति आप में अच्छी रहेगी। एवं दूसरों को प्रोत्साहित करने में कुशल रहेंगे। आपका भाग्य उच्च श्रेणी का होने से आप एक दिन अपने श्रम, लगन, स्थिर प्रकृतिवश सर्वोच्चता को प्राप्त करेंगे। सूर्य प्रकाशित ग्रह होने से आपको हमेशा प्रकाश में रहना सुखकर लगेगा और ऐसे ही कार्यक्षेत्र को पसन्द करेंगे, जिसमें नाम तथा यश दोनों ही मिलें।

आपका मूलांक 3 है तथा भाग्यांक 1 है। मूलांक 3 का स्वामी गुरु है तथा भाग्यांक 1 का स्वामी सूर्य है। मूलांक 3 तथा भाग्यांक 1 के बीच सम संबंध हैं। इसके प्रभाववश आपके अंदर सूर्य एवं गुरु का प्रभाव उच्च कोटि का होगा। आप रोजगार-व्यापार के क्षेत्र में अत्यधिक सफल

व्यक्ति सिद्ध होंगे। आप ऐसा रोजगार पसंद करेंगे, जिसमें आपकी हुकूमत बनी रहे, अर्थात् स्वतंत्र रूप से आप कार्य करना अधिक पसंद करेंगे। आपके रोजगार का क्षेत्र ऐसा रहेगा जिसमें दूसरों का भला और सामाजिक सुधार होता हो। आप स्वतंत्र रूप से रोजगार के क्षेत्र में अपने निर्णय लेंगे एवं निर्भीक चलते हुए नाम तथा धन प्राप्त करेंगे। अध्ययन-अध्यापन जैसे कार्य आपको विशेष पसंद आएंगे। जिस कार्य में मुखिया का पद प्राप्त हो, ऐसी आपकी महत्वाकांक्षा रहेगी। रोजगार में आप सच्चाई के मार्ग पर चलेंगे एवं दान-पुण्य भी करेंगे। आपके विरोधी परास्त होंगे और आपका कार्यक्षेत्र विशालता को प्राप्त करेगा।

आपका भाग्योदय 19 वर्ष की अवस्था से प्रारंभ हो कर 28 वर्ष की अवस्था पर विशेष उन्नति प्राप्त करेगा तथा 37 वर्ष की अवस्था पर आपका पूर्ण भाग्योदय होगा।

आपके मूलांक 3 की मित्रता 6 एवं 9 से है तथा भाग्यांक 1 की मित्रता 4 एवं 8 से है। अतः आपके जीवन में 1, 3, 4, 6, 8, 9 के अंक विशेष महत्वपूर्ण रहेंगे। इनसे आपके जीवन में कुछ विशेष घटनाएं घटित होंगी।

आपके मूलांक का आपके भाग्यांक से सम संबंध होने से मूलांक-भाग्यांक के प्रभाव न्यूनाधिक मात्रा में आपके अनुरूप जाएंगे। आपके जीवन की प्रमुख घटनाएं इन्हीं अंकों की तारीखों मास, ईस्वी सन् या आयु के वर्षों में घटित होंगी। जब कभी इन्हीं अंकों की तारीख, मास वर्ष के साथ आपके लिए निर्धारित शुभ वार का भी मेल होता हो, तो ऐसा दिन आपके लिए विशेष फलदायी तथा किसी भी कार्य को प्रारंभ करने, पत्र लेखन, या उच्च अधिकारी/व्यक्ति से मिलने हेतु अधिक उपयुक्त रहेगा। आप अपने विगत जीवन में घटित घटनाओं का अवलोकन करेंगे, तो पाएंगे कि काफी घटनाएं इन्हीं अंकों के मास, वर्ष या दिन को घटित हुई होंगी।

अपने विगत जीवन में उपर्युक्त सभी अंकों का विश्लेषण करने के बाद जो अंक आपके अधिक अनुकूल जा रहे हों, उन्हीं अंकों के आधार पर भावी योजनाएं बनाना आपके लिए अधिक लाभप्रद रहेगा।

आपके लिए जनवरी, मार्च, अप्रैल, जून, अगस्त, सितंबर के माह विशेष घटनाक्रम वाले होंगे तथा आप कोई भी नया कार्य ऐसे ही दिन प्रारंभ करें, जब दिन, तारीख, मास तथा वर्ष आपके मूलांक तथा भाग्यांक से भी मेल स्थापित करें तथा एक ही समय पर सभी शुभ रहें।

इसी प्रकार आपकी अवस्था के ऐसे वर्ष, जिनका योग 1, 3, 4, 6, 8, 9 होता है, आपके लिए शुभ फलदायक रहेंगे।

1 . 10, 19, 28, 37, 46, 55, 64, 73

3 . 12, 21, 30, 39, 48, 57, 66, 75

4 . 13, 22, 31, 40, 49, 58, 67

6 . 15, 24, 33, 42, 51, 60, 69

8 . 17, 26, 35, 44, 53, 62, 71

9 . 18, 27, 36, 45, 54, 63, 72

उपर्युक्त वर्ष आपके जीवन में परिवर्तनकारी रहेंगे। इन वर्षों में कुछ प्रमुख घटनाएं घटित होंगी, जो आपके जीवन की दशा बदलेंगी तथा कुछ घटनाएं यादगार साबित होंगी।

लोशु फल

	9 9	2
4	9	2
3	5	
3	5	7
	1 1	
8	1 1	6

लोशु चार्ट का परिचय

लोशु चार्ट चीनी अंक शास्त्र का एक अहम भाग है। यह चमत्कारी लक्ष्मी यन्त्र पर आधारित है। इस पद्धति के द्वारा हम किसी भी व्यक्ति की सिर्फ जन्मतिथि जानकर ही बड़ी सरलता व शीघ्रता से उसके संपूर्ण व्यक्तित्व को समझ लेते हैं। इस पद्धति के द्वारा हम उस व्यक्ति के चार्ट में अनुपस्थित अंकों के हानिकारक प्रभाव को दूर करने के उपाय भी बता सकते हैं। उपस्थित व अनुपस्थित अंकों की पक्तियां कालम व समूह व्यक्ति के विशेष व्यक्तित्व को बताने में सहायक होते हैं।

अंक 1 – चार बार

आपके लोशु चार्ट में एक अंक चार बार उपस्थित है। जिस कारण आप स्वयं को व्यक्त करने में मौखिक रूप से कठिनाई का अनुभव करते हैं। आप कोमल हृदय व दूसरों का ध्यान रखने वाले हैं लेकिन आपके विषय में दूसरों को बहुधा मिथ्या बोध होता है। तनावमुक्त रहने में भी आपको कठिनाई का सामना करना पड़ता है, आपके लिए आराम करना मुश्किल होता है। आप लोग अधिक लोगों के बीच खुद को असहज महसूस करते हैं। भय, वहम एवं परिवर्तनशील स्वभाव के कारण कभी-कभी आपकी पढ़ाई में रुकावट आते हुए भी देखा गया है जिसके कारण पढ़ाई बीच में ही रह जाती है। यानी कि आप इच्छा अनुसार योग्यता न प्राप्त कर पाने के कारण शिक्षा को लेकर असंतुष्ट भी रहते हैं। स्वतंत्र रूप से कार्य करने से अधिक लाभ होते नहीं देखा गया

Astrologer Eeshan

Varanasi

9450831636

astrologereeshan@gmail.com

है। यदि आप कहीं नौकरी करते हैं तो आपके लिए ठीक रहता है। आप औरों की बनाई योजना को बखूबी पूरा कर सकते हैं हालांकि आप भी अच्छे योजनाकार हो सकते हैं लेकिन अपनी योजना को पूर्ण रूप से अमल में लाना आपके लिए थोड़ा मुश्किल होता है।

अंक 2 – एक बार

आपके लोशु चार्ट में दो अंक एक बार उपस्थित है। जिस कारण आप संवेदनशील और अंतर ज्ञानी हैं, आप एक ही झलक में दूसरे व्यक्ति का सार निकाल लेने में प्रवीण हो, किन्तु दुर्भाग्य आपको शीघ्रता से आहत भी कर देता है, आप निष्ठाहीनता को ज्ञात करने की विलक्षण प्रतिभा के स्वामी हैं। आप शांत और संवेदनशील स्वभाव वाले हो, आपको अपनी बात किसी से कहते वक्त उसे ध्यान रखना होता है। कभी कभी बात ठीक ढंग से किसी से कह नहीं पाते हो। कोई भी बात आपको बहुत जल्दी चुभ जाती है। आप बहुत भावनात्मक हो। आप बड़े ही अंतर्मुख स्वभाव के होने से आपको भविष्य में घटने वाली घटनाओं के बारे में संकेत मिल जाते हैं। आपमें हिम्मत की कमी होती है, आप अपने दिमाग को किसी चीज पर केंद्रित नहीं कर पाते, कोई भी निर्णय जल्दी नहीं ले पाते, आप बड़े मूड़ी स्वभाव के होते हैं, बहुत जल्दी अपना स्वभाव बदल देते हैं, हसते हसते गंभीर हो जाते हैं।

अंक 3 – एक बार

आपके लोशु चार्ट में तीन अंक एक बार उपस्थित है। अतः आपकी स्मरण शक्ति तीव्र तथा मस्तिष्क तीक्ष्ण व विचारोत्पादक होता है, आप व्यावहारिक होते हैं, और अपने लक्ष्य तक पहुंचने में आपका दृष्टिकोण बहुधा आशावादी ही होता है, अपनी सकारात्मक सोच व आशावादी दृष्टिकोण से दूसरों को प्रेरणा देने में भी सक्षम होते हैं। मानसिक और शारीरिक रूप से आप विशेष सुदृढ़ हो, आप बड़े स्वाभिमानी हैं। किसी के आगे झुकना नहीं चाहते, स्वतंत्र प्रकृति के होते हैं, मित्र अधिक होते हैं और उनसे ही लाभ मिलता है। आप उच्च शिक्षा प्राप्त करते हैं, अध्ययनशील तथा पढ़ने लिखने में दक्ष होते हैं, कला, विज्ञान और साहित्य में आपकी रुचि होती है, आपका रचनात्मक दिमाग और उत्कृष्ट स्मृति है। आप में से कुछ लोग जमीन से जुड़े होते हैं, आप अपने लक्ष्यों तक पहुंचने के लिए सकारात्मक दृष्टिकोण रखते हो, आप अपनी आशावादिता और ईमानदारी से दूसरों को प्रेरित करने में सक्षम हो। आप जिस कार्य को करने की ठान लेते हैं तो उसे करके ही छोड़ते हैं। साथ ही आप एक अच्छे विचारक, दूरदर्शी, संभावित घटनाओं को भांप लेने वाले होते हैं।

अंक 4 – अनुपस्थित

आपके लोशु चार्ट में चार का अंक अनुपस्थित है। अतः आप पूर्वनिर्धारित योजना के अनुसार कार्य नहीं कर पाते। कई बार आप अपने विचारों में उलझे रहते हैं और दिशाहीन हो जाते हैं। आपमें बहुधा व्यवस्था व प्रेरणा का अभाव होता है, जिसके फलस्वरूप आप तब तक प्रगति नहीं कर पाते जब तक अपने जीवन दर्शन को बदल नहीं देते। आपमें कल्पनाशीलता की कमी होती है, विचार अधिक दृढ़ एवं स्थाई होते हैं, बदलते नहीं हैं जिससे दूसरों को इनके साथ काम करने में परेशानी

महसूस होती है। आपमें दिमाग, बुद्धि और अनुशासन की कमी होती है, आप वक्त की उपयोगिता को नहीं समझ पाते। आप संयोजित नहीं होते, जिस कारण आपको जितनी सफलता मिलनी चाहिए उतनी नहीं मिल पाती। आवश्यकता इस बात की है कि आप सुव्यवस्थित होकर अपने निर्धारित लक्ष्य की ओर बढ़ें, इस अंक की अनुपस्थिति से आप अपने ज्ञान, सम्पर्क, परिवार के सदस्य तथा अपने कर्मचारियों से भी पूरा लाभ नहीं ले पाते। धीरता और सहनशीलता के गुणों के विकास से जीवन आपके लिए आसान बन जाता है।

अंक 5 – एक बार

आपके लोशु चार्ट में पांच अंक एक बार उपस्थित हैं। अतः आप भावनात्मक रूप से संतुलित हैं। आप दयालु, दूसरों के प्रति संवेदनशील व सहज प्रकृति के स्वामी हैं, दूसरों को प्रेरणा व प्रोत्साहन प्रदान करने में सक्षम होने के कारण आप संभावित सफलता से भी कुछ अधिक ही प्राप्त कर लेते हैं। आप तेज बुद्धि एवं दिमाग तथा योग्यता के कारण किसी भी काम को सफलतापूर्वक करने में सक्षम हैं। आप सामान्यतः अच्छी जिंदगी जीते हैं, आपको हर वैसे काम में दिलचस्वी होती है, जिसमें नयापन हो, आप अनेक प्रकार के व्यवसायों से धन अर्जित करने वाले, कुशाग्र बुद्धि, गणित विषय में निपुण और आपकी गणना करने की शक्ति तीव्र होती है। आप सभी विषयों को तार्किक दृष्टि से देखते हैं। वाणिज्य और कारोबार में भी आप सफल होते हैं। आप अच्छे वक्ता, संवाद और संचार के क्षेत्र में अद्भुत सफलता प्राप्त करते हैं।

अंक 6 – अनुपस्थित

आपके लोशु चार्ट में 6 का अंक अनुपस्थित है। अतः आप स्वयं में आत्म-समर्पण की भावना उत्पन्न करें, आपमें अपनी अन्तर्भावनाओं को दूसरों से छिपाकर रखने की प्रवृत्ति होती है। इस प्रवृत्ति का कारण होता है, अपने माता अथवा पिता के साथ जीवन के प्रारम्भ में अच्छे सम्बन्ध, फलस्वरूप आपको तब तक अपने संबंधों में अनिश्चयता का सामना करना पड़ता है। जब तक कि आप हृदय से उन्मुक्त व उदार होना नहीं सीख लेते हैं। चिंता और तनाव आप लोगों के लिए विषमताओं के कारण हो सकते हैं। पारिवारिक जीवन में कुछ चुनौतियों का सामना करना पड़ता है, आपको पारिवारिक सहयोग मिलने में परेशानी आती है। आपका भी बच्चों और परिवार के प्रति लगाव कम होता है, आप लोगों की मदद तो करते हैं। लेकिन खुद के लिए मदद नहीं मिलती, दोस्तों की मदद नहीं मिलती, आपको भौतिक तथा पारिवारिक सुख व भोग विलास की कमी रहती है। आप जीवन के सकारात्मक पक्ष की अपेक्षा नकारात्मक पक्ष की ओर अधिक ध्यान देते हैं। आपको कभी भी विदेश से सम्बंधित काम नहीं करना चाहिए।

अंक 7 – अनुपस्थित

आपके लोशु चार्ट में सात का अंक अनुपस्थित है। अतः आपको दूसरे लोगों की भावनाओं के प्रति अविवेक की प्रवृत्ति होती है। आप अपने दैनिक जीवन में अव्यवस्थित होते हैं। आपके कामों व पढ़ाई में रुकावट आती है। यह अंक मध्यम में होने के कारण सभी अंकों का आधार अंक है। आपकी

आध्यात्मिक अथवा आत्मज्ञान सम्बन्धी बातों में कोई अभिरुचि नहीं होती। आत्मविश्वास की कमी के कारण आप एकांकी रहना भी पसंद नहीं करते, अत्यधिक स्वतंत्रता, तर्क तथा सहृदयता की कमी आपको अलोकप्रिय बना सकती है। आर्थिक संकट का सामना भी करना पड़ता है। कई बार खुद की कार्य क्षमता में संदेह होने लगता है, कि क्या यह मैं कर पाऊंगा या नहीं। आपको पेट के रोग, सिरदर्द, रक्त विकार व फेफड़े सम्बन्धी रोग की संभावना रहती है। आवश्यकता इस बात की है, कि आप अपनी भावनाओं को अभिव्यक्त करना व दूसरों के साथ घुलमिल कर रहना सीखें।

अंक 8 – अनुपस्थित

आपके लोशु चार्ट में 8 का अंक अनुपस्थित है। अतः आप अपने वित्तीय प्रबंधन में कुशल नहीं होते, आप या तो बिलकुल ही लापरवाह होते हैं, अथवा दूसरों के प्रति ज्यादा विश्वस्त होते हैं। फलस्वरूप रुपये-पैसे के मामलों में कष्ट प्राप्त करते हैं, आपमें निर्णय शक्ति की कमी व भौतिक साधनों का अभाव रहता है। लक्ष्य-निर्धारण की भी कमी होती है, और कार्य को हाथ में लेकर अड़ बुरा छोड़ने की प्रवृत्ति भी, आपको प्राकृतिक जल्दबाजी को नियंत्रण करने, और अभिनय से पहले सोचने के लिए सिखने की जरूरत है। आप अनुशासित नहीं होते हैं, आप अपने पैसे का हिसाब नहीं रख पाते, जैसे कितना कमाया, कितना लगा और क्या बचा है। आप अधिक मेहनत करने में विश्वास नहीं रखते, आपकी अत्यधिक महत्वाकांक्षा एवं भौतिकवादी सोच आपके लिए तनाव एवं अवसाद का कारण बनती है। आपमें जल्दी स्थिरता नहीं आती, और जीवन में जल्दी से पैसा कमाना चाहते हैं। आवश्यकता इस बात की है कि आप अपनी इस स्वेच्छा की प्रवृत्ति का त्याग करें, और कुछ करने से पूर्व विचार करने की आदत का विकास करें।

अंक 9 – दो बार

आपके लोशु चार्ट में नौ अंक दो बार उपस्थित है। अतः आप आदर्शवादी, बुद्धिमान परन्तु कभी कभी दूसरों के लिए समस्याजनक होते हैं लेकिन आप अत्यधिक बुद्धिमान होते हैं। अतएव कभी कभी ऐसे लोगों को हेय दृष्टि से देखते हैं जो उन जैसे बुद्धिमान नहीं हैं। आप खास तौर पर उन कार्यों में सफल होते हैं, जहाँ कल्पनाशीलता, कलात्मकता, एवं रचनात्मकता की आवश्यकता होती है। कभी कभी बिना किसी उद्देश्य एवं स्वार्थ के काम करने वाले, यह लोग मानवता की सच्ची सेवा करने वाले होते हैं। आपको अच्छे अवसर प्राप्त होते हैं तथा दूसरों की सहायता आपको प्राकृतिक रूप से मिलती रहती है। जिससे आपका जीवन तो सफल होता ही है, साथ ही यह दूसरों के लिए भी काफी उपयोगी होता है, प्रायः आप घर के बड़ों के प्रभाव में होते हैं, इसलिए यह आवश्यक है कि आप समाज के सब स्तरों के लोगों से सामान मेल-जोल रखें।

संकल्प-शक्ति के अंक – 1. 5 व 9

यह योग इच्छा शक्ति को दर्शाता है, आपके लोशु चार्ट में 1. 5 व 9 अंकों की उपस्थिति है। अतः आपमें अत्यधिक इच्छा शक्ति है। दुराग्रही, अध्यवसायी व इरादे के पक्के हैं, और बहसवाजी में अधिक निपुण हैं। जीवन में कैसे भी हालत रहें आप हार नहीं मानते, आप में हालातों से लड़ने की

क्षमता होती है। जिस कारण जीवन में आप ऊंचाइयों को छूते हैं, विभिन्न विषयों पर आप ठोस विचार रखते हैं। यह अंक सफलता का प्रतीक माना जाता है, क्योंकि जब तक आप निर्धारित लक्ष्य तक नहीं पहुँच जाते, दृढ़ता से अपने कार्य में लगे रहते हैं। कभी कठिन समय आ जाये, और इनके पास कुछ भी न हो और अगर आप इनसे पूछें कि आप कैसे हो तो हमेशा यही जवाब देंगे कि बहुत बढ़िया, यह करोड़ों रुपये भी कमा लें तो इनके पाँव जमीन पर ही रहते हैं। ऐसे व्यक्तियों को मानसिक रूप से हराया नहीं जा सकता, इन्हें जीवन में अच्छी सफलता मिलती है। इनके चेहरे पर तेज होता है, इनकी अच्छी सूझ-बुझ होती है, और बात करने का ढंग भी बढ़िया होता है, दिमागी शक्ति भी अच्छी होती है।

जल तत्त्व – अंक 1

आपके लोशु चार्ट में जल तत्त्व की उपस्थिति है। जल बुद्धि और ज्ञान का प्रतिनिधित्व करता है, जल लचीला है फिर भी मजबूत है, अभी भी बह रहा है। 1, अंक सूर्य से सम्बंधित है, जल शांत है फिर भी खतरनाक है। जल के लिए सतह केवल शुरुआत है, इसकी गहराई में छिपे वास्तविक चाल के साथ, जल तत्त्व वाले वे नहीं हैं, हालांकि आप अपनी खुद की कंपनी और आंतरिक प्रतिबिम्ब के लिए समय का आनंद लेते हैं। आप अक्षर शांत और शांति पूर्ण होते हैं, लेकिन दूसरों को अभिभूत करने की एक बड़ी क्षमता होती है, आप निडर, साहसी व स्वाभिमानी भी होते हैं। नौकरी हो या व्यवसाय अपनी कड़ी मेहनत की बदौलत आप हमेशा उच्च शिखर पर पहुँचते हो, किसी भी कार्य को करने में आप निपुण हैं आप अपने जीवन को निष्पक्ष तरीके से देखते हैं।

खूबियां— आप राजनैतिक कार्यों में कुशल, परिवार, समाज, राष्ट्र आदि सभी का नेतृत्व करने की आपें क्षमता होती है। तेज़ नज़र, सहानुभूति और अच्छे मध्यस्थ, दृढ़, सहज और लचीला, कोमल लेकिन मजबूत, और आप दूरदर्शिता के गुणों से युक्त होते हैं।

कमजोरियां – स्व कृपालु, बहुत निष्क्रिय, दूसरों पर बहुत ज्यादा भरोसा करना, दुविधा में पड़े रहना, चिंतित रहना आदि अवगुण होते हैं।

पृथ्वी तत्त्व – अंक 2, 5, 8

आपके लोशु चार्ट में पृथ्वी तत्त्व की उपस्थिति है। पृथ्वी स्थिर और मध्यस्थ होती है। यह एक प्राकृतिक जन्म शांति रक्षक होता है। पृथ्वी धैर्यवान, विचारशील और शांत होती है। जबकि पृथ्वी गर्म और पोषित होती है, यह आसानी से स्व-केंद्रित भी हो सकती है क्योंकि यह मानती है कि यह सब कुछ का केंद्र है। पृथ्वी सुरक्षात्मक है और वे उन जड़ों का प्रतिनिधित्व करती हैं। जो सब कुछ एक साथ रखती हैं, हालांकि, यह भी नियंत्रित हो सकती है। इस तत्त्व के लोग सहानुभूति की एक बड़ी मात्रा में होते हैं और खुद को लगातार दूसरों की खुशी के बारे में चिंतित पाते हैं। 2 अंक चन्द्रमा का है, 5 अंक बुध का और 8 अंक शनि से सम्बंधित है, ऐसे व्यक्ति ६ नादय होते हैं, इनका अपना जमीन से जुड़ा हुआ मकान होता है।

खूबियां – ऐसे लोग स्थिर प्रवृत्ति के, गंभीर, व्यावहारिक, तार्किक, अनुकंपा, देखभाल, सहानुभूति,

उत्तरदायी, वफादार होते हैं और ईमानदार, पोषण, संगठित व योजना बनाने में अच्छे, मजबूत और स्थायी होते हैं।

कमजोरियां – अतिसंरक्षित, ज़िद्दी, जन्मजात कंजूस, रूढ़िवादी, जोखिम लेने में परेशानी होती है।

काष्ठ तत्त्व – अंक 3, 4

आपके लोशु चार्ट में काष्ठ तत्त्व की उपस्थिति है। काष्ठ उदार और विशाल होती है और दूसरों की गहराई से देखभाल करती है। बांस के साथ, काष्ठमजबूत होती है। फिर भी लचीली होती है और एक प्राकृतिक जन्म से नेता भी है। इसकी जड़ें पृथ्वी में गहरी खुदाई करती हैं, हालांकि, काष्ठ को जीवित रहने के लिए नमी की भी आवश्यकता होती है। काष्ठ की विशेषताएं अक्सर कामुकता और धैर्य से जुड़ी होती हैं। हालांकि, इसे संतुलित करने के लिए, काष्ठ घुसपैठ और आक्रामक भी हो सकता है। 3, अंक गुरु से और 4 अंक राहु से सम्बंधित है। ऐसे व्यक्ति लगातार विस्तार और आगे बढ़ने की तलाश में होते हैं। जटिल से जटिल कार्य को करने में सक्षम होते हैं। अपने काम को आसानी से निकाल लेते हैं।

खूबियां— यह काफी चतुर होते हैं, इनमें अच्छी समझ, गर्म, मिलनसार, दयालु, लचीला और अनुकूलनीय, स्थिर और व्यावहारिक, उदार होते हैं।

कमजोरियां – सीमाओं या सीमाओं की अच्छी समझ नहीं है, बहुत ज्यादा निष्क्रिय हो जाते हैं, दूसरों पर बहुत अधिक भरोसा कर लेते हैं।

धातु तत्त्व अंक – 6, 7 की अनुपस्थिति

आपके लोशु चार्ट में धातु तत्त्व की अनुपस्थिति है। अतः आप न तो किसी के अनुचित दबाव में रह सकते हैं और न कोई इनके विचारों पर हावी हो सकता है। आप स्वतंत्र निर्णय लेने वाले होते हैं। अनेक योजनाएं बनाते हैं। लेकिन उनको कार्यरूप नहीं दे पाते। विद्या प्राप्ति में भी कई बाधाएं आती हैं। सम्पत्ति एवं धन झगड़ों का सामना करना पड़ता है। आपमें ईर्ष्या की भावना दूसरों की अपेक्षा अधिक होती है। इनका झुकाव 2, 3, 4, 6, 9, अंक के स्त्री— पुरुषों की ओर अधिक होता है। इसमें 6, अंक शुक्र और 7, अंक केतु से सम्बंधित है। ये दोनों अंक धातु तत्त्व को दर्शाते हैं। इन दोनों अंकों की अनुपस्थिति सुखों में कमी लाने वाली है।

अग्नि तत्त्व – अंक 9

आपके लोशु चार्ट में अग्नि तत्त्व की उपस्थिति है। आग हमेशा ऊपर की ओर निर्देशित होती है और इसकी ऊर्जा कभी समाप्त नहीं होती है। यह लगातार और मजबूत है, हालांकि, यह फैलता भी है और आसानी से भटकता भी है। तत्त्व के रूप में आग के साथ रोमांचकारी साधक होते हैं, जो एक साहसिक क्षण से अगले तक घूमते हैं। आग अक्सर गर्मी, जुनून और बनाने की आवश्यकता से जुड़ी होती है। हालांकि, रिवर्स साइड पर, यह आक्रामकता, अधीरता और विनाश से भी संबंधित हो सकती है। जबकि आग गर्मी और गर्मी प्रदान कर सकती है, यह जल भी

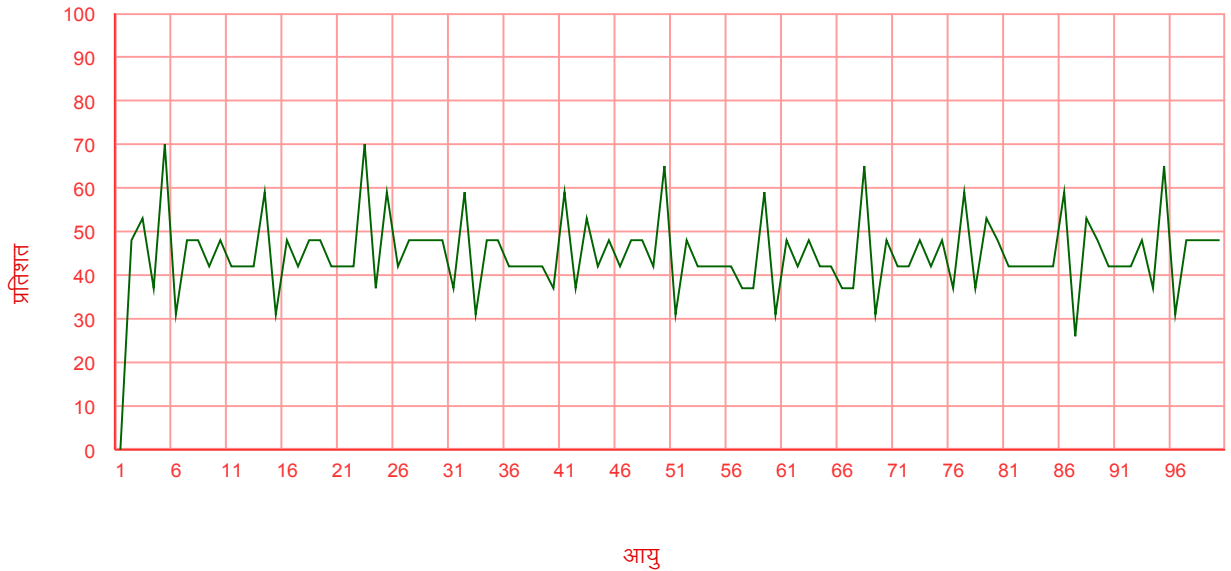
सकती है। आग अपने आप नहीं हो सकती। हालांकि यह उज्ज्वल और रोमांचक है। इसे संपन्न करने के लिए लकड़ी की स्थिरता की आवश्यकता है। 9 अंक मंगल से सम्बंधित है, इनका शरीर सुगठित, इनकी इच्छा शक्ति स्ट्रांग होती है, ये बहादुर, साहसी और पूरी शक्ति के साथ कार्य करने वाले होते हैं, इनमे निर्णय लेने की क्षमता अच्छी होती है।

खूबियां— आप भावुक और उत्साही, रचनात्मक, अनुशीलन और करिश्माई, सहज और साहसी, हमेशा चुनौती को स्वीकार करने वाले, गर्मजोशी और दृढ़ संकल्प शक्ति वाले होते हैं।

कमजोरियां — ध्यान की लालसा, रोगी, जोड़ तोड़ करने वाले, झगड़ालू प्रवृत्ति के, मिजाज के अनुकूल, आक्रामक, आवेगी और अस्थिर, अकेले रहने वाले होते हैं।

अंक जीवन ग्राफ

आपका मूलांक एवं भाग्यांक वर्ष के अंकों से एवं आयु के अंकों से जो संबंध बनाते हैं वे एक ग्राफ के रूप में नीचे दिए गए हैं। इस ग्राफ द्वारा आप यह साफ साफ जान सकते हैं कि कौन सा आयु का वर्ष आपके लिए लाभकारी हो सकता है या कौन सा वर्ष अनिष्टकारी हो सकता है। इस ग्राफ को बनाने के लिए मूलांक एवं भाग्यांक के आयु वर्ष एवं उनके अलग अलग अंकों से संबंध को लिया गया है। यदि ग्राफ में 60 से ऊपर नंबर आ रहे हैं तो वह वर्ष आपके लिए महत्वपूर्ण हो सकता है एवं जिसे 40 से कम नंबर प्राप्त हुए हैं वह वर्ष आपको कुछ कष्टदायक हो सकता है।



मुख्य वर्ष 2010,2019,2028,2037,2046,2055,2064,2073

शुभ आयु 15,24,33,42,51,60,69,78

नामांक विचार

संसार में नाम नहीं तो कुछ भी नहीं। मनुष्य का सही नाम ही गगन चुम्बी होता है। सही फलदायी नाम से ही मनुष्य देश-विदेश में प्रसिद्धि पाता है। अतः हमेशा ऐसे नाम का चुनाव करना चाहिए जो आपको समाज में यश, कीर्ति तथा प्रतिष्ठा प्रदान करे और सदियों तक समाज में आदर के साथ याद किया जाए। आपका नाम आपके भाग्य व प्रतिष्ठा को बढ़ाने में कितना साथ दे रहा है निम्न गणना से आप जान सकते हैं एवं नाम को ठीक कर अपने भाग्य की वृद्धि कर सकते हैं।

Vikas Singh
6+1+2+1+3 3+1+5+3+5
नाम का योग : 30 नामांक : 3

आपके नाम का कुल योग तीस होता है। तीन एवं शून्य के योग से तीन आपका नामांक होता है। नामांक तीन का स्वामी बृहस्पति एवं शून्य शिव या ब्रह्म है। इन दोनों के गुण-अवगुण आपके जीवन को प्रभावित करते रहेंगे। आप एक अनुशासन प्रिय तथा कठोर व्यक्ति के रूप में चर्चित रहेंगे। अधीनस्थों के साथ आपकी कार्यशैली कठोर रहेगी। इसके कारण आपको आलोचनाओं का सामना करना पड़ेगा। मुखिया बनने की महत्वाकांक्षा कार्य क्षेत्र के अन्तर्गत रहेगी। आप सामाजिक भलाई के कार्यों में रुचि लेंगे एवं कभी किसी का अहित नहीं करेंगे। आपके द्वारा सदैव दूसरों का हित ही होगा। शून्य प्रभाव से आप शान्त, कोमल हृदय, वाणी से मधुर, सच्चाई के रास्ते पर चलने वाले, धर्म-कर्म के क्षेत्र में अग्रणी व्यक्ति के रूप में प्रसिद्धि प्राप्त करेंगे।

आपके नाम का नामांक 3 है। यही आपका मूलांक भी है। इन दोनों के आपके भाग्यांक 1 से मित्र संबंध हैं। अतः आपको अपने जीवन में मूलांक तथा भाग्यांक दोनों के ही अच्छे फल प्राप्त होंगे। इसके प्रभाव से आप अपने जीवन में अपने नाम को काफी ऊँचाइयाँ प्रदान करने में सफल होंगी। आपको अपने मित्रों के बीच, कार्य क्षेत्र में सहयोगियों के मध्य तथा समाज के विभिन्न क्षेत्रों में लोकप्रियता प्राप्त होगी। किशोरावस्था की अपेक्षा युवावस्था से आप अच्छी सामाजिक पद प्रतिष्ठा प्राप्त करती जाएंगी। आपका नाम लोकप्रियता प्राप्त करेगा तथा दूर-दूर के व्यक्तियों से आपका सम्पर्क क्षेत्र बढ़ेगा। प्रौढ़ावस्था में आप काफी लोकप्रिय रहेंगी तथा सामाजिक सम्मान को प्राप्त करेंगी।

आपका नामांक 3 आपके मूलांक 3 एवं भाग्यांक 1 से पूर्णतः मिलान करता है। अतः आपका नाम आपके लिए सौभाग्य पूर्ण रहेगा। इसलिए आपको अपने नाम में परिवर्तन करने की आवश्यकता नहीं है। यदि किसी कारणवश आपको अपने नाम में परिवर्तन करना आवश्यक लगे, तब आप ऐसे ही नाम का चुनाव करें जिसका नामांक आपके मूलांक तथा भाग्यांक से मिलान करे एवं उसका नामांक 3 आता हो और 5 न हो तो ऐसा नामांक आपके लिए शुभ फलदायक एवं उन्नतिशील रहेगा। नाम परिवर्तन हेतु आपके लिए 9,1 अंक अच्छे रहेंगे तथा 4,6,8 अंक ठीक नहीं

रहेंगे।

नाम में परिवर्तन करने हेतु अंग्रेजी वर्णाक्षरों को अंकों में परिवर्तन करने की विधि उदाहरण सहित नीचे दी जा रही है। जिसकी सहायता से आप आसानी से नाम परिवर्तन अथवा नाम में वांछित संशोधन कर अपने अनुकूल नामांक बना सकते हैं। नाम परिवर्तन से आप मूलांक तथा भाग्यांक के साथ-साथ अपने नाम को सार्थक कर सकेंगे।

A B C D E F G H I J K L M N O P Q R S T U V W X Y Z

1 2 3 4 5 8 3 5 1 1 2 3 4 5 7 8 1 2 3 4 6 6 6 5 1 7

उदाहरणार्थ:-

एक अंक घटाना:-	GANESHA $3+1+5+5+3+5+1=23=5$	GANESH $3+1+5+5+3+5=22=4$
एक अंक :-	RAM $2+1+4=7$	RAMA $2+1+4+1=8$
दो अंक :-	BINDRA $2+1+5+4+2+1=15=6$	BRINDRA $2+2+1+5+4+2+1=17=8$
तीन अंक :-	RAMCHAND $2+1+4+3+5+1+5+4=25=7$	RAMCHANDRA $2+1+4+3+5+1+5+4+2+1=28=1$
चार अंक :-	KRISHNA $2+2+1+3+5+5+1=19=1$	KRESHNA $2+2+5+3+5+5+1=23=5$
पाँच अंक :-	TEWARI $4+5+6+1+2+1=19=1$	TIWARI $4+1+6+1+2+1=15=6$
छः अंक :-	AGGARWAL $1+3+3+1+2+6+1+3=20=2$	AGARWAL $1+3+1+2+6+1+3=17=8$

Astrologer Eeshan

Varanasi

9450831636

astrologereeshan@gmail.com

अंक ज्योतिष उपाय विचार

अनुकूल समय

सूर्य 21 नवंबर से 20 दिसंबर तक धनु राशि में एवं 19 फरवरी से 20 मार्च तक मीन राशि में तथा 21 जून से 20 जुलाई तक कर्क राशि में पाश्चात्य मत से रहता है। भारतीय मत से यह 15 दिसंबर से 13 जनवरी तक धनु में एवं 14 मार्च से 12 अप्रैल तक मीन राशि में तथा 16 जुलाई से 16 अगस्त तक कर्क राशि में रहता है। धनु एवं मीन राशियां गुरु का स्वस्थान अथवा अपना घर है। कर्क राशि गुरु का उच्च स्थान है। अतः उपर्युक्त समय में मूलांक तीन प्रभावियों के लिए सबसे अधिक प्रभावकारी एवं लाभप्रद समय रहता है। इस काल में कोई भी नया कार्य, महत्वपूर्ण कार्य इत्यादि करना आपके लिए विशेष योगकारक रहेगा।

अनुकूल दिवस

गुरुवार, शुक्रवार, मंगलवार के दिन आपके लिए विशेष शुभ फलदायक रहेंगे। यदि आपकी अनुकूल तारीखों में से ही किसी तारीख को गुरुवार, शुक्रवार, मंगलवार पड़ रहा हो तो ऐसा दिन आपके लिए अधिक अनुकूल तथा श्रेष्ठ फलदायक होगा।

शुभ तारीखें

किसी भी अंग्रेजी माह की 3, 6, 9, 12, 15, 18, 21, 24, 27 एवं 30 तारीखें किसी भी नये कार्य को प्रारंभ करने, महत्वपूर्ण या विशिष्ट व्यक्तियों से मिलने, पत्र इत्यादि लिखने हेतु शुभ रहेंगी। अतः यदि आप उपर्युक्त तारीखों में कोई भी महत्वपूर्ण कार्य करती हैं तो शीघ्र सफलता मिलेगी।

अशुभ तारीखें

आपको किसी भी अंग्रेजी माह की 4, 8, 13, 17, 22, 26 एवं 31 तारीखें प्रतिकूल हो सकती हैं। अतः कोई भी नया कार्य, महत्वपूर्ण कार्य, उपर्युक्त तारीखों में संपन्न करना आपके लिए अहितकर रहेगा।

मित्रता या साझेदारी

आप ऐसे व्यक्तियों से मित्रता या साझेदारी स्थापित करें, जिनका जन्म 3, 6, 9, 12, 15, 18, 21, 24, 27 एवं 30 तारीखों में, अथवा 15 दिसंबर से 13 जनवरी, 13 मार्च से 13 अप्रैल एवं 16 जुलाई से 16 अगस्त के बीच हुआ हो। ऐसे व्यक्ति आपके लिए अनुकूल सहयोगी तथा विश्वासपात्र सिद्ध होंगे। इस प्रकार के व्यक्तियों से आपकी मित्रता स्थायी एवं दीर्घ रहेगी तथा वे रोजगार, व्यवसाय, साझेदारी आदि में सहायक रहेंगे।

प्रेम संबंध एवं विवाह

आपको विवाह या प्रेम संबंध स्थापित करते समय यह देखना लाभप्रद रहेगा कि उस महिला का मूलांक 3,6 या 9 हो अथवा ऐसी महिला का जन्म किसी भी अंग्रेजी मास की 3, 6, 9, 12, 15, 18, 21, 24, 27 या 30 तारीख को हुआ हो। इन दिनांकों में जन्मी स्त्रियां आपके लिए विशेष फलदायी और अच्छा साथ निभाने वाली रहेंगी।

अनुकूल रंग

आपके लिए अनुकूल रंग हल्का गुलाबी, चमकीला गुलाबी है। गुलाबी भी पूरा गुलाबी नहीं, बल्कि हल्का गुलाबी होना चाहिए। अतः आप ड्रॉइंग रूम के पर्दे, चादर, तकिये, बिछावन आदि इसी रंग के लें। हो सके तो इस रंग का रुमाल तो हर समय रखें। स्वास्थ्य की क्षीणता के समय भी आप हो सके तो इसी रंग के वस्त्र पहनें, जिससे आपका स्वास्थ्य ठीक रहेगा।

वास्तु एवं निवास

आपके लिए ऐसे मकान में रहना शुभ रहेगा जिसका मूलांक या नामांक 3 हो। ईशान कोण दिशा आपके लिए हमेशा शुभ रहेगी। अतः आप शहर की ईशान कोण दिशा में अपना निवास बना सकते हैं। इस दिशा में रोजगार-व्यापार संबंधी कार्य करना शुभ रहेगा। पहनने के वस्त्रों का चुनाव करते समय भूरा, पीला, सुनहरी रंगों के होने से आपके व्यक्तित्व में निखार आएगा और यदि आप दीवारें, पर्दे, फर्नीचर का रंग भी ऐसा ही रखें तो आपके पारिवारिक वातावरण में खुशहाली आएगी।

शुभ वाहन नं

अगर आप यात्रा के दौरान कमरा इत्यादि बुक करवाते हैं, तो आपको चाहिए की कमरे का नंबर आपके मूलांक या मूलांक के मित्र अंक से मेल करने वाले अंकों का रहे। आपका मूलांक 3 है। मूलांक के मित्र अंक 6, 9 रहेंगे। आपके कमरे का नंबर 102= 3 इत्यादि होना चाहिए और यदि आप वाहन आदि का पंजीकरण इत्यादि करवाते हैं, तब उसके लिए भी शुभ अंक 5232 =3 रहेंगे। आपके लिए यही अंक यात्रा के वाहन के रहेंगे, तो आपकी यात्रा सुखमय कहलाएगी।

स्वास्थ्य तथा रोग

जब भी आपके जीवन में रोग की स्थिति आएगी तब आपको चर्म रोग, दाद, खाज, खुजली, प्रमेह, ज़हरवाद, पित्त प्रकोप, शूल रोग, स्नायु निर्बलता, मानसिक उद्वेग, गुप्तेंद्रिय शैथिल्य, भोग के प्रति अरुचि, रक्त दोष जैसे रोग होंगे। रोग अशुभता कष्ट और विपत्ति के समय आपको विष्णु उपासना, पूर्णिमा व्रत, सत्यनारायण व्रत कथा श्रवण करना चाहिए।

व्यवसाय

वस्त्र उद्योग, ढाबे, रेस्टोरेंट, होटल, पान की दुकान, अध्यापन, उपदेशक, व्याख्याता, प्राध्यापक, राजदूत, मंत्री, कानून के सलाहकार, वकील, न्यायाधीश, सचिव, दूत कार्य, क्लर्क, चिकित्सा कार्य, बैंकिंग के कार्य, दलाल, आदत, विज्ञापनकर्ता, अभिनेता, सेल्समैन, टाइपिस्ट, स्टेनो, जल जहाज में कार्यकर्ता, पुलिस विभाग, दर्शनशास्त्री, प्रबंधक एवं जलीय व्यापार।

व्रतोपवास

बृहस्पतिवार को बृहस्पति अरिष्ट दोष निवारण हेतु व्रत करें। बृहस्पतिवार को पीले वस्त्र धारण कर व्रत करें। पीला भोजन ग्रहण करें एवं पीले पदार्थों का दान करें। यह व्रत तीन वर्ष, एक वर्ष या सोलह बृहस्पतिवारों को करें। यथाशक्ति पुत्रजीवी की माला पर गुरु मंत्र का जप करें।

अनुकूल रत्न या उपरत्न

पुखराज आपके लिए मुख्य रत्न है। यदि पुखराज न मिले तब आप सुनेला, टाईगर आई, पीला हकीक धारण कर सकते हैं। इसे आप सोने की अंगूठी में चार से पांच रत्ती का बनवा कर दायाँ हाथ की तर्जनी उंगली को स्पर्श करता हुआ धारण करें।

अनुकूल देवता

आप बृहस्पति ग्रह की उपासना करें अथवा विष्णु भगवान की आराधना करें। भगवान विष्णु के द्वादशाक्षरी मंत्र "ओम् नमो भगवते वासुदेवाय" का नित्य जप करें। प्रतिदिन कम से कम एक सौ आठ मंत्र का जप करें तथा पूर्णमासी के दिन सत्यनारायण कथा का श्रवण करेंगे तो इस क्रिया को करने पर आप विभिन्न रोगों और समस्याओं से मुक्त होंगे। यदि यह संभव न हो सके तो भगवान विष्णु के चित्र का ही नित्य प्रातः दर्शन कर लिया करें।

ग्रह गायत्री मंत्र

आपके लिए गुरु के शुभ प्रभावों की वृद्धि हेतु गुरु के गायत्री मंत्र का प्रातः स्नान के बाद ग्यारह, इक्कीस या एक सौ आठ बार जप करना लाभप्रद रहेगा।

गुरु गायत्री मंत्र – ॐ अंगिरसाय विद्महे दिव्यदेहाय धीमहि तन्नो जीवः प्रचोदयात् ॥

ग्रह ध्यान मंत्र

प्रातःकाल उठ कर आप गुरु का ध्यान करें, मन में गुरु की मूर्ति प्रतिष्ठित करें और तत्पश्चात् निम्न मंत्र का पाठ करें।

देवानां च ऋषीणां च गुरुं कांचनसन्निभम्।
बुद्धिभूतं त्रिलोकेशं तं नमामि बृहस्पतिम् ॥

ग्रह जप मंत्र

अशुभ गुरु को अनुकूल बनाने हेतु गुरु के मंत्र का जप करना चाहिए। नित्य कम से कम एक माला एक सौ आठ जप करने से वांछित लाभ मिल जाते हैं। पूरा अनुष्ठान एक सौ आठ माला का है। मंत्र जप का प्रत्यक्ष फल स्वयं देख सकेंगे।

ॐ ग्राँ ग्रीं ग्राँ सः गुरुवे नमः ॥ जप संख्या 10000 ॥

वनस्पति धारण

आप गुरुवार के दिन एक इंच लंबी नारंगी या केले की जड़ ला कर, पीले धागे में लपेट कर, दाहिने हाथ में बांधे या स्वर्ण या पीतल के ताबीज में भर कर गले में धारण करें। इससे गुरु ग्रह के अशुभ प्रभाव कम होंगे तथा शुभ प्रभावों में वृद्धि होगी।

वनस्पति स्नान

आपके लिए प्रत्येक गुरुवार को एक बाल्टी या बर्तन में मुलेठी, सफेद सरसों तथा मालती के फूल आदि औषधियों का चूर्ण कर पानी में डाल कर स्नान करना सभी प्रकार के रोगों से मुक्तिदायक रहेगा। हर्बल स्नान से आपकी त्वचा की कांति में वृद्धि होगी। अशुभ गुरु के प्रभाव क्षीण हो कर आपके तेज एवं प्रभाव में वांछित लाभ प्राप्त होगा। सभी ग्रहों की शांति के लिए आप कूठ, खिल्ला, कांगनी, सरसों, देवदारु, हल्दी, सर्वौषधि तथा लोध इन सबको मिला कर, चूर्ण कर, किसी तीर्थ के पानी में मिला कर भगवान का स्मरण करते हुए स्नान करें तो ग्रहों की शांति और सुख-समृद्धि प्राप्त होगी।

दान पदार्थ

गुरु की शांति के लिए योग्य व्यक्ति को गुरु के पदार्थ, पीला वस्त्र, सोना, हल्दी, घृत, पीले पुष्प, पीला अन्न, पुखराज, अश्व, पुस्तक, मधु, लवण, शर्करा, भूमि, छत्र आदि का दान करना लाभप्रद रहेगा।

यंत्र

गुरु को अनुकूल बनाये रखने हेतु गुरु यंत्र को भोज पत्र पर अष्ट गंध (केशर, कपूर, अगर, तगर, कस्तूरी, अंबर, गोरोचन एवं रक्त चंदन या श्वेत चंदन) स्याही से लिख कर सोने या तांबे के ताबीज में, धूप-दीप से पूजन कर, सोने की जंजीर या पीले धागे में गुरुवार को शुक्ल पक्ष में प्रातःकाल धारण करें।

दशा विश्लेषण

महादशा :- मंगल
(10/03/2017 - 10/03/2024)

मंगल की महादशा 10/03/2017 को आरम्भ और 10/03/2024 को समाप्त होगी। इसकी अवधि 7 वर्ष है। आपकी जन्मकुण्डली में मंगल द्वितीय भाव में अवस्थित है। इसके पूर्व आपकी चन्द्रदशा चल रही थी जिसकी अवधि 10 वर्ष की थी। मंगल के पंचम भाव पर दृष्टि होने के कारण आपको बच्चों से सुख, उत्तम शिक्षा और समृद्धि की प्राप्ति होगी। मंगल की इस दशा में आपको धन और समृद्धि की प्राप्ति होगी और आपका झुकाव धार्मिक कार्यों की ओर होगा।

स्वास्थ्य :

इस दशा-काल में आपका स्वास्थ्य उत्तम होगा। आप में आत्मविश्वास तथा पहल-शक्ति होगी और आप सक्रिय तथा स्फूर्तिवान होंगे। कुछ मौसमी बीमारियों को छोड़ आपका स्वास्थ्य उत्तम होगा। सरदर्द, ज्वर, संक्रमण, ताप संबंधी बीमारियों आदि की सम्भावना है।

अर्थ और व्यवसाय :

इस दशा के दौरान आपकी आर्थिक स्थिति सुदृढ़ होगी। आप धन-संपत्ति का संचय करेंगे। आपको पिता से लाभ होगा। आपको कुछ-पैतृक-सम्पत्ति की प्राप्ति होगी। व्यवसाय और जीवन-वृत्ति से उपार्जन में भी वृद्धि होगी। मंगल की पंचम भाव पर दृष्टि के फलस्वरूप आपको सट्टे तथा निवेश में लाभ होगा। अपनी जीविका के लिये सैन्य सेवा, सर्जरी तथा चिकित्सा कार्य, दन्तचिकित्सा, भूगर्भ-विज्ञानी अथवा रसायनज्ञ के कार्यों का चयन कर सकते हैं। आप असेैनिक तथा यांत्रिक अभियंत्रण और औद्योगिक प्रतिष्ठानों में अच्छा करेंगे। लौह-इस्पात, खेल के सामानों, ताम्बे, खनिज पदार्थों आदि का व्यवसाय लाभदायक हो सकता है। नौकरीपेशा लोगों के लिये दशा उत्तम रहेगी। आपकी आय में वृद्धि तथा पदोन्नति होगी और उच्चाधिकारियों का अनुग्रह प्राप्त होगा। व्यवसाय-व्यापार से जुड़े लोगों के लिये समय समृद्धिशाली रहेगा। आय तथा गतिविधियों में वृद्धि होगी। व्यापार का विस्तार हो सकता है और व्यापार से जुड़े लोग व्यस्त रहेंगे। आर्थिक सफलता के लिए यह दशा उत्तम है।

वाहन, यात्राएँ, सम्पत्ति :

बुध की अन्तर्दशा में आपको जीवन के सुख मिलेंगे। इस अन्तर्दशा के दौरान आपको वाहन की प्राप्ति होगी। मंगल तथा बुध की अन्तर्दशा में जमीन-जायदाद के मामले लाभदायक होंगे। यह अवधि सभी आर्थिक कारोबार के लिए उत्तम है। शुक्र की अन्तर्दशा में आपकी छोटी तथा शनि और मंगल की अन्तर्दशाओं लम्बी यात्राएँ होगी।

शिक्षा :

इस दशा के दौरान आपकी शिक्षा उत्तम होगी। गणित, विज्ञान तथा प्रशासन व प्रबन्धन से सम्बन्धित विषयों का अध्ययन लाभदायक होगा। आप परीक्षाओं में सफल होंगे। इस

अवधि में आप उच्च शिक्षा भी आरम्भ कर सकते हैं। आप अपने स्वभावगत नेतृत्व तथा बैद्धिक गुणों का प्रदर्शन करेंगे।

परिवार :

परिवार में आपके संबंध मधुर रहेंगे। आपके बच्चों के साथ आपके सम्बन्ध अत्यन्त मधुर रहेंगे और आपको उनसे बहुत सुख प्राप्त होगा। वे अपनी शिक्षा में अच्छा करेंगे और आप उनसे गौरवान्वित होंगे। आपके जीवनसाथी को अप्रत्याशित लाभ मिल सकता है। सद्भावपूर्ण सम्बन्ध बनाए रखने के लिए कटु भाषा का प्रयोग न करें। आपकी माता को इस अवधि में लाभ प्राप्त होगा और उनकी मनोकामनाओं की पूर्ति होगी। आपके पिता को उनके शत्रुओं पर विजय प्राप्त होगी और उनका स्वास्थ्य उत्तम रहेगा। आपके छोटे भाई-बहनों का शुभ उद्देश्यों के लिए व्यय होगा और उनकी यात्रा होगी तथा आपके बड़े भाई-बहनों को यश, ख्याति, आय, शक्ति तथा अधिकार की प्राप्ति होगी। आपके मित्रों की संख्या विशाल होगी जिनसे आपको लाभ मिलेगा।

अन्तर्दशा :

मंगल की मुख्य दशा में उसकी अन्तर्दशा के कारण आपको पिता से लाभ तथा सम्पत्ति की प्राप्ति होगी और आपकी यात्रा होगी। इसके पश्चात् आरम्भ होनेवाली राहु की अन्तर्दशा के कारण समस्याएं उत्पन्न हो सकती हैं। गुरु की अन्तर्दशा के कारण आपकी शिक्षा, स्वास्थ्य तथा सुख में वृद्धि होगी जबकि शनि की अन्तर्दशा के कारण आय-व्यय समान होंगे और आपकी यात्रा होगी। बुध की अन्तर्दशा के फलस्वरूप आपका विवाह हो सकता है और साझेदारों से लाभ और सुख की प्राप्ति हो सकती है जबकि केतु के कारण कुछ समस्याएं उत्पन्न हो सकती हैं। शुक्र की अन्तर्दशा के फलस्वरूप परिवर्तन और छोटी यात्राओं की प्राप्ति हो सकती है जबकि सूर्य की अन्तर्दशा के कारण शत्रुओं पर विजय की प्राप्ति होगी। चन्द्र की अन्तर्दशा के फलस्वरूप सन्तान से सुख और निवेश तथा सट्टे में लाभ होगा।

**अंतर्दशा :- मंगल — चन्द्र
(09/08/2023 - 10/03/2024)**

आपके लिए मंगल की महादशा 10/03/2017 को प्रारंभ हुई और को समाप्त होगी। इस महादशा में चंद्र अंतर्दशा 7 मास की होगी और 09/08/2023 को प्रारंभ होकर 10/03/2024 को समाप्त होगी। अंतर्दशा स्वामी चंद्र माता, प्रसन्नता और मस्तिष्क के रुझान का कारक है।

इस अवधि में आपके बहुत से मित्र होंगे जिनसे लाभ होगा। समाज में सफलता और लोकप्रियता मिलेगी। धन आसानी से प्राप्त होगा। स्वास्थ्य उत्तम रहेगा, धन का संचय होगा। जीवन में खुशियां मिलेंगी; उत्तम भोजन ग्रहण करेंगे। संतान सुखकारी होगी; निवेश से लाभ होगा, कला, खेलकूद आदि में रुचि होगी। संतान का जन्म हो सकता है। धर्म में रुचि बढ़ेगी।

आपके जीवनसाथी को धन मिलेगा; निवेश से लाभ होगा। पिता को कार्यो में सफलता मिलेगी। माता को लाभ होगा; उनके जीवन में अप्रत्याशित घटनाएं घट सकती हैं। भाई-बहन भाग्यशाली होंगे, धन कमाएंगे, यात्राएं करेंगे।

आपकी संतान सफलता प्राप्त करेगी; उन्हें समूह के साथ कार्य में लाभ होगा, शिक्षा के अतिरिक्त गतिविधियों में महारत हासिल होगी। अगर वे सेवारत हैं तो कार्यक्षेत्र में उन्नति करेंगे, विवाहित जीवन सुखी होगा, अविवाहित हैं तो विवाह हो सकता है।

अगर आप सेवारत हैं तो कार्यालय उत्तम मिलेगा, मुकदमे में जीत होगी और उच्चाधिकारी प्रसन्न रहेंगे। परामर्शदाता और व्यापारी धन कमाएंगे।

आपका स्वास्थ्य उत्तम रहेगा। कान और शरीर के निचले अंगों का ध्यान रखें। शुभत्व में वृद्धि के लिए दूध दान दें और भैरवजी की उपासना करें।

**महादशा :- राहु
(10/03/2024 - 10/03/2042)**

राहु की महादशा 10/03/2024 को आरम्भ और 10/03/2042 को समाप्त होगी। इसकी अवधि 18 वर्ष है। आपकी जन्मकुण्डली में राहु प्रथम भाव में स्थित है। इस स्थान से राहु की दृष्टि सातवें भाव पर है। इसके पूर्व आपकी 7 वर्ष की मंगल दशा चल रही थी। मंगल के कारण आपको सफलता, ख्याति, सम्पत्ति तथा उत्तम स्वास्थ्य की प्राप्ति हुई होगी। राहु की वर्तमान दशा में आपको धन की प्राप्ति और शत्रुओं पर विजय मिलेगी तथा स्वास्थ्य उत्तम रहेगा।

स्वास्थ्य :

इस दशा के दौरान आपका स्वास्थ्य उत्तम रहेगा। आपके शरीर के ऊपरी भाग तथा सिर में कष्ट हो सकता है। आप सरदर्द तथा पित्तदोष से ग्रसित हो सकते हैं और मौसम में परिवर्तन के कारण संक्रामक बीमारी, चर्मरोग, चेहरे पर तथा माथे में फोड़ा आदि हो सकते हैं। इन मामूली शिकायतों को छोड़ आपका स्वास्थ्य अच्छा रहेगा।

अर्थ और व्यवसाय :

इस दशा के दौरान आपकी आर्थिक स्थिति अत्यन्त अच्छी रहेगी। आपको लाभ और समृद्धि की प्राप्ति होगी। आपकी धार्मिक, शैक्षिक और वैज्ञानिक उपलब्धियों के कारण आपको सम्पत्ति और प्रतिष्ठा मिलेगी। आपको सट्टे में अच्छा लाभ मिलेगा। राहु की दशा में आपको धन का अचानक लाभ होगा। आपको मित्रों से लाभ हो सकता है। जीविका या व्यवसाय के लिए वायुयान चालन, दवा, कम्प्यूटर, मशीनरी, समुद्री सेवा, वायु-सेना आदि के क्षेत्र का चयन कर सकते हैं। दवा, रसायन, औजार, ड्रग, मशीनरी आदि का व्यापार लाभदायक हो सकता है। नौकरीपेशा लोगों का स्थानान्तरण हो सकता है जो अन्त में लाभदायक होगा और अचानक लाभ तथा कार्य स्थान में अप्रत्याशित पदोन्नति होगी। व्यापार व्यवसाय से जुड़े लोगों को उच्चाधिकारियों से अच्छा लाभ, कार्य में सफलता तथा आय में वृद्धि होगी। व्यवसाय में उन्नति तथा आर्थिक खुशहाली के लिए यह दशा अत्यन्त उत्तम है।

वाहन, यात्रा, जायदाद :

चन्द्र की अन्तर्दशा में आपको वाहन का सुख मिलेगा। आपको जीवन का हर सुख मिलेगा। आप अचल तथा भूसम्पत्ति के स्वामी होंगे। इस दशा के दौरान आपकी अनेक यात्राएं होंगी। बुध की अन्तर्दशा में आपकी छोटी जबकि गुरु की अन्तर्दशा में लम्बी यात्रा होगी। विदेश यात्रा हो सकती है।

शिक्षा :

इस दशा के दौरान आपकी शिक्षा उत्तम होगी। इन्जीनियरिंग, गणित, विज्ञान, अन्तरिक्ष अनुसन्धान तथा कम्प्यूटर विज्ञान में आपकी रुचि होगी। आपको आपके प्रतिद्वन्द्वियों पर विजय मिलेगी और परीक्षा तथा प्रतियोगिता में अच्छा करेंगे। आप में नेतृत्व-गुण और साहस है और आप स्वभाव से स्वतन्त्र हैं। आप चतुर और कूटनीतिज्ञ हैं।

परिवार :

परिवार के साथ आपका सम्बन्ध मधुर रहेगा। आपके बच्चे भाग्यवान और खुशहाल होंगे। आपका उनके साथ सम्बन्ध अच्छा रहेगा। आपके जीवनसाथी की यात्रा, विदेशियों से सम्पर्क और भौतिक लाभ होगा। आपके जीवन साथी के साथ आपका संबंध मधुर रहेगा। आपकी माता यात्रा और तीर्थाटन पर जाएंगी और दान-पुण्य का कार्य करेंगी और आपके पिता को सट्टे में लाभ तथा धन में अचानक वृद्धि होगी। आपके छोटे भाई-बहनों को हर प्रकार का लाभ तथा सम्पत्ति मिलेगी। बड़े भाई-बहन साहसी और कठिन परिश्रमी होंगे, उनकी छोटी यात्रा होगी और वे संचार-व्यवस्था के क्षेत्र में सफल होंगे। आपका उनके साथ सम्बन्ध मधुर रहेगा। इस दशा के दौरान आपको अच्छा सम्मान, भौतिक समृद्धि और सम्पत्ति की प्राप्ति होगी।

अन्तर्दशा :

राहु की महादशा में राहु की अन्तर्दशा के दौरान आपको सम्पत्ति और लाभ, कार्य में सफलता और खुशहाली मिलेगी। गुरु की अन्तर्दशा में आपकी यात्रा होगी और समृद्धि तथा उच्च शिक्षा की प्राप्ति होगी जबकि शनि की अन्तर्दशा में व्यवसाय में प्रगति और उपार्जन अच्छा होगा। बुध की अन्तर्दशा के दौरान आपका स्वास्थ्य कुछ खराब होगा, किन्तु ननिहाल से लाभ और छोटी यात्रा होगी। केतु कुछ समस्या दे सकता है। शुक्र की अन्तर्दशा में साझेदारों से लाभ मिलेगा और विवाह होगा जबकि सूर्य की अन्तर्दशा के दौरान बच्चों से सुख और सट्टे में सफलता मिलेगी। चन्द्र की अन्तर्दशा में आपको माता से लाभ और जीवन का सुख मिलेगा जबकि लग्न स्वामी मंगल की अन्तर्दशा के दौरान यश, ख्याति, उत्तम स्वास्थ्य तथा सफलता मिलेगी।

**अंतर्दशा :- राहु – राहु
(10/03/2024 - 21/11/2026)**

राहु महादशा की अवधि 18 वर्ष होती है। आपके लिए यह 10/03/2024 को प्रारंभ होकर 10/03/2042 को समाप्त होगी। इस महादशा में राहु अंतर्दशा की अवधि 2 वर्ष 8 मास 12 दिन होगी जो आपके लिए 10/03/2024 को प्रारंभ होकर 21/11/2026 को समाप्त होगी।

राहु आपकी जन्मपत्री में लग्न में स्थित है। लग्न शारीरिक बनावट, आकृति, स्वास्थ्य, जन्मजात स्वभाव और आदतें, सम्मान, गरिमा, सामान्य शुभत्व, चेहरे का ऊपरी भाग, आयु और जीवन की रुपरेखा आदि का परिचायक है।

राहु छायाग्रह है। इसकी स्वयं की राशि नहीं होती। स्थिति के अनुसार यह शुभ या अशुभ हो सकता है। लग्न में स्थित होकर राहु आपकी कुंडली के सप्तम भाव पर दृष्टि डाल रहा है और उसके कारकत्व को प्रभावित कर रहा है।

इस अवधि में आप बिना उद्देश्य के इधर-उधर भटक सकते हैं। मित्र और रिश्तेदार आपसे दूर हो सकते हैं क्योंकि आपका व्यवहार शत्रुतापूर्ण हो सकता है। आप स्वार्थी, शक्की, विद्रोही और निम्न कोटि के कर्म करने वाले हो सकते हैं। आपको नकारात्मक विचारों से दूर रहना चाहिए; अपने बल पर कार्य करना चाहिए। स्वास्थ्य दुर्बल हो सकता है, इसके लिए अपरंपरागत उपचार का सहारा ले सकते हैं। विवाह जीवन में तनाव आ सकता है।

अरिष्ट से बचाव के लिए राहु वैदिक मंत्र के 18000 जाप करें।

**अंतर्दशा :- राहु – गुरु
(21/11/2026 - 15/04/2029)**

राहु महादशा की अवधि 18 वर्ष होती है। आपके लिए यह 10/03/2024 को प्रारंभ होकर 10/03/2042 को समाप्त होगी। इस महादशा में बृहस्पति अंतर्दशा की अवधि 2 वर्ष 4 मास 24 दिन रहेगी जो आपके लिए 21/11/2026 को प्रारंभ होकर 15/04/2029 को समाप्त होगी।

बृहस्पति आपकी जन्मपत्री में द्वितीय भाव में स्थित है। द्वितीय भाव भाग्य, लाभ-हानि, सांसारिक उपलब्धियां, रत्न, वाणी, दायीं आंख, महत्वाकांक्षा, जीभ, दांत और परिवार के सदस्यों का प्रतिनिधि है। बृहस्पति शुभ ग्रह है। द्वितीय भाव में स्थित होकर बृहस्पति आपकी कुंडली के 6, 8, 10 भावों पर दृष्टि डाल रहा है और उनके कारकत्व को प्रभावित कर रहा है।

इस अवधि में आपकी आर्थिक स्थिति में सुधार होगा। पारिवारिक जीवन सुखी रहेगा। व्याधियों से बचने के लिए आवश्यक सावधानी बरतेंगे। प्रत्येक कार्य ईमानदारी से करेंगे। नेत्र व्याधि अगर हो, तो इस अवधि में ठीक हो जाएगी।

शुभत्व में वृद्धि और अरिष्ट से बचाव के लिए 5 रस्ती का पीला पुखराज सोने की अंगूठी में बृहस्पतिवार के दिन प्रातःकाल पूजा-उपासना के बाद कच्चे दूध और गंगाजल से धोकर तर्जनी में धारण करें।

**अंतर्दशा :- राहु – शनि
(15/04/2029 - 20/02/2032)**

राहु महादशा की अवधि 18 वर्ष होती है जो आपके लिए 10/03/2024 को प्रारंभ होकर 10/03/2042 को समाप्त होगी। इस महादशा में शनि अंतर्दशा की अवधि 2 वर्ष 10 मास 6 दिन होगी जो आपके लिए 15/04/2029 को प्रारंभ होकर 20/02/2032 को समाप्त होगी।

शनि आपकी जन्मपत्री में पंचम भाव में स्थित है। पंचम भाव संतान, मनोरंजन, सैर-सपाटे, प्रेम संबंध, स्पर्धा, अच्छे-बुरे चरित्र, धार्मिकता, विवेक, धनाढ्यता और आत्मिक उत्थान का परिचायक है। पंचम भाव में स्थित होकर शनि आपकी कुंडली के 7, 11, 2 भावों पर दृष्टि डाल रहा है और उनके कारकत्व को प्रभावित कर रहा है।

इस अवधि में आप दुर्बल और बीमार हो सकते हैं। सबकी आलोचना करने की आदत पड़ सकती है; मित्रों और रिश्तेदारों से झगड़े कर सकते हैं। घरेलू जीवन दुखमय हो सकता है। समय-समय पर स्वभाव में बदलाव आ सकता है।

अरिष्ट से बचाव के लिए :

- मछलियों को आटे की गोलियां खिलाएं
- पीपल की जड़ में जल अर्पित करें
- भोजन की पहली रोटी गाय को दें

**अंतर्दशा :- राहु – बुध
(20/02/2032 - 09/09/2034)**

राहु महादशा की अवधि 18 वर्ष होती है। आपके लिए यह 10/03/2024 को प्रारंभ होकर 10/03/2042 को समाप्त होगी। इस महादशा में बुध अंतर्दशा की अवधि 2 वर्ष 6 मास 18 दिन रहेगी जो आपके लिए 20/02/2032 को प्रारंभ होकर 09/09/2034 को समाप्त होगी।

बुध आपकी जन्मपत्री में द्वादश भाव में स्थित है। द्वादश भाव हानि, बाधाएं, धन के दुरुपयोग, धोखा, दान, परिवार से अलगाव, दुख, छुपे दुश्मन, कांड, गुप्त दुख, शैयासुख और विदेश में जीवनयापन का संकेतक है। द्वादश भाव में स्थित होकर बुध कुंडली के छठे भाव पर दृष्टि डाल रहा है और उसे अपने कारकत्व से प्रभावित कर रहा है।

इस अवधि में आप दर्शनिक प्रवृत्ति के हो सकते हैं, बुद्धि भ्रष्ट हो सकती है। चिंतित

और भ्रमित रह सकते हैं। विवाहेतर यौन संबंध हो सकते हैं। मष्तिष्क का सकारात्मक उपयोग करना उचित रहेगा।

शुभत्व में वृद्धि और अरिष्ट से बचाव के लिए बुध के तांत्रिक मंत्र के 36000 जाप करें।

**अंतर्दशा :- राहु – केतु
(09/09/2034 - 27/09/2035)**

राहु महादशा की अवधि 18 वर्ष होती है। आपके लिए यह 10/03/2024 को प्रारंभ होकर 10/03/2042 को समाप्त होगी। इस महादशा में केतु अंतर्दशा की अवधि 1 वर्ष 18 दिन होगी जो आपके लिए 09/09/2034 को प्रारंभ होकर 27/09/2035 को समाप्त होगी।

केतु आपकी जन्मपत्रिका में सप्तम भाव में स्थित है। सप्तम भाव लौकिक संबंध, जीवनसाथी, व्यापार में साझेदार, मुकदमे, विदेश में प्रभाव और जीवन में खतरों का परिचायक है। सप्तम भाव में स्थित होकर केतु आपकी कुंडली के लग्न पर दृष्टि डाल रहा है और उसके कारकत्व को प्रभावित कर रहा है।

इस अवधि में आपका विवाहित जीवन विचलित हो सकता है। विषय-वासनाओं में आपकी रुचि आवश्यकता से अधिक हो सकती है। आपको और आपके जीवनसाथी को कोई बीमारी हो सकती है।

अरिष्ट से बचाव के लिए :

- गरीबों में और मंदिर में कंबल बांटें
- कुत्तों को भोजन दें
- भूरा कुत्ता पालें और उसे नियमित रूप से भोजन दें

**अंतर्दशा :- राहु – शुक्र
(27/09/2035 - 27/09/2038)**

राहु महादशा की अवधि 18 वर्ष होती है। आपके लिए यह 10/03/2024 को प्रारंभ होकर 10/03/2042 को समाप्त होगी। इस महादशा में शुक्र अंतर्दशा की अवधि 3 वर्ष होगी जो आपके लिए 27/09/2035 को प्रारंभ होकर 27/09/2038 को समाप्त होगी।

शुक्र आपकी जन्मपत्री में लग्न में स्थित है। लग्न शारीरिक बनावट, आकृति, स्वास्थ्य, जन्मजात स्वभाव और आदतें, सम्मान, गरिमा, सामान्य शुभत्व, चेहरे का ऊपरी भाग, आयु और जीवन की रुपरेखा आदि का परिचायक है। लग्न में स्थित होकर शुक्र आपकी कुंडली के सप्तम भाव पर दृष्टि डाल रहा है और उसके कारकत्व को प्रभावित कर रहा है।

शुक्र शुभग्रह है और सुख-साधन, भोग-विलास आदि का प्रतिनिधि है।

इस अवधि में आप प्रसन्नचित्त होंगे; शरीर ऊर्जावान होगा। विषय-वासना और आमोद-प्रमोद में रुचि हो सकती है। दुष्प्रवृत्तियों पर नियंत्रण आवश्यक है, अन्यथा मुसीबत में फंस सकते हैं।

अरिष्ट से बचाव और शुभत्व में वृद्धि के लिए :

- लक्ष्मीजी की उपासना करें
- चींटियों को चीनी और आटा खिलाएं
- भोजन के समय पहली रोटी गाय को खिलाएं

**अंतर्दशा :- राहु – सूर्य
(27/09/2038 - 22/08/2039)**

राहु महादशा की अवधि 18 वर्ष होती है। आपके लिए यह 10/03/2024 को प्रारंभ होकर 10/03/2042 को समाप्त होगी। इस महादशा में सूर्य की अंतर्दशा 10 मास 24 दिन की होगी जो आपके लिए 27/09/2038 को प्रारंभ होकर 22/08/2039 को समाप्त होगी।

सूर्य आपकी जन्मपत्री में लग्न में स्थित है। लग्न शारीरिक बनावट, आकृति, स्वास्थ्य, जन्मजात स्वभाव और आदतें, सम्मान, गरिमा, सामान्य शुभत्व, चेहरे का ऊपरी भाग, आयु और जीवन की रुपरेखा आदि का परिचायक है। सूर्य आत्मा और पिता का कारक है। सूर्य शक्तिशाली ग्रह है। लग्न में स्थित होकर सूर्य आपकी कुंडली के सप्तम भाव पर दृष्टि डाल रहा है और उसके कारकत्व को प्रभावित कर रहा है।

इस अवधि में आप अत्यधिक महत्वाकांक्षी हो सकते हैं। सत्ता के लिए व्याकुल रहेंगे। आशावादी और प्रसन्नचित्त रहेंगे; इस कारण लोकप्रिय होंगे। स्वास्थ्य में कुछ गिरावट आ सकती है। पापकर्म में लिप्त होकर सिद्धांतों से विमुख हो सकते हैं। इन कारणों से परिवार से दूर हो सकते हैं।

अरिष्ट से बचाव और शुभत्व में वृद्धि के लिए सूर्य वैदिक मंत्र के 7000 जाप करें।

प्रातः काल सूर्योदय के समय सूर्य नमस्कार करते हुए सूर्य को जल अर्पित करें।

**अंतर्दशा :- राहु – चन्द्र
(22/08/2039 - 20/02/2041)**

राहु महादशा की अवधि 18 वर्ष होती है। आपके लिए यह 10/03/2024 को प्रारंभ होकर 10/03/2042 को समाप्त होगी। इस महादशा में चंद्रमा की अंतर्दशा 1 वर्ष 6 मास की होगी जो आपके लिए 22/08/2039 को प्रारंभ होकर 20/02/2041 को समाप्त होगी।

चंद्रमा आपकी जन्मपत्री में एकादश भाव में स्थित है। एकादश भाव मित्रगण, समाज, महत्वाकांक्षा, इच्छाएं और उनकी पूर्ति, उद्यम में सफलता, धनलाभ, बड़े भाई, भाग्योदय और टखनों

का परिचायक है। चंद्रमा मन का कारक है। एकादश भाव में स्थित होकर चंद्रमा आपकी कुंडली के पंचम भाव पर दृष्टि डाल रहा है और उसके कारकत्व को प्रभावित कर रहा है।

इस अवधि में आप नेकी के कार्य करेंगे, समाज में प्रतिष्ठा होगी। धन-संपदा को एकत्र करने की शुरुआत हो सकती है। धनागम, नम्रता और ज्ञान के बल पर समाज में सम्मान बढ़ेगा।

अरिष्ट से बचाव के लिए चंद्रमा के वैदिक मंत्र के 11000 जाप करें।

शाम को चंद्रोदय के समय चंद्रमा का मंत्र पढ़ते हुए चंद्र को कच्चा दूध अर्पित करें।

**अंतर्दशा :- राहु – मंगल
(20/02/2041 - 10/03/2042)**

राहु महादशा की अवधि 18 वर्ष होती है जो आपके लिए 10/03/2024 को प्रारंभ होकर 10/03/2042 को समाप्त होगी। इस महादशा में मंगल की अंतर्दशा 1 वर्ष 18 दिन की होगी जो आपके लिए 20/02/2041 को प्रारंभ होकर 10/03/2042 को समाप्त होगी।

मंगल आपकी जन्मपत्री में द्वितीय भाव में स्थित है। द्वितीय भाव भाग्य, लाभ-हानि, सांसारिक उपलब्धियां, रत्न, वाणी, दायीं आंख, महत्वाकांक्षा, जीभ, दांत और परिवार के सदस्यों का प्रतिनिधि है।

मंगल ऊर्जा का कारक है। द्वितीय भाव में स्थित होकर मंगल आपकी कुंडली के 5, 8, 9 भावों पर दृष्टि डाल रहा है और उनके कारकत्व को प्रभावित कर रहा है।

इस अवधि में आपके कार्यों में बाधाएं आएंगी, मगर आय अच्छी होगी। धन संचित होगा। आप कंजूस हो सकते हैं; परिवार में झगड़े हो सकते हैं। कटुवाणी के कारण शत्रुता बढ़ेगी। ऊर्जा का उपयोग सकारात्मक कार्यों में करना श्रेयस्कर रहेगा, इससे साख की रक्षा हो सकती है।

अरिष्ट से बचाव के लिए ब्रह्माजी के गायत्री मंत्र के 108 जाप प्रतिदिन करें।

**महादशा :- गुरु
(10/03/2042 - 10/03/2058)**

आपकी कुण्डली में गुरु की महादशा 10/03/2042 को आरम्भ तथा 10/03/2058 को समाप्त होगी। इसकी अवधि सोलह वर्ष है। आपकी जन्मकुण्डली में गुरु द्वितीय भाव में स्थित है। इस तरह वह भाव को शक्ति प्रदान कर रहा है। द्वितीय भाव सम्पत्ति, भाग्य, दायीं आँख, स्मरणशक्ति, कल्पना, जिह्वा, दाँत, दाढ़ी और पारिवारिक सदस्यों का द्योतक है। गुरु एक शुभ ग्रह है जो आपकी जन्मकुण्डली में द्वितीय भाव में स्थित है। इसकी छठे, आठवे और दसवें भाव पर दृष्टि है और इन भावों पर इसका शुभ प्रभाव है। अतः 16 वर्षों की यह दशा सुखमय और समृद्धिशाली होगी।

स्वास्थ्य :

महादशा स्वामी गुरु की द्वितीय भाव में स्थिति और वहाँ से (दशम भाव के अतिरिक्त) छठे तथा 8वें भावों अर्थात् रोग और शत्रु के भावों तथा दीर्घायु के भावों पर इसकी दृष्टि के कारण आपको कोई गम्भीर बीमारी नहीं होगी और आप इस दशा के दौरान स्वस्थ रहेंगे।

अर्थ-सम्पत्ति :

गुरु की द्वितीय भाव में स्थिति और दसवें भाव (छठे तथा 8वें भावों के अतिरिक्त) पर इसकी दृष्टि के कारण इस दशा के दौरान आप चल-अचल सम्पत्ति प्राप्त करेंगे और आराम तथा विलासिता की वस्तुओं पर व्यय करेंगे।

व्यवसाय :

गुरु की द्वितीय अर्थात् धन-सम्पत्ति के भाव में स्थिति और वहाँ से (छठे तथा 8वें भावों के अतिरिक्त) दसवें अर्थात् व्यवसाय तथा जीवन चर्चा के भाव पर इसकी दृष्टि के कारण आप अपने व्यवसाय में प्रतिष्ठित होंगे। आप कवि, महान् लेखक, ज्योतिषी अथवा वैज्ञानिक हो सकते हैं। आप सफल, प्रतिष्ठित और भाग्यशाली होंगे। आप किसी से झगड़ा नहीं करेंगे।

पारिवारिक जीवन :

गुरु के कारण आपका पारिवारिक जीवन सुखमय और सद्भावपूर्ण रहेगा। आपके जीवनसाथी आपके सहयोगी और सहायक होंगे। आपके बच्चे आज्ञाकारी और सुशील होंगे। 16 वर्ष की इस दशा के दौरान आपको कोई पारिवारिक समस्या नहीं होगी और आप पारिवारिक जीवन का आनन्द उठाएंगे।

शिक्षा/प्रशिक्षण :

ज्ञान की भूख के कारण आप विभिन्न साहित्यों के अध्ययन में रत रहेंगे।

**अंतर्दशा :- गुरु – गुरु
(10/03/2042 - 27/04/2044)**

आपके लिए बृहस्पति की महादशा 10/03/2042 को प्रारंभ हो रही है। इस महादशा में पहली अंतर्दशा बृहस्पति की होगी जिसकी अवधि 2 वर्ष 1 मास 18 दिन रहेगी। आपके लिए यह 10/03/2042 को प्रारंभ होकर 27/04/2044 को समाप्त होगी। अंतर्दशा स्वामी बृहस्पति बुद्धि, उच्चज्ञान, जीवन और धन का कारक है।

इस अवधि में आपकी आर्थिक स्थिति सुदृढ़ होगी; धन, संचित होगा। पारिवारिक जीवन सुखद रहेगा। खुशियां मिलेंगी; किस्मत चमकेगी। उत्तम वस्त्र आदि से सुशोभित रहेंगे; सब सुविधाएं होंगी। स्वास्थ्य उत्तम रहेगा। तंत्र-मंत्र में रुचि ले सकते हैं। अध्यात्म में रुचि होगी। मातहतों और किरायेदारों से लाभ हो सकता है। उत्तम नौकरी मिल सकती है; कार्यालय उत्तम रहेगा। कार्यक्षेत्र में तरक्की होगी, प्रसिद्धि मिलेगी, उच्चाधिकारी प्रसन्न रहेंगे।

आपके जीवनसाथी को अप्रत्याशित धनलाभ हो सकता है। आपके पिता को शत्रुओं और स्पर्धियों पर विजय मिलेगी। माता धनी और सफल बनेंगी। आपके भाई-बहनों के लिए यात्रा, खर्च, शत्रुओं पर विजय, अचल संपत्ति की प्राप्ति, धन और उत्तम शिक्षा का संकेत है।

आपकी संतान सफलता प्राप्त करेगी। अगर वे कार्यरत हैं तो धनी बनेंगे; सरकार से लाभ होगा।

अगर आप सेवारत हैं तो धनलाभ उत्तम होगा; भाग्यशाली रहेंगे। परामर्शदाताओं को निवेश से लाभ होगा; किस्मत चमकेगी। व्यापारियों के कार्य में परिवर्तन हो सकता है; अप्रत्याशित लाभ संभव है।

आपका स्वास्थ्य उत्तम रहेगा। खानपान पर ध्यान दें, नेत्रों की देखभाल करें। शुभत्व में वृद्धि के लिए पीला गुड़, पीले वस्त्र, हल्दी और पुस्तकें दान में दें।

स्वास्थ्य, व्यक्तित्व एवं प्रकृति

आपके जन्म समय में लग्न में तुला राशि उदित हो रही थी जिसका स्वामी शुक्र है। सामान्यतया तुला लग्न में उत्पन्न जातक सुन्दर स्वस्थ एवं दर्शनीय होते हैं तथा उनका व्यक्तित्व भी आकर्षक होता है जिससे अन्य लोग उनसे प्रभावित रहते हैं। इनकी प्रवृत्ति हास्य प्रिय होती है तथा बच्चों के प्रति इनके मन में प्रबल स्नेह का भाव विद्यमान रहता है। सुन्दर दृश्यों एवं वस्तुओं के प्रति भी इनमें आकर्षण रहता है। स्वभाविक रूप से ये अन्य जनों को किसी भी प्रकार का कष्ट नहीं देते हैं तथा सबके साथ समानता का व्यवहार करते हैं जिससे समाज में ये सम्मानित प्रतिष्ठित तथा प्रसिद्ध रहते हैं। कला के प्रति इनका भावनात्मक लगाव रहता है तथा अच्छे कार्यों से ये अपनी आजीविका अर्जित करते हैं। नीति ज्ञान में ये चतुर होते हैं अतः राजनीति के क्षेत्र में इनको नेतृत्व प्राप्त हो जाता है परन्तु इनका कोई निश्चित सिद्धांत नहीं होता तथा समयानुसार ये परिवर्तन करते हैं।

अतः इसके प्रभाव से आपका शारीरिक सौन्दर्य दर्शनीय रहेगा एवं व्यक्तित्व आकर्षक होगा तथा अन्य जनों को प्रभावित करने में समर्थ होंगे। आपकी प्रवृत्ति हास्यप्रिय होगी तथा गम्भीरता आपको विशेष अच्छी नहीं लगेगी। बच्चों के प्रति आपके मन में स्नेह का भाव रहेगा तथा प्राकृतिक दृश्यों के प्रति आपके मन में आकर्षण रहेगा। साथ ही कला से आपका भावनात्मक सम्बन्ध रहेगा।

आप सभी लोगों से समानता का व्यवहार करेंगे तथा आपके मन में किसी भी प्रकार का भेद भाव नहीं रहेगा अपने कार्यक्षेत्र में आपका प्रभाव रहेगा तथा आपके अधिकारी एवं सहयोगी आपसे प्रसन्न तथा सन्तुष्ट रहेंगे। आप किसी नवीन सिद्धांत या ग्रन्थ आदि की भी रचना कर सकते हैं जिससे आपको यश की प्राप्ति होगी।

लग्न में शुक्र की स्थिति के प्रभाव से आपका शारीरिक स्वास्थ्य उत्तम रहेगा तथा मानसिक शांति एवं सन्तुष्टि भी बनी रहेगी। आप एक बुद्धिमान पुरुष होंगे तथा बुद्धिमता से अपने सांसारिक कार्यों को सम्पन्न करेंगे तथा इनमें आपको इच्छित सफलताएं भी मिलती रहेंगी। आपकी प्रवृत्ति विलासी होगी तथा भौतिकता के प्रति अत्यधिक आकर्षण रहेगा जिससे आपकी प्रवृत्ति काफी व्ययशील होगी। आपकी प्रवृत्ति भ्रमण प्रिय होगी तथा यात्रा आदि भी समय समय पर सम्पन्न करते रहेंगे। कला एवं संगीत में आप निपुण होंगे तथा कार्य करने में अत्यंत ही दक्ष होंगे।

आप में सहनशीलता का भाव विद्यमान होगा तथा धैर्यपूर्वक कार्यों को सम्पन्न करके उनमें सफलता की प्रतीक्षा करने में समर्थ होंगे। साथ ही सरकार या उच्चाधिकारी वर्ग से आपको समय समय पर धनार्जन होता रहेगा। आप में शारीरिक बल की भी प्रचुरता रहेगी फलतः परिश्रम एवं पराक्रम का प्रदर्शन करके आप जीवन में मनोवांछित सफलताओं को अर्जित करेंगे जिससे समाज में आपका प्रभाव रहेगा तथा सभी लोग आपका आदर करेंगे। साथ ही यश भी दूर दूर तक व्याप्त रहेगा।

धर्म के प्रति आपके मन में पूर्ण श्रद्धा रहेगी तथा अवसरानुकूल आप धार्मिक कृत्यों को नियमपूर्वक सम्पन्न करेंगे। जिससे आपको मानसिक शांति की अनुभूति होगी। मित्र वर्ग के मध्य आप प्रिय एवं आदरणीय रहेंगे तथा उनसे आपको वांछित लाभ एवं सहयोग मिलता रहेगा।

धन, परिवार, आंख एवं वाणी

आपके जन्म समय में द्वितीय भाव में वृश्चिक राशि उदित हुई है जिसका स्वामी मंगल है। अतः इसके प्रभाव से आप जीवन में अपने प्रयत्न एवं परिश्रम से धनार्जन करने में सफल रहेंगे। आपको पैतृक सम्पत्ति की प्राप्ति अल्प मात्रा में ही होगी परन्तु बहुमूल्य रत्न तथा धातुओं को आप अपनी योग्यता तथा लगन से अर्जित करने में अवश्य सफलता प्राप्त करेंगे। आपकी रुचि जायदाद या भूमि संबंधी क्रय विक्रय या सम्बन्धित कार्यों में रहेगी जिससे आपको प्रचुर मात्रा में लाभ होगा। आप एक महत्वाकांक्षी व्यक्ति होंगे तथा परिवार के सहयोग से जीवन में इच्छित उन्नति तथा सम्मान प्राप्त करेंगे। लेकिन आपात्काल में स्वयं को व्यवस्थित करने में असुविधा की अनुभूति करेंगे।

पारिवारिक जनों की प्रसन्नता तथा सुविधा कार्यों में आप सतत यत्नशील रहेंगे तथा पारिवारिक शान्ति एवं सुख संसाधनों पर काफी व्यय करेंगे जिससे वे लोग सन्तुष्ट रह सकें। आपकी वाणी प्रभावशाली रहेगी तथा अन्य जनों को तर्क पूर्ण वाणी से प्रभावित करने में समर्थ रहेंगे तथा आपसे लोग सहमत भी रहेंगे। मिष्टान के आप प्रिय रहेंगे तथा इसके भक्षण से आपको किंचित प्रसन्नता प्राप्त होगी लेकिन प्रौढ़ावस्था में आप नेत्र संबंधी कष्ट प्राप्त कर सकते हैं इसके अतिरिक्त धार्मिक परम्पराओं का आप पूर्ण पालन करेंगे तथा शुभ एवं मंगल कार्य भी समय समय पर करते रहेंगे। इसके अतिरिक्त सज्जन पुरुषों के प्रति आपके मन में हमेशा आदर का भाव रहेगा।

पराक्रम, सहोदर, प्रकाशन एवं लघुयात्राएं

आपके जन्म समय तृतीय भाव में धनुराशि उदित हो रही थी जिसका स्वामी बृहस्पति है। अतः इसके प्रभाव से आपकी स्मरण शक्ति उत्तम रहेगी तथा किसी भी वस्तु या विषय को काफी समय तक याद रखने में समर्थ रहेंगे। भाई बहिनों से आप युक्त रहेंगे तथा जीवन में उनका आपको वांछित सुख एवं सहयोग प्राप्त होगा। साथ ही वे आपके प्रति कर्तव्य परायण तथा विश्वास पात्र रहेंगे। आप भी पारिवारिक शान्ति के लिए उनकी गलतियों को क्षमा करने में समर्थ रहेंगे। सत्य के प्रति आपकी पूर्ण आस्था रहेगी तथा अपने सिद्धांत के भी पक्के होंगे चाहे इससे आपको कोई परेशानी या समस्याएं ही उत्पन्न क्यों न हों। इसके अतिरिक्त आप एक स्पष्टवादी व्यक्ति होंगे तथा जिसे सही समझेंगे उसे सबके समक्ष कह देंगे चाहे उसका प्रभाव कुछ भी हो।

आप एक साहसी तथा पराक्रमी पुरुष होंगे तथा नेतृत्व के गुणों से भी युक्त रहेंगे। साथ ही किसी भी मनुष्य या वस्तु के गुणावगुणों को परखकर ही उसको बारे में अपने राय प्रदान करेंगे। आप सद्विचारों के व्यक्ति होंगे तथा धार्मिक विचारों की भी प्रधानता रहेगी। आधुनिक संचार संसाधनों से आप युक्त रहेंगे यथा दूरभाष, दूरदर्शन या वाहन आदि से युक्त रहकर सुख पूर्वक इनका उपभोग करेंगे। साथ ही संगीत एवं हस्त कला के प्रति भी आपकी रुचि रहेगी तथा यदा कदा इसमें भी अपना समय व्यतीत करेंगे। आपकी समीपस्थ या दूर देशों की यात्राएं समय समय पर होती रहेंगी तथा इनसे आपको वांछित लाभ भी प्राप्त होगा। आपकी अध्ययन के प्रति रुचि रहेगी तथा धार्मिक ग्रन्थ, साहित्य तथा वैज्ञानिक पुस्तकों का आप रुचिपूर्वक अध्ययन करेंगे इसके अतिरिक्त आप किसी संस्था के पदाधिकारी एवं दीन दुःखियों के प्रति दयालु रहेंगे जिससे समाज में सम्माननीय समझे जाएंगे।

शिक्षा, माता, वाहन एवं जायदाद

आपके जन्मसमय में चतुर्थ भाव में मकर राशि उदित हो रही थी जिसका स्वामी शनि है। अतः इसके प्रभाव से जीवन में आप समस्त सांसारिक एवं भौतिक सुखों को प्राप्त करने में समर्थ होंगे। आपको आधुनिक सुख-संसाधनों की भी प्राप्ति होगी जिसका सुखपूर्वक उपभोग करेंगे। आप एक समृद्ध एवं वैभवशाली व्यक्ति होंगे तथा समाज में आदरणीय व्यक्ति माने जायेंगे।

आप एक सौभाग्यशाली व्यक्ति होंगे तथा चल एवं अचल सम्पत्ति से युक्त होकर उसके स्वामित्व को प्राप्त करेंगे। विवाह के बाद पत्नी के प्रभाव या सहयोग से भी आपको वांछित चल एवं अचल सम्पत्ति की प्राप्ति होगी। इससे आपकी समृद्धि में वृद्धि होगी तथा स्वपरिश्रम एवं योग्यता से आपको समय समय पर धन सम्पत्ति की प्राप्ति होती रहेगी। आप चल एवं अचल दोनों प्रकार की सम्पत्ति से युक्त होंगे। अतः इन पर आप इच्छित निवेश कर सकते हैं।

जीवन में आपको उत्तम घर की प्राप्ति होगी तथा यह विस्तृत क्षेत्र में होगा तथा आधुनिक सुख-सुविधाओं एवं उपकरणों से सुसज्जित रहेगा। आप भी व्यक्तिगत रूप से इसके आकर्षण एवं सुन्दरता बनाए रखने के लिए प्रयत्नशील होंगे। आपका घर किसी समृद्ध कालोनी में होगा तथा पड़ोसी भी बुद्धिमान एवं शिक्षित होंगे एवं आपसी संबंधों में भी मधुरता रहेगी। इसके अतिरिक्त उत्तम वाहन से भी आप युक्त होंगे तथा इनकी संख्या एक से अधिक भी हो सकती है।

आपकी माताजी सुन्दर, शिक्षित, बुद्धिमान एवं आधुनिक विचारों की महिला होंगी तथा उनका व्यक्तित्व भी आकर्षक होगा। वह एक व्यवहार कुशल महिला होंगी तथा पारिवारिक सदस्यों का मर्जी से लालन पालन करेंगी जिससे सभी लोग उनको वांछित आदर एवं सम्मान प्रदान करेंगे। आपके प्रति उनके मन में विशेष वात्सल्य का भाव होगा तथा समय समय पर उनसे आपको वांछित आर्थिक एवं नैतिक सहयोग की प्राप्ति होती रहेगी। आपकी उन्नति में भी उनका मुख्य योगदान होगा। आप भी उनके प्रति श्रद्धा एवं आज्ञाकारिता का भाव रखेंगे तथा सुख-दुःख में उन्हें अपना पूर्ण सहयोग प्रदान करेंगे इससे आपसी संबंधों में भी मधुरता बनी रहेगी।

विद्याध्ययन में आपकी प्रारंभ से ही रुचि होगी तथा स्वपरिश्रम एवं योग्यता से आप छोटी कक्षाओं से ही अच्छे अंक लेकर परीक्षाएं उत्तीर्ण करेंगे। स्नातक परीक्षा भी आप संतोषजनक रूप से उत्तीर्ण करेंगे। इससे आपके मन में उत्साह के भाव में वृद्धि होगी तथा भविष्य में भी उन्नति के मार्ग पर अग्रसर होने के लिए स्वयं को तैयार करेंगे। स्वजनों एवं संबंधियों से भी आप वांछित आदर, स्नेह एवं प्रोत्साहन प्रदान करेंगे।

प्रणय सम्बन्ध, सन्तान एवं बुद्धि

आपके जन्म समय में पंचमभाव में कुम्भ राशि उदित हो रही थी जिसका स्वामी शनि है। तथा शनि भी स्वग्रही एवं योग कारक होकर पंचमभाव में ही स्थित है। अतः इसके प्रभाव से आप एक बुद्धिमान व्यक्ति होंगे तथा अपने समस्त शुभ एवं महत्वपूर्ण कार्यों को बुद्धिमता से सम्पन्न करके उनमें वांछित सफलताएं अर्जित करेंगे। आप में शीघ्र एवं सटीक निर्णय लेने की भी क्षमता होगी जिससे गंभीर समस्याओं का समाधान सुगमता से करने में समर्थ होंगे। वैदिक साहित्य धर्म एवं दर्शन में आपकी रुचि अल्प मात्रा में ही होगी परन्तु आधुनिक विज्ञान एवं इतिहास के क्षेत्र में आप विशेष रुचिशील होंगे तथा परिश्रम पूर्वक इसके ज्ञानार्जन में तत्पर होंगे। आप इस क्षेत्र में कोई नवीन शोध कार्य या सिद्धांत का भी प्रति-पादन कर सकते हैं।

स्वग्रही शनि की पंचमभावस्थ स्थिति के प्रभाव से प्रेम-प्रसंगों में भी आपकी रुचि होगी तथा एक-दूसरे के प्रति भावात्मक आकर्षण रहेगा। आप मर्यादित एवं नैतिकता युक्त प्रेम करना पसन्द करेंगे तथा शारीरिक आकर्षण को कम महत्व देंगे। अतः आपका प्रेम-प्रसंग विवाह के रूप में परिणित हो सकता है जिससे आपका जीवन सुख एवं आनन्दपूर्वक व्यतीत होगा।

संतति भाव में स्वग्रही शनि के प्रभाव से आपको यथोचित समय पर संतति की प्राप्ति होगी तथा पुत्रसंतति भी अवश्य होगी। आपकी संतति योग्य, बुद्धिमान एवं पराक्रमी होगी तथा अपने इन्हीं गुणों से जीवन में उन्नति एवं सफलता अर्जित करेंगे। माता-पिता के प्रति उनके मन में पूर्ण श्रद्धा एवं सम्मान का भाव होगा तथा उनकी आज्ञा पालन में सर्वदा तत्पर रहेंगे। वे समस्त शुभ एवं महत्वपूर्ण कार्यों को माता-पिता की सलाह तथा सहयोग से सम्पन्न करेंगे। इससे आपस में विश्वास एवं सदभाव बना रहेगा। पिता की अपेक्षा माता के प्रति बच्चों के मन में विशेष लगाव होगा तथा अपनी व्यक्तिगत समस्याओं का समाधान वे माता के सहयोग से करेंगे। इसके अतिरिक्त आप एक भाग्यवान व्यक्ति होंगे तथा वृद्धावस्था में बच्चे तन-मन-धन से आपकी सेवा करेंगे तथा अपनी ओर से किसी भी प्रकार का कष्ट नहीं होने देंगे जिससे आपकी वृद्धावस्था सुख एवं प्रसन्नता पूर्वक व्यतीत होगी।

अध्ययन के क्षेत्र में आपकी संतति योग्य एवं प्रतिभाशाली सिद्ध होगी तथा शुरू से ही वे पढ़ने में अच्छी सफलता का प्रदर्शन करेंगे। आप भी उनकी शिक्षा का उचित प्रबन्ध करेंगे एवं अपनी ओर से किसी भी प्रकार की कमी नहीं होने देंगे। आपकी संतति व्यवहार कुशल होगी तथा अपने कार्य-कलापों से अन्य जनो को प्रभावित एवं प्रसन्न रखेंगी इससे लोग उनको वांछित स्नेह एवं प्रोत्साहन प्रदान करेंगे एवं आपकी भी सामाजिक प्रतिष्ठा में वृद्धि होगी तथा बच्चों की ओर से आप निश्चित तथा सन्तुष्ट रहेंगे।

रोग, शत्रु, सेवक एवं मामा

आपके जन्म समय में षष्ठ भाव में मीन राशि उदित हो रही थी जिसका स्वामी बृहस्पति है अतः इसके प्रभाव से आप को जीवन में किसी उच्चाधिकार प्राप्त व्यक्ति से विरोध का सामना करना पड़ेगा साथ ही आपके शत्रु भी सामाजिक मान सम्मान में न्यूनता करने के लिए सदैव प्रयत्नशील रहेंगे। जिससे समाज में आपके प्रभाव में अल्पता आएगी। आपके सेवक आज्ञाकारी तथा विश्वास पात्र रहेंगे तथा ईमानदारी से आपकी सेवा में हमेशा तत्पर रहेंगे लेकिन यदि आप उनको उचित पारिश्रमिक प्रदान नहीं करेंगे तो वे घर में किसी प्रकार की चोरी आदि भी कर सकते हैं अतः ऐसी समस्याओं का निराकरण पहले ही कर लेना चाहिए।

आपकी प्रवृत्ति अधिक से अधिक धन संग्रह करने की रहेगी साथ ही कई प्रकार से पूंजीनिवेश भी करेंगे परन्तु इसमें हानि की अवस्था में आपको ऋण आदि लेना पड़ सकता है लेकिन आपको कर्ज देने वाले विशेष सहयोग नहीं देंगे तथा विलम्ब की अवस्था में आपके सम्मान को प्रभावित करेंगे। अतः धन व्यय या पूंजीनिवेश आदि के कार्यों में आपको अत्यधिक बुद्धिमता एवं सतर्कता का परिचय देना चाहिए। इसके साथ ही अवसरानुकूल बन्धुवर्ग या संबन्धी भी आर्थिक मामलों में आपको हानि प्रदान कर सकते हैं। अतः ऐसे समय में स्थिति को पूर्ण समझकर ही कार्य करने चाहिए।

जीवन में सम्बन्धियों या अन्य जनों से मुकद्दमे बाजी का भी संकेत मिलता है। इसका संबंध आर्थिक, जमीन जायदाद या कुछ फौजदारी मामलों से हो सकता है। साथ ही यदा कदा दाम्पत्य जीवन में भी मधुरता के भाव में न्यूनता आ सकती है। मामा मामियों से आपके संबंध सामान्य ही रहेंगे तथा परस्पर विशेष सहयोग के भाव में न्यूनता रहेगी। शारीरिक स्वस्थता बनाए रखने के लिए उचित खान पान का प्रयोग करें। जब कभी आपको अत्यधिक समस्याओं का सामना करना पड़ेगा तब आप गुप्त कार्यों के द्वारा शान्ति एवं सफलता अर्जित करने की सोचेंगे इसमें या तो पूजा संबन्धी कार्य हो सकता है अन्यथा आप अपने कठोर कार्यों से प्रतिशोध की भावना से पूर्ण करेंगे जिससे आपको न्यूनाधिक रूप से लाभ एवं उपलब्धियां अर्जित हो सकती है।

परिवार, विवाह एवं साझेदार

आपके जन्म समय में सप्तम भाव में मेष राशि उदित हो रही थी जिसका स्वामी मंगल है तथा केतु भी सप्तम भाव में ही स्थित है सामान्यतया सप्तम भाव में मेष राशि की स्थिति से जातक का सहयोगी तेजस्वी पराक्रमी एवं धनाढ्य होता है एवं केतु के प्रभाव से उसमें उग्रता के भाव की उत्पत्ति होती है लेकिन सांसारिक कार्यों को करने में दक्ष होता है।

अतः इसके प्रभाव से आपकी पत्नी तेजस्वी स्वभाव की महिला होंगी सांसारिक कार्य कलाओं को वह चतुराई से सम्पन्न करेंगी तथा उनके साहसिक कार्यों से अन्य लोग भी उनसे प्रभावित होंगे। भौतिकता की ओर भी उनकी रुचि रहेगी तथा आधुनिक सुख संसाधनों को अर्जित करने के लिए तत्पर रहेगी। केतु के प्रभाव से कर्तव्य परायणता भी उनमें होगी जिससे परिवार एवं समाज के प्रति अपने कर्तव्य का पालन करेंगी।

आपकी पत्नी लालिमा लिए गौरवर्ण की महिला होंगी तथा कद भी मध्यम रहेगा शारीरिक सौन्दर्य उनका दर्शनीय होगा एवं शरीर के अन्य अंग प्रत्यंग भी पुष्ट एवं सुडौल होंगे जिससे उनके आकर्षण में वृद्धि होगी तथा व्यक्तित्व में निखार आएगा। केतु के प्रभाव से पाक शास्त्र में उनकी रुचि होगी तथा उनके द्वारा बनाए गए स्वादिष्ट भोजन से सभी लोग प्रभावित होंगे।

सप्तम भाव में केतु के प्रभाव से यद्यपि विवाह में कुछ विलम्ब होगा परन्तु अनावश्यक व्यवधान नहीं होंगे। आपका विवाह बंधु संबंधी या विज्ञापन के माध्यम से सम्पन्न होगा। विवाह के बाद आपका दाम्पत्य जीवन सामान्यतया सुखी रहेगा तथा एक दूसरे के प्रति मन में प्रेम तथा सदभाव होगा। साथ ही सांसारिक महत्व के कार्यों को एक दूसरे की सलाह एवं सहमति से पूर्ण करेंगे जिससे समानता एवं विश्वसनीयता बनी रहेगी परन्तु पत्नी के उग्रस्वभाव से यदा कदा संबंधों में तनाव उत्पन्न होगा अतः ऐसे समय पर संयम से व्यवहार करना चाहिए।

आपका विवाह किसी प्रतिष्ठित परिवार में होगा तथा सामाजिक एवं आर्थिक दृष्टि से उनकी स्थिति अच्छी रहेगी। विवाह के बाद सास ससुर से आपके औपचारिक संबंध रहेंगे तथापि अवसरानुकूल उनसे आपको नैतिक तथा अन्य प्रकार से सहयोग की प्राप्ति होती रहेगी।

सास ससुर के प्रति आपकी पत्नी का सेवा भाव अल्प ही रहेगा तथा सुख दुख में वह उनका विशेष ध्यान नहीं रखेंगी देवर एवं ननद भी उनकी तेजस्विता एवं कटुवाणी से अप्रसन्न रहेंगे तथा उन्हें यथोचित सम्मान एवं सहयोग नहीं देंगे।

व्यापार या किसी महत्वपूर्ण कार्य में साझेदारी के लिए स्थिति विशेष अनुकूल नहीं रहेगी। अतः यदि अत्यावश्यक न हो तो साझेदारी की उपेक्षा ही करनी चाहिए।

आयु, दुर्घटना एवं बीमा

आपके जन्म समय में अष्टम भाव में वृष राशि उदित हो रही थी जिसका स्वामी शुक्र है। अतः इसके प्रभाव से आप में आध्यात्मिक शक्ति विद्यमान रहेगी। साथ ही ज्यौतिष एवं तंत्र मंत्र आदि में आपकी श्रद्धा रहेगी तथा परिश्रम पूर्वक इनका ज्ञान अर्जित करने में भी समर्थ रहेंगे। आपके अन्दर सक्रियता के भाव की सदैव प्रबलता रहेगी तथा प्रतिभा से भी युक्त रहेंगे अतः आप कोई भी सृजनात्मक कार्य दूसरों की अपेक्षा आसानी से कर लेंगे। ज्यौतिष आदि के क्षेत्र में आप काफी उन्नति एवं लाभ अर्जित करने में समर्थ रहेंगे तथा इसमें आपको ख्याति भी प्राप्त होगी। आपको मित्र या बन्धु वर्ग के द्वारा जायदाद संबंधी लाभ का योग बनता है। साथ ही पैतृक सम्पत्ति भी न्यूनाधिक रूप से आपको अवश्य प्राप्त होगी। जायदाद एवं चल अचल सम्पत्ति के स्वामित्व के द्वारा समाज से आपको इच्छित आदर एवं सम्मान की प्राप्ति होगी। इस प्रकार आप एक वैभवशाली पुरुष के रूप में जाने जाएंगे।

विवाह आदि के समय आपको आवश्यक मात्रा में धन या उपहार आदि की प्राप्ति होगी तथा अपेक्षानुसार आपके ससुराल पक्ष के लोग आपको ये सब भेंट करेंगे। साथ ही आप आवास को सुंदर सजावट से युक्त रखेंगे तथा समय पर पार्टियों का भी आयोजन करते रहेंगे। बीमा आदि से भी समय समय पर लाभ होगा अतः बीमा आपको अवश्य कराना चाहिए। आपके घर में चोरी की कोई बड़ी घटना नहीं होगी परन्तु सामान्यतया इन घटनाओं से कोई परेशानी नहीं होगी। आपकी सतर्कता की प्रवृत्ति से जीवन में दुर्घटनाएं नहीं होगी तथापि आपको तीव्र गति का वाहन आदि नहीं चलाना चाहिए। आपकी आयु उत्तम रहेगी तथा सुख पूर्वक अपना सांसारिक जीवन व्यतीत करेंगे।

प्रसिद्धि, पूजा, उच्चशिक्षा एवं लम्बी यात्राएं

आपके जन्म समय में नवम भाव में मिथुन राशि उदित हो रही थी जिसका स्वामी बुध है। अतः इसके प्रभाव से आप एक धार्मिक प्रवृत्ति के व्यक्ति होंगे तथा पारिवारिक नियमों का पालन करते रहेंगे। जीवन में आप भौतिक सुख की प्राप्ति के लिए यत्नशील रहेंगे। आपकी ईश्वर की सत्ता में पूर्ण निष्ठा रहेगी तथा भाग्य बल से जीवन में धनऐश्वर्य अर्जित करने में समर्थ रहेंगे। अवसरानुकूल तीर्थ स्थानों की यात्रा भी करेंगे तथा आप एक धर्मनिष्ठ पुरुष के रूप में जाने जाएंगे।

विभिन्न धर्मों के ऊपर लिखे गए ग्रंथों का आप रुचिपूर्वक अध्ययन करेंगे। साथ ही ध्यान योग, तंत्र तथा अध्यात्म आदि के प्रति भी आपका विश्वास रहेगा तथा इनसे संबंधित विषयों का भी समय समय पर अध्ययन करके ज्ञानार्जन करते रहेंगे। यदि आप अपनी दृढ़ संकल्पता में वृद्धि कर सके तो इससे आपकी अन्तर्प्रज्ञा शक्ति में वृद्धि होगी तथा पूर्वाभास एवं भविष्य वाणी करने में समर्थ हो सकेंगे।

आपकी दैनिक पूजा जीवन में आपको ऐश्वर्य प्रदान करने में शक्ति प्रदान करेंगी परन्तु यदा कदा मानसिक असुन्तल के कारण आपको व्यवधानों का भी सामना करना पड़ेगा। साथ ही पूजा कार्य में भी समय समय पर व्यवधान आएंगे। व्यावसायिक रूप से की गई लम्बी यात्राओं से आपको लाभ यश तथा समाज में मान सम्मान एवं प्रतिष्ठा की प्राप्ति होगी। इससे आप में स्थायित्व आएगा तथा धन वैभव की भी वृद्धि होगी। आप एक प्रसिद्ध बुद्धिमान एवं विद्वान पुरुष होंगे तथा अपनी योजनाएं बिना किसी की सलाह लिए सम्पन्न करेंगे। साथ ही अपने प्रथम पौत्र से अत्यधिक सुख एवं आनंद प्राप्त करेंगे तथा जीवन में अन्य शुभ कार्य भी आप करते रहेंगे एवं सुख ऐश्वर्य से युक्त रहेंगे। इसके अतिरिक्त आप धर्मात्मा सौभाग्यशाली अतिथि सत्कार करने वाले तथा दीनों पर कृपा करने वाले व्यक्ति होंगे तथा परोपकार संबंधी कार्यों को पूर्ण करने में सफल रहेंगे।

व्यवसाय, पिता एवं सामाजिक स्तर

आपके जन्म समय में दशम भाव में कर्क राशि उदित हो रही थी जिसका स्वामी चन्द्र है। कर्क राशि जलतत्व प्रधान है। अतः इनके प्रभाव से आपका कार्यक्षेत्र बौद्धिक एवं मानसिक क्रिया प्रधान होगा तथा समय समय पर आप इसमें परिवर्तन करने के इच्छुक होंगे एवं ऐसे तात्कालिक परिवर्तनों से आप को लाभ एवं उन्नति की प्राप्ति होगी। साथ ही आप मानसिक रूप से भी सन्तुष्टि की अनुभूति करेंगे।

आजीविका की दृष्टि से आपके लिए जलविभाग, वस्त्र उत्पादन फैक्टरी, स्टेनो ग्राफर, कैमिकल्स, कार्यालय सहायक, सचिव, जलसेना, जहाजरानी विभाग अनुकूल रहेंगे। इन विभागों में कार्य करने से आपको वांछित उन्नति एवं सफलता मिलेगी तथा मानसिक रूप से भी आप सन्तुष्टि की अनुभूति करेंगे।

व्यापारिक दृष्टि से आपके लिए जलोत्पन्न पदार्थों यथा शंख, मोती, प्रवाल, मछली का व्यापार, मिट्टी के खिलौने, ईट, वालू आदि के कार्य, वास्तुकला, आलंकारिक वस्तुओं का व्यापार, द्रव्य पदार्थों यथा दूध, दही, घी आदि के कार्य से लाभ होगा। साथ ही रेशमी एवं मूल्यवान वस्त्रों के व्यापार या आयात निर्यात से भी इच्छित उन्नति एवं लाभ की प्राप्ति होगी। अतः यदि आप व्यापार के इच्छुक हो तो उपरोक्त क्षेत्रों में ही व्यापार आरंभ करें। इससे आपकी उन्नति के मार्ग प्रशस्त होंगे तथा लाभ स्रोतों में भी वृद्धि होगी।

जीवन में आपको वांछित मान सम्मान तथा प्रतिष्ठा की प्राप्ति होगी तथा किसी सम्मानित एवं उच्चाधिकार प्राप्त पद को अर्जित करने में समर्थ होंगे। समाज में आप एक प्रभावशाली व्यक्ति होंगे तथा सभी लोग आपके प्रभाव को स्वीकार करेंगे। साथ ही दूर दूर तक आपकी प्रसिद्धि भी व्याप्त होगी। इसके अतिरिक्त आप किसी सामाजिक धार्मिक सांस्कृतिक या शैक्षणिक संस्था के पदाधिकारी भी हो सकते हैं जिससे आपके प्रभाव एवं प्रतिष्ठा में वृद्धि होगी।

आपके पिता बुद्धिमान, शिक्षित तथा मृदुस्वभाव के व्यक्ति होंगे तथा उनकी प्रवृत्ति भी शान्ति प्रिय होगी। साथ ही उनका व्यक्तित्व भी आकर्षक होगा एवं सभी लोग उनसे प्रभावित तथा प्रसन्न होंगे। आपके प्रति उनके मन में पूर्ण स्नेह तथा वात्सल्य का भाव होगा तथा आपकी उच्च शिक्षा का वे समुचित व्यवस्था करेंगे। आपकी कार्यक्षेत्र की उन्नति एवं सफलता में उनका विशेष योगदान होगा तथा उनके प्रभाव से आपको इसमें यथोचित सम्मान एवं आदर की प्राप्ति होगी। साथ ही आप भी अपने उत्तम कार्य कलापों से पिता के सम्मान एवं प्रतिष्ठा में वृद्धि करेंगे। इसके अतिरिक्त आपके आपसी संबंधों में भी मधुरता रहेगी एवं वैचारिक तथा सैद्धान्तिक रूप से समानता होगी। साथ ही सांसारिक महत्व के कार्यों को एक दूसरे की सलाह एवं सहयोग से सम्पन्न करेंगे।

लाभ, मित्र, समाज एवं ज्येष्ठ भ्राता

आपके जन्म समय में एकादश भाव में सिंह राशि उदित हो रही थी जिसका स्वामी सूर्य है। इसके प्रभाव से आप भाग्यशाली व्यक्ति होंगे और आर्थिक दृष्टि से आपका धनार्जन उत्तम रहेगा। आप एक परम महत्वाकांक्षी व्यक्ति होंगे तथा मन में कई इच्छाएं एवं उमंगें विद्यमान रहेगी। साथ ही सौभाग्य के बल पर इनको पूर्ण करने में भी समर्थ रहेंगे। आप सरकार, औषधिविज्ञान तथा पिता के द्वारा जीवन में विशेष रूप से लाभ अर्जित करने में समर्थ रहेंगे तथा इन्हीं के द्वारा आपके आय स्रोतों में वृद्धि होगी। इस प्रकार लाभ की दृष्टि से हमेशा उन्नति के मार्ग पर अग्रसर रहेंगे। साथ ही बड़े भाइयों से आपको जीवन में पूर्ण लाभ सुख सहयोग एवं स्नेह की प्राप्ति होगी तथा वे हमेशा आपको अपना सहयोग प्रदान करने में तत्पर रहेंगे।

मित्रों के प्रति आपके मन में पूर्ण विश्वास रहेगा तथा उनके मध्य आपको मान सम्मान एवं आदर की प्राप्ति होगी। साथ ही वे सभी शिक्षित एवं बुद्धिमान होंगे। आप एक सामाजिक प्राणी होंगे तथा समूह में मनोरंजन या अन्य कार्य करना आपके लिए आनन्द दायक रहेगा साथ ही सामाजिक जनों की सेवा तथा भलाई करने के कार्यों में भी तत्पर रहेंगे एवं जीवन में विशिष्ट मान सम्मान एवं ख्याति भी प्राप्त कर सकते हैं। आपका शारीरिक स्वास्थ्य सामान्यतया अच्छा रहेगा तथापि यदा कदा गर्मी या पित्त आदि से उत्पन्न दोषों से किंचित अस्वस्थता की अनुभूति कर सकते हैं। लेकिन इसका कोई दुष्प्रभाव नहीं होगा तथा आप समस्त सांसारिक सुखों का उपभोग करते हुए अपने समय को व्यतीत करेंगे।

विदेश यात्रा, हानि, बन्धन एवं कर्ज

आपके जन्म समय में द्वादश भाव में कन्या राशि उदित हो रही थी जिसका स्वामी बुध है। अतः इसके प्रभाव से आप आर्थिक दृष्टि से सम्पन्न एवं समृद्ध रहेंगे। साथ ही जीवन में प्रचुर मात्रा में अनेक साधनों से धन अर्जित करने में समर्थ रहेंगे। लेकिन आपका रहन सहन, खान पान उच्च स्तर का रहेगा फलतः बचत अल्प मात्रा में ही होगी तथा व्ययाधिक्य रहेगा। आप भौतिक सुख संसाधनों एवं उपकरणों पर व्यय करेंगे साथ ही वस्त्रादि भी सुंदर एवं कीमती होंगे तथा कीमती वस्त्र पहनकर समाज में अपनी धन सम्पन्नता को प्रदर्शित करेंगे।

आपका पारिवारिक जीवन सुख एवं शान्तिमय रहेगा तथा आवास स्थल भी सुंदर एवं सुसज्जित रहेगा एवं इसकी साज सज्जा पर आप काफी व्यय करेंगे। वास्तव में आप कलात्मक रूप से रहना पसन्द करते हैं तथा इसके लिए अत्यधिक धन की आवश्यकता रहती है। सुंदर एवं विलासमय वस्तुओं के प्रति आपकी तीव्र रुचि रहेगी तथा इनको प्राप्त करने के लिए आप कितना भी व्यय क्यों न हो करने में तत्पर रहेंगे। साथ ही परिवार एवं मित्रों के साथ महंगे होटलों में खाना या नाश्ता करना भी आपका शौक रहेगा। आपकी सफलता को देखकर आपके शत्रु आपके लिए रुकावटें उत्पन्न करेंगे। अतः कभी कभी मानसिक रूप से तनावग्रस्त भी रहेंगे।

यात्रा करने के लिए आप रुचिशील रहेंगे। साथ ही आप की देश के साथ साथ विदेश संबंधी यात्राएं भी होंगी इनसे आपको उचित लाभ एवं सम्मान प्राप्त होगा यद्यपि इनमें व्यय भी अधिक होगा परन्तु कुछ समय के उपरांत लाभमार्ग भी प्रशस्त होंगे। आप भ्रमण या कार्यवश दोनों प्रकार की यात्राएं सम्पन्न करेंगे। इसके साथ ही विदेश में भी आप काफी समय तक प्रवास कर सकते हैं।

लाल किताब ग्रह फल

सूर्य

आपकी जन्मकुंडली के पहले खाने में सूर्य है। इसकी वजह से बाहर से मधुर स्वभाव परंतु अंदर से आग का शोला होंगे। आपका चाल-चलन अच्छा होगा। आप तेजस्वी, प्रतापी, शत्रुहंता होंगे। आप में आत्मसिद्धि, मानसिक रूप से चिन्तित, मान-सम्मान से युक्त होंगे। सत्ता से लगाव, लेखा-जोखा के कार्य में संलग्न, सभी प्रकार की शिक्षा प्राप्ति होगी। आप विचारों के पक्के शराब-नशे से दूर रहने वाले, हर बात में पहल करने वाले, आक्रामक, मुंह तोड़ जवाब देने वाले तथा परिश्रमी होंगे। आप पुरुषार्थ से धन कमा कर धनी होंगे। आप दूसरों की सहायता करेंगे। आप ठोकरें खा-खाकर चमकेंगे। आपको सताने वाला नष्ट हो जाएगा। आपकी प्रसिद्धि और बढ़ेगी। धार्मिक कार्य और परोपकार में धन लगाने से उन्नति होगी। 24 वर्ष की आयु में विवाह शुभ, संतान एवं पत्नी का सुख मिलेगा, अच्छे कार्य में अगुवा रहेंगे। गरीबों के मदद्गार एवं क्रोधी होंगे। आप किसी बात को सुन कर फिर देख कर विश्वास करेंगे। सिर गंज पड़े तो धनवान होने का समय आयेगा, आपके स्वतंत्र विचार रहेंगे और यात्रा से लाभ मिलेगा। सरकारी विभाग में उच्चाधिकारी या सरकारी अधिकारियों से अच्छे संबंध होंगे और उनसे लाभ पा सकते हैं। आप जनता के लाभार्थ कार्य करेंगे।

यदि आपने जनता से दुर्व्यवहार किया या परिवार-कल्याण के कामों में विघ्न पैदा किये या मकान के अंत में अंधेरा कमरा रोशनी में बदला तो आपका सूर्य मंदा हो सकता है या किसी कारण वश सूर्य मंदा हो गया हो तो सूर्य का मंदा असर शारीरिक व हड्डी रोग, दिल की धड़कन तेज आदि प्रतिकूल फल मिलते हैं। क्रोध करने और दुर्वचन बोलने से रक्तचाप का रोग हो सकता है।

यदि आपको लगता है कि आपको उपरोक्त कष्ट है तो निम्नलिखित परहेज और उपाय करें।

परहेज :

1. मांस-मदिरा का प्रयोग न करें।
2. दिन के समय चाल-चलन ठीक रखें।

उपाय :

1. पानी में चीनी डाल कर सूर्य को अर्घ्य दें।
2. मकान के अंत में अंधेरी कोठरी/कमरा बनायें।

चन्द्र

आपकी जन्मकुंडली में चंद्रमा ग्यारहवें खाने में पड़ा है। इसकी वजह से विद्या का पूरा लाभ उठायेंगे जो आगे आने वाले समय में शुभ रहेगा। अगर आप रात्रि समय विद्या पढ़ें तो लाभ

Astrologer Eeshan

Varanasi

9450831636

astrologereeshan@gmail.com

हो सकता है। आपके पास सुख के सब साधन उपलब्ध रहेंगे। सत्ता का श्रेष्ठतम फल प्राप्त होगा। 32 वर्ष की उम्र तक लगातार धन आता रहेगा। आपको स्त्रियों का सहयोग मिलेगा और स्त्री से लाभ प्राप्त होगा। आमदनी में बरकत होगी।

यदि आपने शुक्रवार विवाह किया या रात्रि समय विवाह के फेरे लिए, प्रभात समय दान दिया या लिया, बुधवार को नया काम शुरू किया, शनिवार मकान मशीनरी खरीदी तो आपका चंद्रमा मंदा हो सकता है या किसी कारण वश चंद्रमा मंदा हो गया हो तो चंद्रमा के मंदे असर से विद्या में रुकावट आयेगी। संतानोत्पत्ति में बाधा होगी या आपको पुत्र प्राप्ति में बाधा आ सकती है। कामशक्ति की दुर्बलता रहेगी (कामशक्ति में कमजोरी के समय किसी वैद्य की सलाह से सोना युक्त दवाईयां या दूध से बनी चीजों का इस्तेमाल करें)। आपकी माता देर से आपके पुत्र का सुख देखेंगी। आपकी स्त्री को जब बच्चा पैदा होने वाला हो तो आपकी माता वहां से कहीं और चली जाएं या आपकी स्त्री अपने मायके में बच्चा पैदा करे। आपकी माता जन्म के बाद आपके बच्चे को 43 दिन तक आखों से न देखें या हाथों में न उठायें कर तो आपकी माता और आपके बच्चे की लम्बी आयु रहेगी वरना एक की आयु क्षीण हो जाएगी। आपका या आपकी माता की आंखों के आप्रेशन का भय है। आपके दादी-माता से अधिक मधुर संबंध नहीं रहेगे। आप दुश्मन से परेशान रहेंगे। आपके जीवन में उत्थान-पतन के भी योग आ सकते हैं। आपके भाई-बंधु एवं संपत्ति पर बुरा प्रभाव पड़ सकता है।

यदि आपको लगता है कि आपको उपरोक्त कष्ट है तो निम्नलिखित परहेज और उपाय करें।

परहेज :

1. विद्या अधूरी न छोड़ें।
2. चाल-चलन ठीक रखें।

उपाय :

1. भैरों मंदिर में दूध चढ़ावें या मजदूर पेशा आदमी को दूध पिलायें।
2. माता का स्वास्थ्य खराब हो तो 11-11 खोये के पेड़े 11 बच्चों में बांटें।
3. घर में छत के नीचे नदी का पानी रखें।

मंगल

आपकी जन्मकुंडली में मंगल दूसरे खाने में पड़ा है। इसकी वजह से आप दयालु, रक्षक, भाई और मित्रों के पालनहार, आप दूसरों की जरूरत हमेशा पूरी करेंगे। आप किसी संस्था के प्रधान भी हो सकते हैं। आप बहुत लोगों को सहारा देने वाले होंगे। आप दूसरों को खाली हाथ नहीं लौटाएंगे। आपको ससुराल से सहायता मिलेगी। आप छोटे भाई से पुत्र जैसा प्यार करेंगे और उसे सहायता देंगे। छोटे भाई की सहायता से आपके भाग्य में वृद्धि होगी। आप दूसरों की सहायता करते रहेंगे। इस वजह से आप भी भरपूर रहेंगे। आपको दूसरों की भलाई के लिए

धन-संपत्ति मिलती रहेगी। आप दूसरों के लिए लंगर लगाएंगे। आप नेक और पक्के इरादे के हैं। आप परिश्रम से धनी होंगे। आपको खुराक, पोशाक तथा अन्य जीवन के सुख प्राप्त होंगे। जरूरत पड़ने पर खुद ब खुद पैसे मिल जाएंगे। आपको भगवान की कृपा से बहुत धन मिलेगा। आप अधिकारी बन कर हुकूमत करेंगे। आप तीर्थ यात्रा करने से शुभ फल को प्राप्त करेंगे। शादी के बाद आपकी दौलत में बढ़ोत्तरी होगी। ससुराल पक्ष से सुखी रहेंगे।

यदि आपने दूसरों के धन-स्त्री पर बुरी नजर रखी, बुरी आदतों के शिकार हुए या छल-कपट करके भाई-बंधुओं, मित्रों के साथ ठगी की तो आपका मंगल मंदा हो सकता है या किसी कारण वश मंगल मंदा हो गया हो तो मंगल के मंदे असर से अगर विद्या में रुकावट, जरूरत पड़ने पर आपको धन मिलता रहेगा। नौकरी-व्यापार में बार-बार हानि हो सकती है। 28 वर्ष से पहले बड़े भाई को शरीर कष्ट संतान की चिंता, धन हानि होगी। यदि आपका बड़ा भाई है तो उसका सुख आपको नहीं मिलेगा या वह आपसे हालत में कमजोर होगा या आप और आपका भाई निःसंतान भी हो सकते हैं।

यदि आपको लगता है कि आपको उपरोक्त कष्ट है तो निम्नलिखित परहेज और उपाय करें।

परहेज :

1. लड़ाई-झगड़े से दूर रहें।
2. मेहमानों की सेवा से मुंह न फेरें।

उपाय :

1. बच्चों को दोपहर के समय गुड़-गेहूं बांटें।
2. नाश्ते में मीठा भोजन करें।

बुध

आपकी जन्मकुंडली में बुध बारहवें खाने में होगा। इसकी वजह से अच्छी स्थिति बन सकती है। वैसे आपको धन-संपत्ति मिलेगी परंतु आकस्मिक खर्च होता रहेगा। आप सोच-विचार कर कार्य करेंगे। आपकी बहन-लड़की अपने ससुराल में ही सुखी रहकर बसेगी। मगर अपने पिता के घर में दुःखी रहेगी। आप सोच-विचार कर कार्य करेंगे। बुजुर्गों की संपत्ति का लाभ होगा। ज्योतिष या गुप्त विद्या में रुचि रह सकती है।

यदि आपने किसी से झूठा वायदा किया या जुबान बदलने की आदत हुई, मादक चीजों-द्रव्यों का प्रयोग किया, हर समय लुट गये-लुट गये की बातें की तो आपका बुध मंदा हो सकता है या किसी कारण वश बुध मंदा हो गया हो तो बुध के मंदा असर से आपकी मानसिक स्थिति डांवाडोल करेगा। सिर दर्द बना रहेगा। रात्रि में ठीक ढंग से नींद नहीं आएगी। आपके घर में बहन, लड़की, दुःखी रहेगी। आप धनी होते हुए भी दुःखी रहेंगे। सट्टे-लाटरी का काम या दलाली के कामों से नीच प्रभाव मिलेगा। बुरे कामों में धन की बर्बादी हो सकती है। पिता के धन

पर बुरा असर पड़ सकता है। ससुराल में मंदा प्रभाव रहेगा। कभी-कभी भ्रम या अज्ञानता के कारण नुकसान होने की आशंका है। आपके भाई के जीवन पर बुरा असर तथा धन का नाश हो, ऐसी शंका है। 25वें वर्ष में विवाह करना पिता के लिए अशुभ होगा। आपकी पत्नी का भाग्य भी मंदा हो सकता है।

यदि आपको लगता है कि आपको उपरोक्त कष्ट है तो निम्नलिखित परहेज और उपाय करें।

परहेज :

1. दिया हुआ वचन पूरा करें।
2. क्रोध से दूर रहें।

उपाय :

1. स्टेनलेस स्टील की बेजोड़ अंगूठी बायें हाथ में पहनें।
2. मिट्टी का खाली घड़ा ढक्कन लगा कर जल प्रवाह करें।

गुरु

आपकी जन्मकुंडली में वृहस्पति दूसरे खाने में पड़ा है। जिसकी वजह से आप गुरु का दायित्व निभाएंगे शिक्षा तथा ज्ञान फैला कर उनकी समस्याओं का हल निकाल लेंगे। आपका गृहस्थ जीवन सुखी होगा। दौलत बहुत आ जाएगी। सरकारी कामकाज के अवसर मिलेंगे। आप अपनी जायदाद खुद बनाएंगे। आपके पिता के आशीर्वाद से आपकी दौलत में वृद्धि होगी। अगर आप सरकारी नौकरी करते हैं तो 27वें साल में सरकारी नौकरी में तरक्की होगी। राजदरबार में सम्मान मिलेगा। आप में हुकूमत करने की ताकत होगी और जीवन की हर मंजिल पर फतह पाएंगे। आपका कुछ बुरा होने वाला होगा उसके पहले आपको पता चल जाएगा। आपको अचानक दबा धन मिलने की संभावना है। आपको विद्या का बहुत लाभ मिलेगा। आपकी पत्नी सुंदर होगी। आप जीवन में प्रसिद्धि प्राप्त करेंगे। आप बहादुर होंगे। खेती-बाड़ी या मिट्टी से संबंधित कामों में या कपड़े से संबंधित नौकरी-व्यापार में अच्छा लाभ होगा।

यदि आपने पत्नी का विरोध किया, सर्राफी-जौहरी का काम किया, माता-पिता का विरोध किया या माता-पिता को कष्ट दिया तो आपका वृहस्पति मंदा हो सकता है या किसी कारण वश वृहस्पति मंदा हो गया हो तो वृहस्पति के मंदे असर से आपकी नजर पर बुरा प्रभाव पड़ने की शंका है। बुढ़ापे में स्वास्थ्य और आर्थिक हालत अच्छी नहीं रहेंगे। आपको दूसरे के झगड़े में पड़ने से नुकसान उठाना पड़ेगा। आप कुछ दुःखी रहेंगे ऐसी आशंका है। आप में बेरहमी भी होगी। पुलिस/कोर्ट से दंड/जुर्माना का भय रहेगा।

यदि आपको लगता है कि आपको उपरोक्त कष्ट है तो निम्नलिखित परहेज और उपाय करें।

परहेज :

1. सर्राफी/जौहरी के काम न करें।
2. चाल-चलन ठीक रखें।

उपाय :

1. मकान में कच्चा हिस्सा जरूर रखें।
2. केसर/हल्दी का तिलक करें।

शुक्र

आपकी जन्मकुंडली में शुक्र पहले खाने में पड़ा है। जिसकी वजह से आपकी सेहत अच्छी रहेगी। देह में पूरी ताकत रहेगी। आप सुंदर, अच्छा भोजन करने वाले तथा सुंदर स्त्रियों पर आसक्त रहने वाले प्राणी हैं। मस्त चाल आशिकाना मिजाज, अपने आप में प्रसन्न रहने वाले हर समय स्त्रियों के जैसे संजने-संवरने वाले तथा सुंदरता के गुलाम होंगे। आप में काम शक्ति की अधिकता रहेगी। आप धनवान और परिश्रमी होंगे। आप अपनी आयु के लोगों के मुखिया होंगे। धार्मिक होते हुए भी इश्कवाजी की हवस आपमें रहेगी। आपको अपना भवन और उत्तम वाहन का सुख प्राप्त होगा। आपको दूसरे से सलाह लेने पर अच्छा मार्ग दर्शन मिलेगा और आपका भाग्योदय होगा।

यदि आपने स्त्रियों के द्वारा धन कमाना शुरू किया या परस्त्री से अनैतिक संबंध रखे, परिवार में मुखिया बने तो आपका शुक्र मंदा हो सकता है या किसी कारण वश शुक्र मंदा हो गया हो तो शुक्र के मंदे असर से आपको अपने पिता के साथ लड़ाई-झगड़ा करने से धन की हानि और संपत्ति का नाश होगा। 24-25वें वर्ष में आपका विवाह करना शुभ नहीं है। आपके परस्त्री से अनैतिक संबंध रहेंगे तो आपको हानि होगी। आपके धर्महीन होने से भाई से लाभ असंभव है। आपका कामकाज ढीला पड़ेगा। आपके घर के कुछ हिस्से अनिर्मित रहने चाहिए। आपकी पत्नी और धन पर बुरा असर पड़ेगा।

यदि आपको लगता है कि आपको उपरोक्त कष्ट है तो निम्नलिखित परहेज और उपाय करें।

परहेज :

1. चाल-चलन ठीक रखें।
2. नास्तिक न बनें।

उपाय :

1. जौ या सरसों या चरी दान करें।
2. कौवे, कुत्ते और गऊ को भोजन का हिस्सा खिलायें।

शनि

आपकी जन्मकुंडली में शनि पांचवें खाने में पड़ा है। जिसकी वजह से मकान बनवाना संतान के लिए हानिकारक है। यदि मकान बन जाए तो 48 वर्ष तक आपको संतान सुख नहीं होगा या संतान से संबंधित मुसीबत हो सकती है। आपकी संतान मकान बनाये तो लाभ रहेगा। आपका स्वभाव धर्म देवता के समान है और स्वभाव भोले बादशाह के जैसा होगा अर्थात् आप दिखने में भोले-भाले होंगे लेकिन काम करने में चतुर होंगे। आपकी आर्थिक हालात सुधरेगी। अभिमान और अक्ल की बारीकी से अपनी जिंदगी को कामयाब बनाएंगे। आपकी किस्मत अच्छी होगी। आप अपनी मर्जी के मालिक होंगे। आप काम-काज बड़ी सफाई से करेंगे। आपकी प्रबंध व्यवस्था अच्छी होगी। अधिक संतान सुख की संभावना कम है। आप राजकीय सेवा में हैं तो आपको राज्य पक्ष से लाभ होगा। आप तकनीकी कामों से संबद्ध रहेंगे इसलिए आपकी पूछ हर जगह होगी। आपकी तरक्की भी होगी। कोई जमीन से या आकस्मिक धन प्राप्ति के भी योग बनेंगे।

यदि आपने 48 वर्ष से पहले मकान बनाया, भाई-बंधुओं आदि से चोरी-ठगी की, आपके शरीर पर अधिक बाल हुए मांस-मदिरा का सेवन किया तो आपका शनि मंदा हो सकता है या किसी कारण वश शनि मंदा हो गया हो तो शनि के मंदे असर से पेट में खराबी, विद्या में रुकावट, शराब-मछली का सेवन करने से खानदान नष्ट हो जाने का भय होता है। आपको सांप से डंक का भय है। आपकी आर्थिक हालत पर बुरा असर पड़ सकता है। 48 वर्ष की आयु तक पुत्र या मकान दोनों में से एक का सुख मिलेगा। विवाह एक से अधिक होने पर भी संतान सुख नहीं मिलेगा या बच्चा गोद लेना पड़ सकता है।

यदि आपको लगता है कि आपको उपरोक्त कष्ट है तो निम्नलिखित परहेज और उपाय करें।

परहेज :

1. शराब-मांस-मछली का सेवन न करें।
2. 48 वर्ष आयु से पहले मकान न बनावें।

उपाय :

1. सोना-केसर पास रखें।
2. सांप को दूध पिलावें।

राहु

आपकी जन्मकुंडली के पहले खाने में राहु पड़ा है। इसकी वजह से आप धनवान तथा श्रेष्ठ शासनाधिकारी होंगे। अगर सरकारी अधिकारी हुए तो राजदरबार में आपका बहुत सम्मान होगा। आपके ननिहाल वाले आपके जन्म के बाद अमीर होंगे। आपका जन्म ननिहाल या अस्पताल में हुआ होगा या जन्म के समय आकाश पर बादल छाये हुए होंगे, ऐसी आशंका है। 42 वर्ष की

उम्र तक समय मध्यम है जो कुछ भी बुरा हुआ होगा, इसके बाद बहुत अच्छा और शुभ रहेगा। आपका जन्म जिस घर में होगा उस घर के सामने घर में उजाड़ हो जाएगा। आपकी रोजी-रोटी के लिए दूसरा काम भी चालू रहेगा। यदि एक काम या नौकरी छूटेगी तो दूसरी नौकरी या व्यवसाय चालू हो जाएगा। आप धनी होंगे। आपको संतान सुख अच्छी या बुरी अवश्य मिलेगी। आपके लिए हर समय बोलते रहना अच्छी बात नहीं है। आपमें बेईमानी और धोखेबाजी की आदत भी विद्यमान रहेगी। जीवन में कई परिवर्तन आएंगे। माता और मन की शांति के लिए शुभ रहेगा।

यदि आपने विवाह के बाद ससुराल से लोहा, बिजली का समान, काले-नीले कपड़े मुफ्त या दान में लिये, मकान के आंगन में धुआं किया, बिल्ली की जेर, चमड़े के पर्स में रखी तो आपका राहु मंदा हो सकता है या किसी कारण वश राहु मंदा हो गया हो तो राहु के मंदे असर से आपके बनते कामों में रुकावट, तरक्की कम मगर बदला-बदली अधिक बार होगी। 11-21-42 वर्ष आयु में पिता के लिए समय अशुभ, परिवार में किसी को दमा-मिरगी का रोग हो सकता है। आप शरारती, आवारा और नास्तिक स्वभाव के होंगे।

यदि आपको लगता है कि आपको उपरोक्त कष्ट है तो निम्नलिखित परहेज और उपाय करें।

परहेज :

1. आंगन में धुआं न करें।
2. पेट मोटा न हो, विशेष ध्यान रखें।

उपाय :

1. धर्म स्थान में गुड़-गेहूं दान देवें।
2. दूध से स्नान करें।

केतु

आपकी जन्मकुंडली के सातवें खाने में केतु पड़ा है। इसकी वजह से आप 24 वर्ष की उम्र से ही धन कमाने में जुट जाएंगे। जैसे-जैसे आपकी संतान की उम्र बढ़ती जाएगी वैसे-वैसे धन में बढ़ोत्तरी होती जाएगी। आजीविका का साधन बना रहेगा। रोजगार द्वारा अच्छी कमाई होगी। आपकी संतान बलशाली होगी। आप अपनी बात के पक्के होंगे। आप सब तरह से सुखी और संपन्न रहेंगे फिर भी पश्चात्ताप करते ही रहेंगे। आपकी संतान शेर का मुकाबला करने वाली होगी। आपकी पत्नी के जितनी संख्या में भाई-बहन होंगे उतनी ही संख्या में आपकी संतान होगी। 34 वर्ष की आयु तक का समय कष्टमय रहेगा। परंतु इसके बाद सब कुछ ठीक हो जाएगा। धनधान्य में बरकत होगी। 24 साल की उम्र में इतना धन आएगा जो कि आने वाले 40 वर्षों तक के लिए काफी होगा। आपके दुश्मन आपका कुछ भी नहीं बिगाड़ेंगे। दुश्मन अपने आप तबाह हो जाएंगे। जीवन में कभी निराशा का सामना नहीं करना पड़ेगा।

यदि आपने हर समय लिखने का काम किया, झूठा वायदा किया, परस्त्री गमन किया।

अपनी पत्नी से झगड़ा किया तो आपका केतु मंदा हो सकता है या किसी कारण वश केतु मंदा हो गया हो तो केतु के मंदे असर से 7 वर्ष तक ननिहाल की हालत खराब, 34 वर्ष बाद सुख नष्ट होना शुरू हो जाएगा। झूठ बोलना, झूठा वायदा करना आपको अवनति देगा। शरीर में दर्द या बीमारी होगी। आपकी संतान पर भी विपरीत प्रभाव पड़ सकता है। आपका मन स्त्री और पुत्र के संबंध में अशांत रहेगा। आप अपनी जुबान से गंदी बातें बोलेंगे। आप अभिमान के कारण बर्बाद हो जाएंगे। किसी को दिया गया आश्वासन पूरा न करना आपके लिए हानिकारक होगा।

यदि आपको लगता है कि आपको उपरोक्त कष्ट हैं तो निम्नलिखित परहेज और उपाय करें।

परहेज :

1. परस्त्री से अनैतिक संबंध न रखें।
2. कलम से लिखने का अधिक काम न करें।

उपाय :

1. 4 केले 4 दिन जल में प्रवाह करें।
2. 4 नीबू 4 दिन जल में प्रवाह करें।

मांगलिक विचार

जब वर या कन्या की कुंडली में मंगल लग्न, चतुर्थ, सप्तम, अष्टम तथा द्वादश भाव में हो तो मांगलिक दोष कहलाता है। यथोक्तम्

**लग्ने व्यये च पाताले जाभिन्ने चाष्टमे कुजे।
स्त्री भर्तुर्विनाशं च भर्ता च स्त्री विनाशनम्॥**

मांगलिक दोष लग्न से अधिक प्रबल माना जाता है लेकिन चन्द्रमा से इसका दोष लग्न की अपेक्षा अल्प होता है। यदि शास्त्रानुसार वर एवं कन्या का मांगलिक दोष भंग हो जाता है तो उनका दाम्पत्य जीवन सुख एवं प्रसन्नतापूर्वक व्यतीत होता है। इसके विपरीत बिना दोष भंग हुए मांगलिक वर-कन्याओं को जीवन में कई प्रकार की अनावश्यक समस्याओं तथा व्यवधानों का सामना करना पड़ता है। अतः विवाह से पूर्व शुद्ध कुण्डली मिलान से इस दोष का उचित निवारण करके ही दाम्पत्य जीवन प्रारम्भ करना चाहिए जिससे जीवन में शान्ति तथा सम्पन्नता बनी रहे।

आपके जन्म समय में मंगल की स्थिति चन्द्र कुंडली से चतुर्थ भाव में है अतः आप एक मांगलिक पुरुष हैं। लेकिन शास्त्रानुसार आपका मांगलिक दोष भंग हो जाता है इसलिए यह मंगल आपको अशुभ फलों की अपेक्षा शुभ फल ही अधिक मात्रा में प्रदान करेगा इसके शुभ प्रभाव से आपका स्वास्थ्य अच्छा रहेगा साथ ही जीवन में अधिकांश रूप से सुखोपभोग की सामग्री से आप सुसम्पन्न रहेंगे तथा आनन्द पूर्वक इसका उपभोग कर सकेंगे। आपकी पत्नी का स्वास्थ्य भी अच्छा रहेगा जिससे आपका दाम्पत्य जीवन सुख पूर्वक व्यतीत होगा।

ऐसे मंगल के प्रभाव से आपके विवाह में थोड़ा विलम्ब अवश्य हो सकता है परन्तु इससे किसी भी प्रकार की हानि नहीं होगी तथा विवाह सुखद वातावरण में सम्पन्न हो जाएगा। विवाहोपरान्त अपनी पत्नी से आपके मधुर संबंध रहेंगे। साथ ही आपकी पत्नी का शारीरिक स्वास्थ्य भी सामान्यतया अच्छा ही रहेगा जिससे कोई अनावश्यक व्यवधान या समस्या दाम्पत्य जीवन में उत्पन्न नहीं होगी।

चन्द्र कुंडली में चतुर्थ भाव में स्थित मंगल के प्रभाव से आप आवश्यक सुख संसाधनों से युक्त होकर उनका उपभोग करेंगे। साथ ही आप सम्पत्ति या जायदाद को भी प्राप्त करेंगे। सप्तम भाव पर मंगल की दृष्टि से पत्नी का स्वास्थ्य भी अच्छा रहेगा परन्तु स्वभाव में यदा कदा उग्रता का भाव रहेगा। दशम भाव पर मंगल की दृष्टि से आप अपने कार्य में पूर्ण उन्नति करने में सफल रहेंगे। समाज में मान सम्मान, प्रतिष्ठा तथा यश भी अर्जित करेंगे। साथ ही एकादश भाव पर भी मंगल की दृष्टि आपकी आय साधनों में नित्य उन्नति दायक रहेगी। जिसके प्रभाव से आपकी आर्थिक स्थिति सुदृढ़ होगी तथा जीवन में कभी भी धनाभाव नहीं रहेगा। अतः सभी प्रकार से सुख सम्पन्न रहकर आप का जीवन प्रसन्नता पूर्वक व्यतीत होगा।

अपने दाम्पत्य जीवन को अधिक सुखमय बनाने के लिए आपको किसी गैरमांगलिक या किसी ऐसी कन्या से विवाह करना चाहिए जिसका मांगलिक दोष नियमानुसार भंग हो रहा हो। इस प्रकार यदि आप अपने दाम्पत्य जीवन का प्रारम्भ करेंगे तो आप जीवन में भाग्यशाली पुरुष होकर समस्त भौतिक सुख संसाधनों धन वैभव तथा मान सम्मान एवं कीर्ति प्राप्त करने में सफल रहेंगे। साथ ही आपके परस्पर संबंधों में भी प्रगाढ़ता रहेगी जिससे दाम्पत्य जीवन सुखमय रहेगा तथा किसी भी प्रकार अनावश्यक समस्याएं उत्पन्न नहीं होगी जिससे सुखी दाम्पत्य जीवन प्रभावित होता है।

इसके अतिरिक्त इस बात का भी ध्यान रखना चाहिए कि कन्या की चन्द्र कुंडली में मंगल चतुर्थ भाव में ही न हो क्योंकि समान भावों में मंगल स्थित होने से आप सुख संसाधनों को प्राप्त करने में कठिनाई का अनुभव करेंगे जिससे मानसिक तनाव उत्पन्न होगा फलतः इससे आपका सुखी दाम्पत्य जीवन प्रभावित होगा। अन्य भावों में मंगल रहने से उसका प्रभाव शुभ रहेगा जिससे जीवन में अनावश्यक कष्ट तथा परेशानी नहीं उठानी पड़ेगी। इससे आपका दाम्पत्य जीवन शान्त तथा सुखी रहेगा एवं प्रसन्नता पूर्वक आप अपना सांसारिक, सामाजिक तथा परिवारिक जीवन व्यतीत करने में सफल रहेंगे। अतः सोच विचार कर एवं सावधानी पूर्वक निर्णय करके ही दाम्पत्य जीवन प्रारम्भ करना चाहिए।

पितृदोष विचार

पितृदोष क्या है ?

हमारे पूर्वज या परिवार के सदस्य मृत्योपरांत पितृ संज्ञा प्राप्त करते हैं। पितृ हमारे और भगवान के बीच की कड़ी होते हैं। यदि ये प्रसन्न होते हैं तो जातक सुखी जीवन भोगता है, लेकिन यदि किसी कारणवश ये अप्रसन्न हो जाते हैं तो जातक को अनेक प्रकार की व्याधियाँ व कष्ट झेलने पड़ते हैं।

कालांतर में पितृ या तो मोक्ष को प्राप्त करते हैं, या पृथ्वी लोक पर पुनः जन्म ले लेते हैं। यदि परिवार के सभी पितरों का पुनर्जन्म या मोक्ष हो गया हो तो कुछ समय के लिए उस परिवार के कोई पितृ नहीं होते। ऐसे में जातक सुख दुख अपनी कुंडली अनुसार प्राप्त करता है। अतः परिवार के सदस्यों को चाहिए कि जब तक वे पितृ लोक में हैं तब तक तर्पणादि से उनकी सेवा करें। यदि पितृ प्रसन्न रहते हैं तो आशीर्वाद स्वरूप जातक चहुमुखी प्रगति प्राप्त करता है।

पितृ अप्रसन्न, दुःखी एवं अतृप्त होते हैं यदि किसी पूर्वज की अंतिम इच्छा पूर्ण न हुई हो, या किसी के द्वारा श्रापित हों या असामयिक मृत्यु हो गई हो। पितृ योनि में रहते हुए भी उन्हें भोजन की आवश्यकता होती है। यदि परिवार के सदस्य तर्पणादि द्वारा भोजन नहीं देते हैं तो वे भूख से व्याकुल हो जाते हैं। पितृ विभिन्न प्रकार के कष्टों की अनुभूति करते हैं जब तक कि जातक पितरों की शांति हेतु पूजन—पाठ, पिंडदान, तर्पण आदि न करे।

पितृ दोष अपने कर्मों के कारण न हो करके, अपने माता—पिता या पूर्वजों के कर्मों के कारण होते हैं, क्योंकि यह दोष तो जातक के जन्म से जन्मपत्री में विद्यमान होता है जबकि कर्म तो जन्म के बाद ही बनते हैं। अतः पितृदोष ऐसा दोष है जिसका कोई कारण समझ में नहीं आता, केवल लक्षण दर्शित होते हैं। जन्मपत्री में भी शुभ दशा व गोचर के योग होते हुए भी हमें हमारे कर्मों का फल प्राप्त नहीं होता, या घर में सदैव कलह, अशांति, धन की कमी व बीमारी लगी रहती है। संतान नहीं होती या संतान विक्षिप्त होती है, बच्चों के विवाह में अड़चन आती है या उनके विकास में अवरोध आते हैं। अतः जब भी किसी प्रकार की समस्या बार—बार आती है एवं कोई कारण नजर न आता हो तो हमें पितृ दोष की शांति करवानी चाहिए जब तक कि वातावरण और परिस्थितियाँ अनुकूल न हो जाएं।

पितृदोष लक्षण

1. परिवार में आकस्मिक मृत्यु या दुर्घटना होना।
2. आनुवांशिक बीमारी होना और लंबी अवधि तक बीमारी का चलना।
3. परिवार में शारीरिक रूप से विकलांग या अनचाहे बच्चे का जन्म होना।
4. परिवार में बच्चों द्वारा असम्मान या प्रताड़ना का व्यवहार करना।
5. गर्भ धारण न होना या गर्भपात होना।

6. परिवार के किसी सदस्य का विवाह न होना।
7. परिवार में किसी बात को लेकर झगड़ा-फसाद होना।
8. कभी खत्म न होने वाली गरीबी परिवार में हो जाना।
9. बुरी आदतों की लत लग जाना।
10. परिवार में बार-बार केवल कन्या संतान का जन्म होना।
11. शिक्षा में बाधाएं आना।
12. स्वप्न में सांप दिखाई देना।
13. माथे पर गंदी करतूतों का कलंक लगना।
14. परिवार में किसी बुजुर्ग के बाल सफेद होने के पश्चात पीले होने लगना या काली खांसी होना।
15. परिवार के किसी सदस्य को स्वप्न में पूर्वज द्वारा खाना या कपड़े मांगते हुए दिखना।

पितृ की पहचान :

1. श्रीमद् भगवद् गीता के ग्यारहवें अध्याय का पाठ करें तो आपको कुछ दिनों में ही स्वप्न में पितृ दर्शन होंगे।
2. रात को सोने से पहले हाथ पैर धोकर अपने मन में अपने पितृ से प्रार्थना करें कि जो भी मेरे पितृ हैं वे मुझे दर्शन दें।
3. यदि आपका कोई कार्य अटक रहा है तो अपने पितृ को याद कीजिए और उन्हें कहें कि यदि आप हैं तो मेरा अमुक कार्य हो जाए। मैं आपके लिए शांति पाठ कराऊंगा। आपकी ऐसी प्रार्थना से कार्य सिद्धि हो जाने पर यह प्रमाणित हो जाएगा कि आपको पितृ शांति करवानी चाहिए।

पितृ दोष उपाय :

1. श्राद्ध पक्ष में मृत्यु तिथि के दिन तर्पण व पिंडदान करें। ब्राह्मण को भोजन कराएं व वस्त्र/दक्षिणा आदि दें।
2. यदि मृत्युतिथि न मालूम हो तो श्राद्ध पक्ष की अमावस्या के दिन तर्पण व पिंडदानादि कर्म करें।
3. प्रत्येक अमावस्या विशेषतः सोमवती अमावस्या को पितृभोग दें। इस दिन गोबर के कंडे जलाकर उसपर खीर की आहुति दें। जल के छींटे देकर हाथ जोड़ें व पितृ को नमस्कार करें।
4. सूर्योदय के समय सूर्य को जल दें व गायत्री मंत्र का जप करें।
5. पीपल के पेड़ पर जल, पुष्प, दूध, गंगाजल व काले तिल चढ़ाकर पितृ को याद करें, माफी और आशीष मांगें।
6. रविवार के दिन गाय को गुड़ या गेहूं खिलाएं।
7. लाल किताब के अनुसार परिवार में जहां तक खून का रिश्ता है जैसे दादा, दादी, माता, पिता, चाचा, ताया, बहन, बेटी, बुआ, भाई सबसे बराबर-बराबर धन, 1, 5 या दस रुपए लेकर मंदिर में दान करने से पितृ ऋण से मुक्ति मिलती है।
8. हरिवंश पुराण का श्रवण और गायत्री जप पितृ शांति के लिए लोकप्रसिद्ध है।

9. गया या त्र्यंबकेश्वर में त्रिपिंडी श्राद्ध या नन्दी श्राद्ध करें।
10. नारायणबलि पूजा करवाएं।
11. पितृ गायत्री का अनुष्ठान करवाएं —

**ॐ देवताभ्यः पितृभ्यश्च महायोगिभ्येव च ।
नमः स्वाहायै स्वधायैः नित्यमेव नमो नमः ॥**

12. पितृ दोष निवारण उपायों में गया में पिंडदान, गया श्राद्ध तथा पितृ भोग अर्पण आदि क्रियाएं करते हुए उपरोक्त पितृ गायत्री मंत्र का उच्चारण करना चाहिए।
13. श्री कृष्ण मुखामृत गीता का पाठ करें।

पितृ पूजा के लिए आवश्यक निर्देश :

1. पितरों को मांस वाला भोजन न अर्पित करें।
2. पूजा के दिन स्वयं भी मांस भक्षण न करें।
3. पितृ पूजा में स्टील, लोहा, प्लास्टिक, शीशे के बर्तन का प्रयोग न करें। मिट्टी या पत्तों के बर्तनों का ही प्रयोग करें।
4. पितृ पूजा में घंटी न बजाएं।
5. पितृ पूजा करने वाले व्यक्ति की पूजा में व्यवधान न डालें।
6. बुजुर्गों का सम्मान करें।
7. पितरों के निमित्त किये जाने वाले गौ-दान से पितृ तृप्त होते हैं।
8. घर में पीने का पानी रखा जाता है उस स्थान पर विशेष पवित्रता रखें। यह स्थान पितृओं का स्थान माना जाता है।
9. पितृ कर्म हेतु साल में 12 मृत्यु तिथि, 12 अमावस्या, 12 पूर्णिमा, 12 संक्रांति, 12 वैधृति योग, 24 एकादशी व श्राद्ध के 15 दिन मिलाकर कुल 99 दिन होते हैं।

आपकी कुण्डली में पितृदोष

- पंचम भाव में शनि स्थित है एवं राहु से दृष्ट है।
- पंचम भाव का स्वामी शनि है तथा उस पर राहु का प्रभाव है।
- त्रिक भाव का स्वामी लग्न में स्थित है और उस पर राहु का प्रभाव है।

आपकी कुण्डली में शनि के कारण पितृदोष है।

आपकी कुण्डली में शनि पितृदोष कारक ग्रह है अतः परिवार के किसी पुरुष सदस्य द्वारा दलित पर किये गये पापकर्म आपके पितृदोष का कारण है। इस दोष के निवारणार्थ भगवान रुद्र की पूजा करें। पीपल को जल चढ़ायें व पूजा करें। शम्मी की समिधा से हवन करें। बकरी व शनि प्रीतकारी वस्तुओं का दान करें। गरीब या जरूरतमंदों की सहायता के रूप में दान दें तथा कौए को खाने का पहला ग्रास खिलायें।

आपकी कुंडली में पितृदोष का योग है परंतु यदि आपको अपने जीवन में उपरोक्त वर्णित पितृदोष लक्षण में से किसी प्रकार का कष्ट या परेशानी की अनुभूति नहीं हो रही है तो आपको पितृदोष संबंधी उपाय करने की आवश्यकता नहीं है। संभव है कि किसी शुभकार्य के कारण आपके पितृ प्रसन्न हो गए हों व आपको उनकी कृपा प्राप्त हो रही हो या वे मोक्ष को प्राप्त हो गए हों।

नोट :

त्रिपिण्डी श्राद्ध एवं नारायण नाग बली पितृदोष के लिए मुख्य उपाय हैं। यह स्रयंबकेश्वर में विशेष रूप से कराये जाते हैं। त्रिपिण्डी श्राद्ध में आटे को पानी में माढ़ कर पुतले के रूप में पूर्वजों के प्रतीकात्मक पिंड बना लिये जाते हैं, उन पर मंत्रों का पाठ किया जाता है। अंत में अस्थि विसर्जन के समान उनको जल में प्रवाह कर दिया जाता है।

नारायण नागबलि, पूर्वजों के मोक्ष व उनकी इच्छा पूर्ति के लिए कराया जाता है। इसमें दो दिन श्मशान क्रिया होती है व तीसरे दिन मांगलिक पूजा की जाती है। यदि पितृदोष के कारण संतान बाधा या विवाह बाधा आदि होती है तो इस उपाय के पश्चात जातक बाधामुक्त हो जाता है और काम स्वतः बनने लगते हैं।

कालसर्प योग

अग्रे राहुरधः केतुः सर्वे मध्यगताः ग्रहाः ।
योगाऽयं कालसर्पाख्यो शीघ्रं तं तु विनाशय ॥

आगे राहु हो एवं नीचे केतु मध्य में सभी (सातों) ग्रह विद्यमान हो तो कालसर्प योग बनता है। द्वादश भावों में राहु की स्थिति के अनुसार काल सर्प योग मुख्यतः द्वादश प्रकार के होते हैं। वे हैं—

1. अनंत, 2. कुलिक, 3. वासुकि, 4. शङ्खपाल, 5. पद्म, 6. महापद्म, 7. तक्षक, 8. कर्कोटक, 9. शङ्खचूड, 10. घातक, 11. विषधर, 12. शेषनाग ।

यह योग उदित अनुदित भेद से दो प्रकार के होते हैं राहु के मुख में सभी सातों ग्रह ग्रसित हो जाएं तो उदित गोलार्द्ध नामक योग बनता है एवं राहु की पृष्ठ में यदि सभी ग्रह हों तो अनुदितन गोलार्द्ध नामक योग बनता है।

इस योग में उत्पन्न जातक को मानसिक अशांति, धनप्राप्ति में बाधा, संतान अवरोध एवं गृहस्थी में प्रतिपल कलह के रूप में प्रकट होता है। प्रायः जातक को बुरे स्वप्न आते हैं । कुछ न कुछ अशुभ होने की आशंका मन में बनी रहती है। जातक को अपनी क्षमता एवं कार्यकुशलता का पूर्ण फल प्राप्त नहीं होता है, कार्य अक्सर देर से सफल होते हैं। अचानक नुकसान एवं प्रतिष्ठा की क्षति इस योग के लक्षण हैं।

जातक के शरीर में वात पित्त त्रिदोषजन्य असाध्य रोग अकारण उत्पन्न होते हैं। ऐसे रोग जो प्रतिदिन क्लेश (पीडा) देते हैं तथा औषधि लेने पर भी ठीक नहीं होते हों, काल सर्प योग के कारण होते हैं। काल सर्प योग के उपाय इन कष्टों से राहत के लिये आवश्यक हो जाते हैं।

जातक पर काल सर्प योग का प्रभाव

आपकी जन्मपत्रिका में काल सर्प योग विद्यमान नहीं है। अतः आपको इस योग के लिए शांति आदि की आवश्यकता नहीं है एवं आप पूर्ण रूप से सुखी जीवन व्यतीत कर सकेंगे।

साढ़ेसाती विचार

चंद्रमा से जन्म कुंडली में जब गोचरवश शनि की स्थिति द्वादश, प्रथम एवं द्वितीय स्थान में होती है तो साढ़ेसाती कहलाती है। शनि की चंद्रमा से चतुर्थ एवं अष्टम भाव में स्थिति होने पर ढैया शारीरिक, मानसिक या आर्थिक कष्ट देता है । लेकिन कई बार यह आश्चर्यजनक उन्नति भी प्रदान करती है । साढ़ेसाती का प्रभाव सात वर्ष एवं ढैया का प्रभाव ढाई वर्ष रहता है ।

सामान्यतया साढ़ेसाती मनुष्य के जीवन में तीन बार आती है । प्रथम बचपन में द्वितीय युवावस्था में तथा तृतीय वृद्धावस्था में आती है । प्रथम साढ़ेसाती का प्रभाव शिक्षा एवं माता—पिता पर पड़ता है । द्वितीय साढ़ेसाती का प्रभाव कार्यक्षेत्र, आर्थिक स्थिति एवं परिवार पर पड़ता है परंतु तृतीय साढ़ेसाती स्वास्थ्य पर अधिक प्रभाव करती है ।

निम्नलिखित तालिका में साढ़ेसाती का समय तथा प्रत्येक ढैया का शुभाशुभ फल इंगित किया गया है ।

प्रथम चक्र:

अष्टम स्थानस्थ ढैया	20/10/1995-16/04/1998
साढेसाती प्रथम ढैया	05/09/2004-01/11/2006
साढेसाती द्वितीय ढैया	01/11/2006-09/09/2009
साढेसाती तृतीय ढैया	09/09/2009-15/11/2011
चतुर्थ स्थानस्थ ढैया	02/11/2014-19/01/2017

द्वितीय चक्र:

अष्टम स्थानस्थ ढैया	24/03/2025-26/10/2027
साढेसाती प्रथम ढैया	06/07/2034-20/08/2036
साढेसाती द्वितीय ढैया	20/08/2036-29/06/2039
साढेसाती तृतीय ढैया	29/06/2039-06/03/2041
चतुर्थ स्थानस्थ ढैया	02/12/2043-29/11/2046

तृतीय चक्र:

अष्टम स्थानस्थ ढैया	09/09/2054-01/04/2057
साढेसाती प्रथम ढैया	15/02/2064-03/10/2065
साढेसाती द्वितीय ढैया	03/10/2065-21/08/2068
साढेसाती तृतीय ढैया	21/08/2068-25/10/2070
चतुर्थ स्थानस्थ ढैया	20/04/2073-04/08/2076

शनि का ढैया फल

ढैया के प्रकार	फल	क्षेत्र
अष्टम स्थानस्थ ढैया	सम	शत्रु व रोग
साढेसाती प्रथम ढैया	अशुभ	व्यावसायिक परेशानी
साढेसाती द्वितीय ढैया	अशुभ	अल्प बचत
साढेसाती तृतीय ढैया	सम	कम खर्च
चतुर्थ स्थानस्थ ढैया	अशुभ	धन

साढ़ेसाती के उपाय

शनि की साढ़ेसाती के अशुभ प्रभावों को कम करने के लिये दान, पूजन, व्रत, मंत्र आदि उपाय किये जा सकते हैं। इसके लिये शनिवार को काला कंबल, उड़द की दाल, काले तिल, चर्म-पादुका, काला कपड़ा, मोटा अनाज, तिल तथा लोहे का दान करना चाहिये। शनिदेव की पूजा एवं शनिवार का व्रत रखना चाहिये। उपवास के दिन उड़द की दाल से बनी वस्तु, चने, बेसन, काले तिल, काला नमक तथा फलों का ही सेवन करना चाहिये। साथ ही स्वयं या किसी योग्य पंडित के द्वारा शनि के निम्न मंत्र के 19000 जप संपन्न करवाने चाहिये।

ॐ प्रां प्रीं प्रौं सः शनैश्चराय नमः ॥

शनि की साढ़ेसाती में शारीरिक, मानसिक, पारिवारिक शांति एवं समृद्धि, आर्थिक सुदृढ़ता तथा कार्यक्षेत्र में उन्नति के लिये निम्नलिखित महामृत्युंजय मंत्र के 125000 जप स्वयं या किसी योग्य पंडित के द्वारा करवाने चाहिये।

**ॐ त्र्यंबकम यजामहे सुगन्धिं पुष्टिवर्धनम् ।
उर्वारुकमिव बन्धनान्मृत्योर्मुक्षीय मामृतात् ॥**

वैकल्पिक रूप से निम्नलिखित मंत्र के प्रतिदिन 108 जप किये जा सकते हैं।

ॐ हों जूं सः ॐ भूर्भुव स्वः ॐ ॥

शनि की साढ़ेसाती के शुभत्व को बढ़ाने के लिये शनिवार के दिन आप 5 1/4 रत्ती का नीलम रत्न पंचधातु में (सोना, चांदी, तांबा, लोखंड, जस्ता) या घोड़े की नाल या नाव की कील से निर्मित लोहे की अंगूठी धारण करें। लोहे की अंगूठी आप दाएं हाथ की मध्यमा अंगुली में धारण करें।

अंगूठी शुक्ल पक्ष की शनिवार की सायं सूर्यास्त के समय धारण करें। पुष्य, अनुराधा या उत्तरा भाद्रपद नक्षत्र अति शुभ हैं। उस दिन शनिवार का उपवास भी करना चाहिए। अंगूठी धारण करने से पूर्व इसे शुद्ध दूध एवं गंगाजल में स्नान

कराना चाहिए तथा धूप आदि जलाकर शनि का पूजन करना चाहिए एवं निम्न मंत्र की एक माला या 108 बार जप करना चाहिए। नीलम मध्यमा उंगली में या गले में पेन्डन्ट बनाकर धारण करें ।

ॐ शं शनैश्चराय नमः ।

अंगूठी धारण करने के पश्चात शनि की वस्तुओं का दान देना चाहिए। इससे शनि के अशुभ प्रभाव में कमी आयेगी तथा आपकी सुख शांति एवं समृद्धि में वृद्धि होगी।

श्री हनुमान चालीसा एवं श्री हनुमान अष्टक का पाठ करना श्रेष्ठ है ।

विस्तृत रत्न विचार

औषधि मणि मंत्राणां, ग्रह-नक्षत्र तारिका ।
भाग्यकाले भवेत्सिद्धिः अभाग्यं निष्फलं भवेत् ॥

औषधि, मणि एवं मंत्र ग्रह नक्षत्र जनित रोगों को दूर करते हैं। यदि समय सही है तो इनसे उपयुक्त फल प्राप्त होते हैं। विपरीत समय में ये सभी निष्फल हो जाते हैं।

रत्न शरीर की शोभा बढ़ाने के साथ साथ अपनी चमत्कारिक शक्ति द्वारा ग्रहों के विपरीत प्रभावों को कम करके ग्रह बल को बढ़ाते हैं। रत्न हमारे शरीर में ग्रहों से आ रही किरणों का प्रवाह बढ़ाते हैं। अतः जो ग्रह आपकी कुण्डली में शुभ हो लेकिन निर्बल हो उनका रत्न पहनने से ग्रह की निर्बलता दूर होती है। यही कारण है कि अशुभ ग्रहों के रत्न सर्वदा त्याज्य है।

रत्न जितना साफ व सही कटाव का होगा उतना ही अधिक रश्मियों को एकत्रित करने में सक्षम होता है। अतः अच्छी गुणवत्ता के रत्न ही पूर्णतः फल देने में समर्थ होते हैं। रत्न का वजन व शरीर का वजन ग्रह की निर्बलता के अनुपात में होना चाहिए। यदि ग्रह बहुत कमजोर है तो अधिक वजन का रत्न पहनना चाहिए। हीरे को छोड़कर रत्न शरीर से छुना अति आवश्यक हैं। अंगूली में व विशेष धातु में पहनने से रत्न का प्रभाव अधिकतम होता है।

यदि किसी कारणवश रत्न उतारना है तो रत्न के वार के दिन ही उतारकर श्रद्धापूर्वक गंगाजल में धोकर सुरक्षित स्थान पर रखना चाहिए। यदि रत्न खो जाए या चोरी हो जाए तो यह समझना चाहिए कि ग्रह दोष खत्म हो गया है। यदि रत्न का रंग फिका पड़ जाए तो यह समझना चाहिए कि ग्रह का अशुभ प्रभाव शांत हुआ समझना चाहिए। यदि रत्न में दरार पड़ जाए तो यह समझना चाहिए कि ग्रह प्रभावशाली है तब ग्रह की शांति कराए तथा दूसरा रत्न बनवाकर पुनः पहनें।

कुंडली में जो ग्रह अशुभ हो उनके लिए रुद्राक्ष धारण, मंत्र, दान, जल, विसर्जन एवं व्रत आदि उपायों से ग्रहों की अशुभता को दूर किया जा सकता है। यदि आप किसी कारणवश रत्न धारण करने में असमर्थ हैं तो आप इन रत्नों के रुद्राक्ष या उपरत्न धारण कर ग्रह शुभता प्राप्त कर सकते हैं अन्यथा मंत्र जाप। दान या व्रत आदि से भी ग्रहों का बलाबल बढ़ा सकते हैं।

किसी भी कुंडली के लिए लग्नेश जीवन रत्न होता है और इसके धारण करने से स्वास्थ्य लाभ व व्यक्तित्व विकास व मान-सम्मान प्राप्त होता है। नवमेश का रत्न भाग्य रत्न कहलाता है। इसके धारण करने से भाग्य की बढ़ोतरी होती है। साथ ही यह रत्न मान-प्रतिष्ठा भी बढ़ाता है। योगकारक या पंचमेश ग्रह का रत्न। कारक रत्न कहलाता है। इसके धारण करने से कार्य में प्रगति। धन लाभ व चौमुखी विकास प्राप्त होता है। आपको कौन सा रत्न पहनना चाहिए व कौन सा नहीं इसके लाभ/हानि की जानकारी विस्तृत रूप में नीचे दी जा रही है।

शुभरत्न धातु एवं रंग धारण करने से शारीरिक एवं मानसिक स्वस्थता बनी रहती है तथा भाग्य रत्न धारण करने से सौभाग्य में वृद्धि होती है। शुभ समय में कोई भी कार्य प्रारम्भ करने से उसमें इच्छित सफलता की प्राप्ति होती है। साथ ही इष्टदेव का ध्यान एवं जप से मानसिक शान्ति तथा सफलता मिलती है। शुभ पदार्थ अन्न। द्रव्य आदि का दान या व्यापार शुभ दिशा में करने से वांछित लाभ प्राप्त होता है। इस प्रकार शुभाशुभज्ञान सिद्ध हो सकता है।

आपकी कुंडली और रत्न

आपके लिए नीलम, हीरा व गोमेद रत्न धारण करना अति शुभ फलदायक है। इन्हें आप सर्वदा धारण करेंगे तो आपके जीवन का चहुंमुखी विकास होगा। धन लाभ व व्यावसायिक उन्नति होगी।

हीरा आपका जीवन रत्न है इसको धारण करने से आपका स्वास्थ्य उत्तम रहेगा। आपके आत्मविश्वास में वृद्धि होगी। मान-प्रतिष्ठा में वृद्धि होगी। कार्य क्षेत्र में प्रगति होगी।

नीलम व गोमेद रत्न आपके कारक रत्न हैं। कारक रत्न के धारण करने से व्यावसायिक उन्नति प्राप्त होती है। धन लाभ होता है। सुख सम्पत्ति की प्राप्ति होती है। जीवन में नयी ऊर्जा का प्रवाह होता है।

अतः उपरोक्त रत्न आप अवश्य धारण करें। सभी रत्न जीवन पर्यन्त धारण करने से ग्रहों की विशेष शुभता प्राप्त होगी और जीवन सुखमय होकर गतिमान होगा। उपरोक्त रत्न आप बिना किसी दशा या गोचर विचार के धारण कर सकते हैं क्योंकि सभी रत्न अति शुभफलदायी हैं।

आपके लिए मोती, लहसुनिया, पन्ना, मूंगा, माणिक्य एवं पुखराज रत्न शुभ हैं लेकिन ये रत्न दशानुसार शुभाशुभ फल देने में सक्षम हैं। अतः इन्हें आप स्वदशा या मित्र दशा में धारण करेंगे तो ये शुभ फल देंगे। शत्रु दशा में इनको नहीं पहनना ही बेहतर होगा। उस समय इन ग्रहों के उपाय आप रुद्राक्ष पहन कर या दान, मंत्र जाप आदि से करना श्रेष्ठ होगा।

विभिन्न रत्न आपके लिए किस प्रकार से फलदायी रहेंगे एवं उनकी धारण विधि का विस्तृत विवरण निम्न प्रकार से है :-

नीलम

आपकी कुंडली में शनि पंचम भाव में स्थित है। शनि रत्न नीलम आपके लिए शुभ फलदायी रहेगा। नीलम रत्न अद्भुत और अचूक प्रभावशाली रत्न है। इस रत्न को धारण करने से आप परिश्रमी, भ्रमणशील, प्रसन्न और सुखी रखेगा। रत्न शुभता से आप दीर्घायु होंगे। आपको अपने शत्रुओं पर विजय प्राप्त होगी। नीलम रत्न आपके शैक्षिक व्यवधानों को दूर करेगा। धर्म क्रियाओं की ओर उन्मुख होंगे। आपकी धन संपत्ति में बढ़ोतरी होगी। धीरे धीरे आपकी प्रसिद्धि का विस्तार होगा। रत्न प्रभाव से आपके व्यवहार में मधुरता आयेगी।

आपकी तुला लग्न की कुंडली में शनि चतुर्थेश एवं पंचमेश है। शनि का रत्न नीलम आपके लिए विशेष रूप से शुभ रत्न है। आप इसे धारण कर शनि की शुभता प्राप्त कर सकते हैं। नीलम रत्न आपको पौराणिक विषयों से शिक्षा प्राप्ति के अवसर दे सकता है। यह रत्न आपके संतान स्वास्थ्य को प्रबल कर अनुकूल बनाए रखेगा। नीलम रत्न शुभता से आपके अपनी संतान से संबंध मजबूत हो सकते हैं। ज्ञान प्राप्ति के लिए यह रत्न आपको सवीत्तम फल प्रदान कर सकता है। रत्न प्रभाव से कुटुंब में वृद्धि, भूमि-भवन के मामलों में शुभ परिणाम प्राप्त हो सकते हैं।

नीलम रत्न शनिवार के दिन पंचधातु से निर्मित अंगूठी में जड़वाकर, संध्या काल में स्नानादि कर शुद्ध होकर अंगूठी को पंचामृत से स्नान कराकर, धूप, दीप एवं फूल से पूजन करने के बाद इस अंगूठी को मध्यमा अंगूठी में धारण करें। तत्पश्चात शनि मंत्र ॐ शं शनैश्चराय नमः का जाप एक माला करें। मंत्र जप के बाद इस ग्रह की वस्तुएं जैसे— उड़द, काले तिल, तेल, काले वस्त्र आदि का दान किसी योग्य व्यक्ति को करें। नीलम रत्न कम से कम 3 रत्ती, अन्यथा 5-6 रत्ती का होना चाहिए।

नीलम रत्न के साथ माणिक्य, मूंगा, पुखराज धारण करने से बचना चाहिए। विशेष स्थितियों में इस रत्न को लॉकेट/ माला/ ब्रेसलेट या दूसरे हाथ में भी धारण किया जा सकता है। किसी कारणवश यदि इस रत्न को धारण न कर पाएं तो इसके उपरत्न फिरोजा, नीली, एमेथिस्ट एवं ७ मुखी रुद्राक्ष भी धारण कर सकते हैं।

हीरा

आपकी कुंडली में शुक्र लग्न भाव में स्थित है। आपको शुक्र रत्न हीरा धारण करना चाहिए। यह रत्न प्रेम, आकर्षण एवं विपरीत लिंग विषयों में सफलता देगा। हीरा रत्न से धन संचय करना आपके लिए सहज होगा। शुक्र लग्न भाव से सप्तम भाव को प्रभावित कर रहे हैं। इसलिए शुक्र रत्न हीरा धारण कर आप वैवाहिक जीवन को अनुकूल बनाये रख सकते हैं। यह हीरा रत्न पारिवारिक सुख-समृद्धि, स्वतंत्र व्यापार में लाभदायक सिद्ध होगा। नियमानुसार धारण किया गया हीरा आपको सुख, ऐश्वर्य, सम्मान, वैभव, विलासिता आदि दे सकता है।

आपकी तुला लग्न की कुंडली में शुक्र लग्नेश एवं अष्टमेश है। शुक्र रत्न हीरा धारण करना आपके लिए शुभ रहेगा। स्वास्थ्य को अनुकूल रखने के लिए भी आप हीरा रत्न धारण कर सकते हैं। शुक्र रत्न हीरा आपके शरीर, आयु, मस्तिष्क, आपका स्वभाव और संपूर्ण व्यक्तित्व को प्रभावशाली बनाये रखने में सहयोगी हो सकता है। हीरा अष्टमेश का भी रत्न होने के कारण आपको मानसिक चिंताओं से बचाएगा, दुर्भाग्य का नाश, ससुराल से मधुर संबंध, अस्पताल आदि विषयों में राहत दे सकता है। अपने स्वास्थ्य और आयुवृद्धि के लिए आप हीरा रत्न धारण कर सकते हैं।

हीरा रत्न सोने धातु की अंगूठी में जड़वाकर, शुक्रवार के दिन सूर्य उदय के पश्चात स्नानादि क्रियाओं से शुद्ध होकर रत्न को रत्न जड़ित अंगूठी को दूध, जल, शक्कर, दही और शहद से मिलकर बने पंचामृत में डूबोकर शुद्ध कर, अपने देव स्थान पर रखकर शुक्रदेव और रत्न

को धूप, दीप एवं फूल दिखाकर अनामिका अंगूली में धारण करें। हीरा रत्न धारण करते समय शुक्र मंत्र ॐ शं शुक्राय नमः का १०८ बार मंत्र जाप करना चाहिए। मंत्र जाप करने के बाद शुक्र ग्रह की वस्तुएं जैसे— चावल, चांदी, घी, श्वेत वस्त्र आदि वस्तुओं का दान करें। हीरा 1 रत्ती से अधिक वजन का धारण करना चाहिए। यह छोटे टुकड़ों में भी पहना जा सकता है।

हीरा रत्न के साथ माणिक्य, मूंगा एवं पुखराज रत्न धारण करना सर्वदा वर्जित है। अंगूठी रूप रत्न धारण न कर पाने की स्थिति में इसे लॉकेट/ माला/ ब्रेसलेट या दूसरे हाथ में भी धारण कर सकते हैं। हीरा रत्न के स्थान पर इस रत्न के उपरत्न ओपल, जर्कन, स्फटिक एवं ६ मुखी रुद्राक्ष धारण किया जा सकता है।

गोमेद

आपकी कुंडली में राहु लग्न भाव में स्थित है। अतः आपको राहु रत्न गोमेद धारण करना चाहिए। राहु रत्न गोमेद आपको मनस्वी एवं साहसी बनाएगा तथा रत्न आपके चातुर्य योग्यता को बढ़ायेगा। रत्न के शुभ प्रभाव से आपको विवाद में विजय, अध्ययनशीलता एवं कार्यकुशलता कौशल की प्राप्त होगी। लग्न भाव से राहु सप्तम को देख रहे हैं जिसके कारण गोमेद रत्न धारण करने से आपका वैवाहिक जीवन सुखमय हो सकता है। इस रत्न को धारण करने से आप भ्रम मुक्त जीवन का आनंद लेंगे।

राहु तुला राशि में स्थित है व इसका स्वामी शुक्र प्रथम भाव में स्थित है। अतः गोमेद धारण करने से आप शत्रुओं के बल को नष्ट कर उन पर विजय प्राप्त करेंगे। यह रत्न आपको अत्यन्त साहसी और विपुल पराक्रमी बनाएगा तथा रत्न शुभता आपको अपने कुल में मुख्य प्रतापी बनाएगी। आप भूमि का संचय करेंगे। स्वास्थ्य सुख को यह रत्न बेहतर करेगा। जीवन में सफलता प्राप्ति के लिए आपके द्वारा गलत तरीकों का प्रयोग हो सकता है। यह रत्न आपको दृढ़-निश्चयी एवं अधिक बोलने वाला बनाएगा। रत्न शुभता आपकी चातुर्य शक्ति को बढ़ा रही है। इसे धारण करने पर आपका दांपत्य जीवन सुखद होगा।

गोमेद रत्न अष्टधातु से निर्मित अंगूठी को शनिवार के दिन सूर्यास्त काल में सभी प्रकार से स्वयं शुद्ध होकर रत्न जड़ित अंगूठी को दूध, जल, शक्कर, दही और शहद से स्नान करायें। इसके बाद रत्न का धूप, दीप और फूल से पूजन कर मध्यमा अंगूली में धारण करें। रत्न धारण के पश्चात राहु मंत्र ॐ रां राहवे नमः का १०८ बार जाप करें और फिर इस ग्रह की वस्तुएं जैसे— तिल, तेल, कंबल, नीले वस्त्र आदि का दान करें। गोमेद रत्न का वजन कम से कम 4 रत्ती और अधिकतम 8-10 रत्ती होना चाहिए।

गोमेद रत्न धारण करने के बाद इस रत्न के साथ माणिक्य, मोती एवं मूंगा रत्न धारण करने से बचना चाहिए। अंगूठी रूप में इस रत्न को धारण न कर पाने की स्थिति में इस रत्न को लॉकेट/ माला/ ब्रेसलेट या दूसरे हाथ में भी पहना जा सकता है। विशेष परिस्थितियों में रत्न के स्थान पर इसके उपरत्न गोमेद या ८ मुखी रुद्राक्ष को भी धारण करना श्रेष्ठकर रहता है।

मोती

आपकी कुंडली में चंद्र एकादश भाव में स्थित है। आपको चंद्र रत्न मोती धारण करना चाहिए। मोती रत्न की शुभता से आपको विदेश जाना पसंद होगा। आपको महंगे वाहनों का सुख प्राप्त होगा। इसके अतिरिक्त आपके पास पर्याप्त मात्रा में धन-संपत्ति होगी। रत्न शुभता से समाज में आपकी मान-प्रतिष्ठा की वृद्धि होगी। मोती रत्न के प्रभाव से आपको सरकारी मामलों की विधिवत जानकारी होगी। मोती रत्न आपको सरकार की ओर से सम्मान और पद प्रतिष्ठा दे सकता है। रत्न शुभता से आप मिलनसार बनेंगे। व्यापार के माध्यम से आपको मनोकूल लाभ होगा।

आपकी तुला लग्न की कुंडली में चंद्र दशम भाव के स्वामी है। चंद्र आपके लिए शुभ ग्रह है। चंद्र का मोती रत्न धारण करने से आपको कर्म क्षेत्र में अपनी योग्यता दिखाने के अवसर देगा। रत्न शुभता से आपके स्वास्थ्य में अनुकूलता आ सकती है। आजीविका क्षेत्र से जुड़ी मानसिक चिंताओं का समाधान भी यह रत्न कर सकता है। मोती रत्न आपको राजनीति में अग्रणी रखेगा। मोती रत्न व्यवसायिक सफलता, सूझ-बूझ की योग्यता, मनोविश्लेषक, कलात्मक कार्य से आयु प्राप्त के योग बना सकता है। रत्न शुभता से आपकी धार्मिक प्रवृत्ति का विकास होकर आपको समाजसेवी संगठन या न्यासों के संचालन कार्य से सम्मान दिला सकता है।

मोती रत्न चांदी की अंगूठी में जड़वाकर, कनिष्ठिका अंगूली में, सोमवार को प्रातःकाल में धारण करना शुभ है। प्रातः काल की सभी क्रियाओं को करने के बाद इस रत्न जड़ित अंगूठी को पंचामृत से स्नान कराकर शुद्ध कर लें। तत्पश्चात इसकी धूप, दीप, फूल से पूजा करने के बाद इसे धारण करना चाहिए। रत्न धारण करने के पश्चात चंद्र मंत्र ॐ सौ सोमाय नमः का एक माला जाप रुद्राक्ष माला पर करना चाहिए। तदुपरांत चंद्र वस्तुओं जैसे— चावल, चीनी, चांदी, श्वेत वस्त्र आदि का दान करना चाहिए। मोती रत्न कम से कम ४ रत्ती से १० रत्ती का धारण करना शुभफलकारी होता है।

मोती रत्न के साथ नीलम या गोमेद रत्न धारण करने से बचना चाहिए। मोती रत्न अंगूठी रूप के अलावा लॉकेट/ माला/ ब्रेसलेट या दूसरे हाथ में भी धारण कर सकते हैं। विशेष आवश्यकता होने पर आप मोती रत्न के उपरत्न जैसे — सफेद मूल स्टोन, सफेद हकीक एवं २ मुखी रुद्राक्ष आदि भी धारण कर सकते हैं।

लहसुनिया

आपकी कुंडली में केतु सप्तम भाव में स्थित है। आपको केतु रत्न लहसुनिया धारण करना चाहिए। केतु रत्न लहसुनिया आर्थिक मामलों में आपके लिए लाभदायक सिद्ध होगा। लहसुनिया रत्न धारण कर आप अपने दांपत्य जीवन को स्नेहयुक्त बनाये रखने में भी यह रत्न महत्वपूर्ण भूमिका निभा सकता है। इस रत्न की शुभता से आपको धन का उत्तम सुख प्राप्त होगा। आपकी आर्थिक चिन्ताओं का अंत होगा। रत्न प्रभाव से आपकी यात्राएं सुखद एवं सफल होंगी। वात रोग, अंतडियों के रोग और वीर्य संबंधी रोगों में कमी हो सकती है।

केतु मेष राशि में स्थित है तथा इसका स्वामी मंगल दूसरे भाव में स्थित है। अतः लहसुनिया रत्न धारण करने पर स्व-कुटुम्ब के सुखों में वृद्धि होगी। यह रत्न आपको जनता व सरकार से सम्मान दिलाएगा। यह रत्न आपको मिथ्या वाद से बचाएगा। साथ ही यह रत्न आपके स्वाभिमान को बढ़ाएगा। रत्न शुभता से जमीन जायदाद के संग्रह में आपको सहयोग प्राप्त होगा। रत्न प्रभाव से आपको धनोपार्जन में सफलता मिलेगी एवं यह रत्न आपको मधुर, सौम्य और प्रिय बोलने का गुण प्रदान करेगा, आपकी संग्रह शक्ति बढ़ाएगा। इसके साथ ही आपकी आर्थिक स्थिति भी बेहतर होगी। इस रत्न को धारण करने पर आपको उत्तम भोजन सेवन की प्राप्ति हो सकती है। परहित में ही आपको आनंद का अनुभव होगा।

लहसुनिया रत्न को चांदी धातु में जड़वाकर गुरुवार के दिन सूर्यास्त काल में धारण किया जा सकता है। लहसुनिया रत्न जड़ित अंगूठी को पंचामृत से स्नान कराकर, इसका धूप, दीप और फूलों से पूजन करने के बाद अनामिका अंगूठी में धारण करें। रत्न धारण के पश्चात केतु रत्न मंत्र ॐ के केतवे नमः का 9 माला जाप करें। मंत्र जाप के बाद केतु ग्रह की वस्तुओं का दान किसी योग्य व्यक्ति को करना शुभ रहता है। केतु वस्तुएं इस प्रकार हैं— सप्तधान्य, नारियल, धूम्र वस्त्र। लहसुनिया रत्न का वजन कम से कम 4 रत्ती और अधिकतम 8-10 रत्ती होना चाहिए। अंगूठी रूप में रत्न धारण करने में किसी प्रकार की असमर्थता होने पर इसे लॉकेट/ माला/ ब्रेसलेट या दूसरे हाथ में भी धारण किया जा सकता है।

लहसुनिया रत्न धारण करते समय यह ध्यान रखना चाहिए कि इस रत्न के साथ माणिक्य एवं गोमेद रत्न धारण करना प्रतिकूल फल प्रदान कर सकता है।

पन्ना

आपकी कुंडली में बुध द्वादश भाव में स्थित है। आप बुध ग्रह की शुभता पाने के लिए पन्ना रत्न धारण करें। पन्ना रत्न आपको बुद्धिमान, विचारशील और विवेकी व्यक्ति बनेंगे। आपको धर्म के प्रति आस्थावान बनाएगा। यह रत्न आपको एक स्पष्ट वक्ता बनाएगा। बुध रत्न पन्ना से आपको आलस्य से बचाएगा। तथा रत्न शुभता से आप दूसरों के धन का लालच नहीं करेंगे। पन्ना रत्न शुभता आपको उच्च पद और प्रतिष्ठा देगा। बौद्धिक योग्यता से आप अपने शत्रुओं को परास्त करने में भी यह रत्न शुभ फल प्रदान करेगा।

आपकी तुला लग्न की कुंडली में बुध नवमेश व द्वादशेश है। बुध ग्रह आपके लिए शुभ है। यहां बुध लग्नेश शुक्र का मित्र भी है इसलिए ओर अधिक शुभ हो गया है। इसकी शुभता प्राप्त करने के लिए आप बुध रत्न पन्ना धारण करें। पन्ना रत्न आपके लिए भाग्योदय रत्न सिद्ध हो सकता है। इस रत्न को धारण कर आप दांपत्य जीवन के सुखों में वृद्धि कर सकता है। बुध रत्न पन्ना आपको धर्म, पुण्य, भाग्य, गुरु, देवता, तीर्थ यात्रा, दान इत्यादि विषयों से संलग्न कर सकता है। यह रत्न आपको बौद्धिक कार्यों में भाग्य का सहयोग दे सकता है।

पन्ना रत्न कनिष्ठिका अंगूठी में धारण करना चाहिए। इस रत्न को सोना धातु में जड़वाकर आप प्रातःकाल में स्नानादि नित्यक्रियाओं से निवृत्त होने के बाद रत्न को पंचामृत से शुद्ध

कर धूप, दीप और फूल दिखाकर धारण कर सकते हैं। पन्ना रत्न धारण करते समय बुध मंत्र ॐ बुं बुधाय नमः का १ माला या ५ माला जाप करना चाहिए। तदुपरांत बुध ग्रह की वस्तुएं जैसे – मूंग, कस्तूरी, कांसा, हरित वस्त्र आदि का यथाशक्ति दान करना चाहिए। रत्न इस प्रकार धारण करें कि वह शरीर को स्पर्श करें। पन्ना रत्न ३ रत्ती का कम से कम, अन्यथा ६ रत्ती का होना चाहिए।

इस रत्न को आप लॉकेट/ माला/ ब्रसलेट या विपरीत हाथ में भी धारण कर सकते हैं। पन्ना रत्न धारण करने में आप असमर्थ हो तो आप इसके स्थान पर मरगज, हरा हकीक, पेरिडोट एवं ४ मुखी रुद्राक्ष धारण कर सकते हैं।

मूंगा

आपकी कुंडली में मंगल द्वितीय भाव में स्थित है। मंगल के शुभफल प्राप्ति के लिए आपको मंगल रत्न मूंगा धारण करना चाहिए। मूंगा रत्न धारण कर आप सहनशीलता का परिचय देंगे। वाकशक्ति का चातुर्य के साथ प्रयोग करेंगे। धन का प्रवाह तीव्र होगा। पराक्रम के कार्यों में आपकी अभिरुचि जागृत होगी। मूंगा रत्न आपके जोश और ऊर्जा शक्ति का भी विस्तार करेगा। इस रत्न को धारण करने के बाद आप जीवन की बाधाओं का साहस के साथ सामना करने लगेंगे। पहल क्षमता भी आपकी पहले से अधिक बढ़ जायेगी।

आपकी तुला लग्न की कुंडली में मंगल द्वितीय भाव एवं सप्तम भाव के स्वामी है। मंगल के सभी शुभ फल पाने के लिए आप मूंगा रत्न धारण कर सकते हैं। मूंगा रत्न धारण करने से आपके कुटुंब सुख व पराक्रम में वृद्धि हो सकती है। यह रत्न आपके दांपत्य सुख में भी बढ़ोतरी करेगा। आप यह रत्न धारण कर शत्रुओं पर विजय प्राप्त कर सकते हैं। यह रत्न आपके भाग्य में वृद्धि कर आपके रुके हुए कार्यों को बना सकता है। मूंगा रत्न आपको कुटुंब सुख, आभूषण, गायन के साथ साथ स्वतंत्र व्यापार में सफलता दे सकता है। रत्न धारण से मंगल बलवान होगा और मंगल की शुभता आपको पूर्ण रूप से प्राप्त होगी।

मूंगा रत्न अनामिका अंगूली में, चांदी धातु में जड़वाकर मंगलवार को प्रातः काल में स्नानादि क्रियाओं से शुद्ध होकर इस रत्न को पंचामृत से शुद्ध कर अपने ईष्ट देव का पूजन करने के पश्चात धूप, दीप दिखाकर धारण करना चाहिए। मूंगा रत्न धारण करने के पश्चात मंगल मंत्र ॐ अं अंगारकाय नमः का १ माला जाप करना चाहिए। इसके पश्चात मंगल वस्तुएं जैसे – गेहूं, गुड़, तांबा, लाल वस्त्र आदि का दान करना चाहिए। मूंगा रत्न कम से कम ६ रत्ती से लेकर अधिकतम ८ रत्ती तक का धारण करना शुभ रहता है।

मूंगा रत्न धारण करने के बाद इस रत्न के साथ हीरा, गोमेद एवं नीलम रत्न को धारण करना अनुकूल नहीं माना गया है। यदि आप इस रत्न को अंगूठी रूप में धारण न कर पाएं तो आप इसे लॉकेट रूप में या दूसरे हाथ में धारण कर सकते हैं। यह रत्न रजत धातु के अलावा स्वर्ण धातु में भी धारण किया जा सकता है। मूंगा रत्न धारण न कर पाने की स्थिति में आप इस रत्न के उपरत्न लाल हकीक एवं ३ मुखी रुद्राक्ष भी आप धारण कर सकते हैं।

माणिक्य

आपकी कुंडली में सूर्य प्रथम भाव में स्थित हैं। अतः आपको शुक्र रत्न माणिक्य धारण करना चाहिए। माणिक्य रत्न धारण करने से आपको उत्तम मित्र व उच्च पद की प्राप्ति होगी। सरकार से आपके अच्छे संबंध होंगे। सत्ता से जुड़े लोगों से आपके संबंध करीबी और मजबूत होंगे। माणिक्य रत्न आत्मविश्वास भाव में वृद्धि करेगा। तथा इसके प्रभाव से आपकी व्यक्तित्व में भी तेज आयेगा। आपके व्यक्तित्व का विकास होगा। आपका चहुंमुखी विकास होगा। धन-धान्य बढ़ेगा।

आपकी तुला लग्न की कुंडली में सूर्य एकादश भाव के स्वामी है। सूर्य रत्न माणिक्य धारण कर आप सूर्य को बल प्रदान कर सकते हैं। माणिक्य रत्न धारण करने से आपके शारीरिक बल का विकास होगा। यह माणिक्य रत्न आय क्षेत्रों में आपको प्रभावशाली बना सकता है। रत्न शुभता से आपका आत्मविश्वास उच्च रहेगा। इसके साथ ही यह रत्न आपकी महत्वाकांक्षाओं को पूरा करने में भी शुभ रत्न सिद्ध हो सकता है। सूर्य रत्न माणिक्य आपको उच्च पद और सरकारी क्षेत्रों से आय प्राप्ति के साधन उपलब्ध करा सकता है।

यह रत्न अनामिका अंगूली, स्वर्ण धातु में जड़वाकर रविवार को प्रातः काल में स्नानादि से निवृत्त होकर धारण करना चाहिए। पंचामृत से रत्न को शुद्ध करने के पश्चात धूप, दीप दिखाकर धारण करना चाहिए। धारण करने के पश्चात सूर्य मंत्र ॐ घृणि सूर्याय नमः का कम से कम १ माला जाप करना चाहिए। तदपश्चात सूर्य वस्तुएं जैसे— गेहूं, गुड़, चंदन, लाल वस्त्र आदि का दान करना चाहिए। माणिक्य रत्न कम से कम ४ रत्ती से लेकर ८ रत्ती तक का धारण करना लाभकारी रहता है।

माणिक्य रत्न के साथ नीलम या गोमेद रत्न को धारण करने से बचना चाहिए। अति आवश्यकता में इन्हें आप लॉकेट रूप में या दूसरे हाथ में धारण कर सकते हैं। आवश्यकता में यह रत्न चांदी धातु में भी धारण किया जा सकता है। यदि आप माणिक्य रत्न पहनने में किसी प्रकार से असमर्थ हैं तो आप इसके स्थान पर लाल तुरमली, गुलाबी हकीक, गारनेट एवं एक मुखी रुद्राक्ष भी धारण कर सकते हैं।

पुखराज

आपकी कुंडली में गुरु द्वितीय भाव में स्थित है। गुरु रत्न पुखराज धारण करना चाहिए। पुखराज रत्न धारण कर आपकी बुद्धिमत्ता का विकास होता है। यह रत्न वाणी में शुभता, विनम्र वाणी, संचित धन एवं आत्मशक्ति बनाये रखने में सहयोग करेगा। पुखराज की शुभता से आपमें दार्शनिक प्रवृत्ति का भाव जाग्रत होगा। धन-धान्य, यश और सम्मान की प्राप्ति होगी। पुखराज से शैक्षिक क्षेत्र में शुभ परिणाम प्राप्त होंगे। गुरु ग्रह की शुभता को बढ़ाने और अशुभता में कमी करने के लिए आप यह रत्न धारण करें।

आपकी तुला लग्न की कुंडली में गुरु तृतीयेश एवं षष्ठेश है। गुरु रत्न पुखराज धारण

कर आप गुरु शुभता को बढ़ा सकते हैं। पुखराज रत्न की शुभता आपको सेवकों का सुख एवं रोगों से बचाव दे सकती है। रत्न की अद्भुत शक्तियां आपके पुरुषार्थ व सम्मान में वृद्धि दे सकता है। रत्न प्रभाव से आप शत्रुओं पर साहस के साथ विजय प्राप्त कर सकते हैं। पुखराज रत्न आपके संतान सुख को बेहतर करने में उपयोगी साबित हो सकती है। आपको विद्या बुद्धि के प्रयोग से लाभ हो सकते हैं। यह रत्न आपको भाग्य व धर्म के क्षेत्र में भी सामान्य लाभ दे सकता है।

इस रत्न को स्वर्ण धातु में जड़वाकर, गुरुवार के दिन प्रातःकाल में सभी प्रकार से शुद्ध होने के बाद रत्न को धूप, दीप दिखाकर तर्जनी अंगूली में धारण करना चाहिए। पुखराज रत्न धारण करने के बाद ॐ बृं बृहस्पतये नमः का एक माला जाप ५ मुखी रुद्राक्ष माला पर करना चाहिए। जप पूर्ण करने के बाद किसी जरूरतमंद को गुरु ग्रह से संबंधित पदार्थों का दान अपने सामर्थ्यशक्ति के अनुसार करना चाहिए। गुरु ग्रह की वस्तुएं इस प्रकार हैं— चने की दाल, हल्दी, पीला वस्त्र। यह रत्न कम से कम ४ रत्ती से लेकर ८ रत्ती का धारण किया जा सकता है।

पुखराज रत्न के साथ हीरा और गोमेद रत्न धारण करना अनुकूल फलदायक नहीं रहता है। विशेष आवश्यकता होने पर आप इस रत्न को लॉकेट/ माला/ ब्रेसलेट या दूसरे हाथ में भी धारण कर सकते हैं। किसी कारणवश यदि पुखराज रत्न आप धारण न कर पाएं तो आप इसके उपरत्न सुनहला, पीला हकीक, पीताम्बरी रत्न एवं ५ मुखी रुद्राक्ष धारण करें।

दशानुसार रत्न विचार

मंगल

(10/03/2017 - 10/03/2024)

मंगल की दशा में आपका नीलम, हीरा व मोती रत्न धारण करना श्रेष्ठ है। दशा का पूर्ण फल प्राप्त करने के लिए उपरोक्त रत्न अवश्य धारण करें।

गोमेद, लहसुनिया, मूंगा, माणिक्य व पुखराज रत्न शुभ हैं। इस दशा में विशेष फल प्राप्त करने हेतु इन शुभ रत्नों में से उसके कारकत्व अनुसार रत्न धारण कर सकते हैं।

पन्ना रत्न नेष्ट हैं नेष्ट या वर्जित रत्नों को ना धारण करना ही श्रेयस्कर है क्योंकि ये लाभ कम व हानि अधिक कर सकते हैं।

राहु

(10/03/2024 - 10/03/2042)

राहु की दशा में आपका नीलम, गोमेद व हीरा रत्न धारण करना श्रेष्ठ है। दशा का पूर्ण फल प्राप्त करने के लिए उपरोक्त रत्न अवश्य धारण करें।

मोती, पन्ना व पुखराज रत्न शुभ हैं। इस दशा में विशेष फल प्राप्त करने हेतु इन शुभ

रत्नों में से उसके कारकत्व अनुसार रत्न धारण कर सकते हैं।

लहसुनिया, मूंगा व माणिक्य रत्न नेष्ट हैं नेष्ट या वर्जित रत्नों को ना धारण करना ही श्रेयस्कर है क्योंकि ये लाभ कम व हानि अधिक कर सकते हैं।

गुरु

(10/03/2042 - 10/03/2058)

गुरु की दशा में आपका नीलम, गोमेद व मोती रत्न धारण करना श्रेष्ठ है। दशा का पूर्ण फल प्राप्त करने के लिए उपरोक्त रत्न अवश्य धारण करें।

हीरा, पुखराज, लहसुनिया, मूंगा व माणिक्य रत्न शुभ हैं। इस दशा में विशेष फल प्राप्त करने हेतु इन शुभ रत्नों में से उसके कारकत्व अनुसार रत्न धारण कर सकते हैं।

पन्ना रत्न नेष्ट हैं नेष्ट या वर्जित रत्नों को ना धारण करना ही श्रेयस्कर है क्योंकि ये लाभ कम व हानि अधिक कर सकते हैं।

शनि

(10/03/2058 - 10/03/2077)

शनि की दशा में आपका नीलम, हीरा व गोमेद रत्न धारण करना श्रेष्ठ है। दशा का पूर्ण फल प्राप्त करने के लिए उपरोक्त रत्न अवश्य धारण करें।

पन्ना, मोती व पुखराज रत्न शुभ हैं। इस दशा में विशेष फल प्राप्त करने हेतु इन शुभ रत्नों में से उसके कारकत्व अनुसार रत्न धारण कर सकते हैं।

लहसुनिया, मूंगा व माणिक्य रत्न नेष्ट हैं नेष्ट या वर्जित रत्नों को ना धारण करना ही श्रेयस्कर है क्योंकि ये लाभ कम व हानि अधिक कर सकते हैं।

बुध

(10/03/2077 - 10/03/2094)

बुध की दशा में आपका नीलम, हीरा व गोमेद रत्न धारण करना श्रेष्ठ है। दशा का पूर्ण फल प्राप्त करने के लिए उपरोक्त रत्न अवश्य धारण करें।

पन्ना, मोती, लहसुनिया, माणिक्य, मूंगा व पुखराज रत्न शुभ हैं। इस दशा में विशेष फल प्राप्त करने हेतु इन शुभ रत्नों में से उसके कारकत्व अनुसार रत्न धारण कर सकते हैं।

केतु
(10/03/2094 - 11/03/2101)

केतु की दशा में आपका नीलम व हीरा रत्न धारण करना श्रेष्ठ है। दशा का पूर्ण फल प्राप्त करने के लिए उपरोक्त रत्न अवश्य धारण करें।

लहसुनिया, गोमेद, मोती, मूंगा, पन्ना व पुखराज रत्न शुभ हैं। इस दशा में विशेष फल प्राप्त करने हेतु इन शुभ रत्नों में से उसके कारकत्व अनुसार रत्न धारण कर सकते हैं।

माणिक्य रत्न नेष्ट हैं नेष्ट या वर्जित रत्नों को ना धारण करना ही श्रेयस्कर है क्योंकि ये लाभ कम व हानि अधिक कर सकते हैं।

रुद्राक्ष

रुद्राक्ष को शिव का अश्रु कहा जाता है। रुद्राक्ष दो शब्दों के मेल से बना है पहला रुद्र का अर्थ होता है भगवान शिव और दूसरा अक्ष इसका अर्थ होता है आंसू। माना जाता है की रुद्राक्ष की उत्पत्ति भगवान शिव के आंसुओं से हुई है। रुद्राक्ष भगवान शिव के नेत्रों से प्रकट हुई वह मोती स्वरूप बूँदें हैं जिसे ग्रहण करके समस्त प्रकृति में आलौकिक शक्ति प्रवाहित हुई तथा मानव के हृदय में पहुँचकर उसे जागृत करने में सहायक हो सकी।

रुद्राक्ष की भारतीय ज्योतिष में भी काफी उपयोगिता है। ग्रहों के दुष्प्रभाव को नष्ट करने में रुद्राक्ष का विशेष रूप से प्रयोग किया जाता है, जो अपने आप में एक अचूक उपाय है। गम्भीर रोगों में यदि जन्मपत्री के अनुसार रुद्राक्ष का उपयोग किया जाये तो आश्चर्यचकित परिणाम देखने को मिलते हैं। रुद्राक्ष की शक्ति व सामर्थ्य उसके धारीदार मुखों पर निर्भर होती है। रुद्राक्ष सिद्धिदायक, पापनाशक, पुण्यवर्धक, रोगनाशक, तथा मोक्ष प्रदान करने वाला है।

एक मुखी से लेकर चौदह मुखी तक रुद्राक्ष विशेष रूप से पाए जाते हैं, उनकी अलौकिक शक्ति और क्षमता अलग-अलग मुख रूप में दर्शित होती है। रुद्राक्ष धारण करने से जहाँ आपको ग्रहों से लाभ प्राप्त होगा वहीं आप शारीरिक रूप से भी स्वस्थ रहेंगे। रुद्राक्ष का स्पर्श, दर्शन, उस पर जप करने से, उस की माला को धारण करने से समस्त पापों का और विघ्नों का नाश होता है ऐसा महादेव का वरदान है, परन्तु धारण की उचित विधि और भावना शुद्ध होनी चाहिए।

रुद्राक्ष दाने पर उभरी हुई धारियों के आधार पर रुद्राक्ष के मुख निर्धारित किये जाते हैं। रुद्राक्ष के बीचों-बीच एक सिरे से दूसरे सिरे तक एक रेखा होती है जिसे मुख कहा जाता है। रुद्राक्ष में यह रेखाएं या मुख एक से 14 मुखी तक होते हैं और कभी-कभी 15 से 21 मुखी तक के रुद्राक्ष भी देखे गए हैं। आधी या टूटी हुई लाईन को मुख नहीं माना जाता है। जितनी लाईनें पूरी तरह स्पष्ट हों उतने ही मुख माने जाते हैं।

पुराणों में प्रत्येक रुद्राक्ष का अलग-अलग महत्व और उपयोगिता का उल्लेख किया गया है –

एक मुखी – सूर्य ग्रह – स्वास्थ्य, सफलता, मान-सम्मान, आत्म – विश्वास, आध्यात्म, प्रसन्नता, अनायास धनप्राप्ति, रोगमुक्ति तथा व्यक्तित्व में निखार और शत्रुओं पर विजय प्राप्त कराता है।

दो मुखी – चंद्र ग्रह– वैवाहिक सुख, मानसिक शान्ति, सौभाग्य वृद्धि, एकाग्रता, आध्यात्मिक उन्नति, पारिवारिक सौहार्द, व्यापार में सफलता और स्त्रियों के लिए इसे सबसे उपयुक्त माना गया है।

तीन मुखी – मंगल ग्रह– शत्रु शमन और रक्त सम्बन्धी विकार को दूर करने में सहायक होता है।

चार मुखी – बुध ग्रह– शिक्षा, ज्ञान, बुद्धि – विवेक, और कामशक्ति में वृद्धि प्राप्त कराता है।

पांच मुखी – गुरु ग्रह– शारीरिक आरोग्यता, अध्यात्म उन्नति, मानसिक शांति और प्रसन्नता के लिए भी इसका उपयोग किया होता है।

छः मुखी – शुक्र ग्रह – प्रेम सम्बन्ध, आकर्षण, स्मरण शक्ति में वृद्धि, तीव्र बुद्धि, कार्यों में पूर्णता और व्यापार में आश्चर्यजनक सफलता प्राप्त कराता है।

सात मुखी – शनि ग्रह– शनि दोष निवारण, धन-संपत्ति, कीर्ति, विजय प्राप्ति, और कार्य व्यापार आदि में बढ़ोतरी कराने वाला है।

आठ मुखी – राहु ग्रह– राहु ग्रह से सम्बंधित दोषों की शान्ति, ज्ञानप्राप्ति, चित्त में एकाग्रता, मुकदमे में विजय, दुर्घटनाओं तथा प्रबल शत्रुओं से रक्षा, व्यापार में सफलता और उन्नतिकारक है।

नौ मुखी – केतू ग्रह– केतु ग्रह से सम्बंधित दोषों की शान्ति, सुख-शांति, व्यापार वृद्धि, धारक की अकालमृत्यु नहीं होती तथा आकस्मिक दुर्घटना का भी भय नहीं रहता।

10 मुखी – भगवान महावीर– कार्य क्षेत्र में प्रगति, स्थिरता व वृद्धि, सम्मान, कीर्ति, विभूति, धन प्राप्ति, लौकिक-पारलौकिक कामनाएँ पूर्ण होती हैं।

11 मुखी – इंद्र ग्रह– आर्थिक लाभ व समृद्धिशाली जीवन, किसी विषय का अभाव नहीं रहता तथा सभी संकट और कष्ट दूर हो जाते हैं।

12 मुखी – भगवान विष्णु ग्रह– विदेश यात्रा, नेतृत्व शक्ति प्राप्ति, शक्तिशाली, तेजस्वी बनाता है। ब्रह्मचर्य रक्षा, चेहरे का तेज और ओज बना रहता है। शारीरिक एवं मानसिक पीड़ा मिट जाती है।

13 मुखी – इंद्र ग्रह– सर्वजन आकर्षण व मनोकामना प्राप्ति, यश-कीर्ति, मान-प्रतिष्ठा व कामदेव का प्रतीक है। उपरी बाधा और नजर दोष से बचाव के लिए विशेष उपयोगी है।

14 मुखी – शनि ग्रह– आध्यात्मिक उन्नति, शक्ति, धन प्राप्ति व कष्टनिवारक हैं। शनि की साढ़ेसाती या ढैया में विशेष कष्टनिवारक है।

आपकी कुंडली और रुद्राक्ष

आपकी कुंडली तुला लग्न की है। तुला लग्न का स्वामी शुक्र होने के कारण आपके व्यक्तित्व में शुक्र का प्रभाव दिखाई देता है। आपका स्वभाव सौम्यता लिये होता है। आप व्यवहार पसंद हैं। वायु तत्व होने के कारण आप अक्सर योजनाएं बनाते हुए मिल जाते हैं परन्तु उन पर क्रियान्वयन नहीं कर पाते। आपको भोग विलास की वस्तुओं का उपभोग करना और खरीदना ज्यादा पसंद हो सकता है। नई टेक्नोलॉजी का स्वागत करते हैं। नये चिन्तन व परीक्षण करने वाले (क्रियटिव) होते हैं और संगीत, गायन, नृत्य, एक्टिंग आदि चीजे पसंद करते हैं।

आप अपनी साज-सज्जा और कपड़ों पर विशेष रूप से ध्यान रखते हैं। आपको वात संबंधी पेशानी अधिक रहती है। आप बहुत जल्दी ही हर माहौल में समझौता कर लेते हैं। हमेशा

आपका अलग ही रूप देखने को मिलता है। आप मे हाजिर जवाब क्षमता अद्भूत है। आप एक जगह टिक कर नहीं बैठ सकते। आदर्शवादी और साहित्यप्रिय होने के कारण आपकी लेखन क्षमता भी अच्छी होती है।

कुंडली के 12 भावों में से 3 भाव विशेष रूप से अशुभ भाव होने के कारण अनिष्ट करने का सामर्थ्य रखते हैं। 6, 8 व 12 वें भाव को त्रिक भावों के नाम से जाना जाता है। तथा त्रिक भावों को शुभ भाव नहीं कहा जाता है। इन भावों का संबन्ध जिन भी ग्रहों व भावेशों से बनता है उनकी शुभता में कमी आती है। कुंडली के आठवें घर से मृत्यु, दुर्घटना, क्लेश, विघ्न, अकाल मृत्यु और परेशानियों का विचार किया जाता है। कुंडली का बारहवां भाव व्यय भाव, हानि भाव, मोक्ष भाव, बंधन भाव तथा शयन भाव के नाम से जाना जाता है। त्रिक भावों में यह सबसे अंतिम भाव है। उपरोक्त विषयों के अलावा इस भाव से कोर्ट कचहरी, अस्पताल, कारावास आदि का विश्लेषण भी किया जाता है। इस भाव में किसी भावेश का बैठना या इस भावेश का किसी ग्रह या भावेश से सम्बन्ध अशुभता समझा जाता है।

इन भावों के स्वामियों और इन भावों में स्थित ग्रहों में अशुभता का अंश पाया जाता है। जिसके फलस्वरूप ये आपके जीवन को समय समय पर बाधित करते रहते हैं।

आपके तुला लग्न के लिए गुरु षष्ठेश व तृतीयेश हैं। षष्ठेश व तृतीयेश गुरु आपके धन में अल्पता, ऋणग्रस्तता, संतानविरोधी, न्यायालयों में अधिक व्यय, जीवन साथी से अनबन तथा जीवन में समय समय पर धोखे की स्थिति उत्पन्न कर सकता है।

शुक्र अष्टमेश व लग्नेश है आप चतुराई से धन—संग्रह, कुटुम्बियों से परेशानियां, स्वास्थ्य में न्यूनता दे सकता है। शुक्र अष्टमेश है, इसलिए आपके वैवाहिक सुखों में कमी का कारण बन सकता है। जीवन साथी के प्रति निष्ठावान रहने से गृहस्थ जीवन के कष्टों में कमी कर सकते हैं।

बुध द्वादशेश और नवमेश हैं। नवमेश व द्वादशेश बुध आपके लिए व्यय, हानियों और दंड की स्थिति बना सकते हैं। इसके अतिरिक्त यह आपके विवेक, वाक्शक्ति, भाग्य, धर्म, यश में कमी भी करेंगे। आपमें तुरन्त निर्णय की क्षमता, न्यायालयों पर व्यय, राज्य व भाग्य के क्षेत्र में हानि दे सकता है।

बुध द्वादश भाव में स्थित है, आप शत्रुओं पर बुद्धि—चतुरता से विजय प्राप्त करने में सफल रहेंगे। आपको आलस्य भाव से बचना चाहिए, साथ ही कठोर वचन बोलना भी मित्र वर्ग में आपके संबंधों की मधुरता में कमी कर सकता है।

इन सभी के फलों में शुभता प्राप्त करने के लिए आपको 4, 5, 6 मुखी रुद्राक्षों का कवच धारण करना चाहिए। यह कवच सफेद धागे में डालकर सोमवार को गंगाजल से शुद्ध कर ॐ नम शिवाय मंत्र के 108 बार जप कर धारण करना चाहिए। तदुपरांत शिवजी को कच्चा दूध चढ़ाए। क्षमतानुसार दान करे। इस प्रकार आपके जीवन में आने वाले कष्टों से छुटकारा

मिलेगा एवं विशेष कष्टों में न्यूनता आएगी। कुंडली के सभी ग्रहों को शुभता प्रदान करने के लिए आप शिव कृपा रुद्राक्ष माला जो एक से चौदह मुखी रुद्राक्ष से निर्मित होती है, भी धारण कर सकते हैं। एक से चौदह मुखी रुद्राक्ष माला अद्भुत व चमत्कारी फल प्रदान करती हैं।

उपरोक्त कवच बिना दशा, गोचर विचार के आपको जीवन भर धारण करना चाहिए। क्योंकि यह कवच जन्म लग्न एवं उसमें स्थित ग्रहों के अवगुणों को नियंत्रित करने के लिए आवश्यक हैं।

वार्षिक फलादेश - 2024

इस वर्ष शनि कुम्भ राशि में पंचम भाव में और राहु मीन राशि षष्ठ भाव में रहेंगे। वर्षारम्भ में गुरु मेष राशि में सप्तम भाव में रहेंगे और 1 मई को वृष राशि में अष्टम भाव में गोचर करेंगे। मंगल ग्रह अपने सरल गति से गोचर करेंगे। 29 अप्रैल से 28 जून तक शुक्र अस्त रहेंगे।

व्यवसाय

कार्य व्यवसाय की दृष्टि से वर्ष का प्रारम्भ अनुकूल रहेगा। सप्तम स्थान पर गुरु एवं शनि के संयुक्त गोचरीय प्रभाव से आपको व्यवसाय में उत्तम लाभ होगा। आमदनी के नये स्रोत मिलने की उम्मीद है। इस अवधि में कोई नया कार्य प्रारम्भ करेंगे, तो उसमें सफलता मिलने की उम्मीद है। आपको अनुभवी और वरिष्ठ लोगों का सहयोग मिलेगा।

यदि आप साझेदारी में कोई कार्य कर रहे हैं तो आपको इच्छित लाभ प्राप्त होगा और आप अपने साझेदार से संतुष्ट रहेंगे। नौकरी करने वालों का अपने कार्यस्थल पर ही मान-सम्मान बढ़ेगा। अप्रैल के बाद समय थोड़ा प्रभावित हो सकता है। उस समय शत्रुओं द्वारा आपके कार्यों में रूकावटें डाली जा सकती हैं परन्तु षष्ठस्थ राहु के प्रभाव से आप उन पर भी विजय प्राप्त कर सकते हैं।

धन संपत्ति

वर्ष का प्रारम्भ उत्तम रहेगा। धनागम में निरन्तरता बनी रहेगी। आप निष्ठा के साथ धनार्जन में लगे रहेंगे, और आर्थिक स्थिति को सुदृढ़ करने में जीवनसाथी एवं बड़े भाई का पूर्ण सहयोग प्राप्त होगा।

अप्रैल के बाद द्वितीय एवं चतुर्थ स्थान पर गुरु ग्रह की दृष्टि प्रभाव से आपको भूमि, भवन, वाहन, रत्न, आभूषण इत्यादि का सुख प्राप्त होगा। परिवार के सदस्यों तथा रिश्तेदारों के मांगलिक कार्यों में धन खर्च होगा। बड़े निवेश के लिए भी समय अनुकूल है।

घर-परिवार, समाज

पारिवारिक रूप से यह वर्ष अनुकूल रहेगा। वर्षारम्भ में आपको भाईयों का सहयोग प्राप्त होगा। सप्तमस्थ गुरु के प्रभाव से आपके पत्नी के साथ समन्वय मधुर होंगे। यदि आप अविवाहित हैं तो आपका विवाह संस्कार हो सकता है। आपकी समाजिक पद व प्रतिष्ठा में बढ़ोत्तरी होगी। सामाजिक गतिविधियों में आप बढ़-चढ़ के भाग लेंगे जिससे आपका पराक्रम बढ़ेगा।

समाज

में

मान-सम्मान

के

साथ-साथ आपकी ख्याति भी बढ़ेगी।

अप्रैल के बाद द्वितीय स्थान पर गुरु एवं शनि की संयुक्त दृष्टि के कारण आपके परिवार में सुख शान्ति का वातावरण और उत्तम हो रहा है। उस समय परिवार में किसी सदस्य की वृद्धि का योग बन रहा है। ससुराल पक्ष के लोगों के साथ आपका संबंध अच्छा नहीं रहेगा।

संतान

संतान के लिए यह वर्ष अनुकूल रहेगा। स्वगृही शनि पंचमस्थ होने के कारण आपके बच्चों के पराक्रम में वृद्धि होगी। आपके बच्चे अपने परिश्रम व पराक्रम के बल पर अपने लक्ष्य को प्राप्त करेंगे। आपके दूसरे बच्चे के लिए भी समय काफी अनुकूल है। उसका चौमुखी विकास होगा। यदि वह विवाह योग्य है तो विवाह भी हो सकता है।

अप्रैल के बाद अष्टम स्थान का गुरु आपकी संतान को मानसिक अशान्ति दे सकता है। आपके बच्चों का स्वास्थ्य प्रभावित हो सकता है। जिसका नकारात्मक प्रभाव उनकी पढ़ाई-लिखाई पर भी पड़ सकता है।

स्वास्थ्य

स्वास्थ्य की दृष्टि से वर्ष का प्रारम्भ अत्यधिक अनुकूल रहेगा। लग्न स्थान पर गुरु ग्रह की दृष्टि प्रभाव से आपके मन में अच्छे विचार आएंगे। आप प्रत्येक कार्य को सकारात्मक रूप से करेंगे। अच्छे स्वास्थ्य के लिए आपका खान-पान एवं दिनचर्या उत्तम होगी।

लग्न स्थान पर शुभ ग्रह के प्रभाव होने से आप शुद्ध शाकाहारी भोजन ही ग्रहण करेंगे जिससे आप का स्वास्थ्य अनुकूल बना रहेगा। यदि मौसम जनित कोई बीमारी होती भी है तो आप शीघ्र ही स्वस्थ हो जाएंगे। यदि पहले से कोई लम्बी बीमारी से ग्रस्त हैं तो सावधानी बरतें क्योंकि अप्रैल के बाद समय और प्रभावित हो सकता है। अतः उस समय आपको अपने स्वास्थ्य पर विशेष ध्यान देने की आवश्यकता होगी।

करियर एवं प्रतियोगी परीक्षा

करियर एवं प्रतियोगिता परीक्षा के लिए यह वर्ष अत्यधिक अनुकूल रहेगा। छठे स्थान में राहु के प्रभाव से आप प्रतियोगिता परीक्षाओं में सफलता प्राप्त करेंगे। जो व्यक्ति इलेक्ट्रॉनिक या हार्डवेयर से संबंधित कार्य कर रहे हैं, उनको अपने करियर में सफलता मिलेगी।

जो व्यक्ति नौकरी की तलाश में हैं उनको नौकरी मिल जाएगी। इस वर्ष आप शत्रुओं को परास्त करने में सफल रहेंगे। व्यापारिक व्यक्तियों को अपना ब्राण्ड नेम भी मिल सकता है। गुरु ग्रह के गोचर के बाद व्यापारिक वर्ग का समय थोड़ा प्रभावित हो सकता है।

यात्रा—तबादला

यात्रा की दृष्टि से यह वर्ष अनुकूल रहेगा। तृतीय स्थान पर गुरु ग्रह की दृष्टि प्रभाव से छोटी—मोटी यात्रा होती रहेंगी। सप्तमस्थ गुरु के प्रभाव से व्यापारिक व्यक्तियों को व्यवसाय से सम्बन्धित यात्राएं होंगी।

अप्रैल के बाद द्वादश स्थान पर गुरु की दृष्टि प्रभाव से आप विदेश यात्रा करेंगे। इस यात्रा से आपको अच्छा लाभ प्राप्त होगा।

धर्म कार्य एवं ग्रह शांति

धार्मिक कार्यों के लिए यह वर्ष अच्छा रहेगा। वर्ष के प्रारम्भ में पूजा पाठ के प्रति आपका आकर्षण बढ़ेगा। आप अपने पत्नी के साथ मिलकर हवनादि कार्य संपन्न करेंगे। तीर्थ यात्रा कर पुण्य भी कमायेंगे। पंचमस्थ शनि के प्रभाव से आपके मन में ईश्वर के प्रति श्रद्धा विश्वास बढ़ेगा। अप्रैल के बाद द्वादश स्थान पर गुरु की दृष्टि प्रभाव से आप दान पुण्य भण्डारा इत्यादि अच्छे कर्मों पर अधिक पैसा खर्च करेंगे, जिससे आपको आत्मिक सुख का अनुभव होगा। अनाथालय अथवा गरीब बच्चों की पढ़ाई—लिखाई पर भी पैसा खर्च हो सकता है।

- सूर्य नमस्कार करें एवं सूर्य को जल चढ़ाएं।
- अपने घर में श्रीयन्त्र की स्थापना करें और उसके सामने घी का दीपक जलाएं।
- गुरुवार के दिन केला या बेशन के लड्डू गरीबों में बांटे, और वीरवार का व्रत रखें।

वार्षिक फलादेश - 2025

वर्ष के प्रारम्भ में कुम्भस्थ शनि पंचम भाव में रहेंगे व मीनस्थ राहु छठे भाव में रहेंगे और 29 मार्च को शनि मीन राशि छठे भाव में और 30 मई को राहु कुम्भ राशि पंचम भाव में प्रवेश करेंगे। वर्ष के शुरुआत में वृष राशि के गुरुअष्टम भाव में रहेंगे और 14 मई को मिथुन राशि नवम भाव में प्रवेश करेगी और अतिचारी हो कर 18 अक्टूबर को कर्क राशि दशम भाव में गोचर करेगी और वक्री होकर फिर से 5 दिसम्बर को मिथुन राशि नवम भाव में आ जाएगी।

व्यवसाय

कार्य व्यवसाय की दृष्टि से वर्ष का प्रारम्भ सामान्य रहेगा, परन्तु मई के बाद बहुत अच्छा हो रहा है। वर्षारम्भ में आप परिश्रम के बल पर कार्य क्षेत्र में सफलता प्राप्त करेंगे। अष्टम स्थान के गुरुआपके व्यवसाय में उतार-चढ़ाव के योग बना रहे हैं। कार्य क्षेत्र में कुछ गुप्त शत्रुओं द्वारा रुकावटें डाली जा सकती हैं। अतः इस समय के अंतराल आप कोई नया व्यापार प्रारम्भ न करें पुराने चले आ रहे व्यवसाय को ही और सुव्यवस्थित ढंग से चलाएं।

14 मई के बाद समय काफी अनुकूल हो रहा है। उस समय आप कोई भी कार्य प्रारम्भ करेंगे तो उसमें भाग्य आपका साथ देगा। छठे स्थान के शनि आपके शत्रुओं का दमन करते हुए आपके ब्राण्ड नेम को ऊपर ले जा सकते हैं, जिससे आपके व्यापार में अच्छा लाभ प्राप्त होगा। नौकरी करने वाले व्यक्तियों को उनके कार्यस्थल पर मान-सम्मान प्राप्त होगा।

धन संपत्ति

आर्थिक दृष्टि से वर्ष का प्रारम्भ अनुकूल रहेगा। द्वितीय स्थान पर गुरुएवं शनि ग्रह के संयुक्त दृष्टि प्रभाव से आप आर्थिक बचत करने में सफल रहेंगे। रत्न आभूषण इत्यादि का लाभ भी प्राप्त होगा। अचल संपत्ति के साथ-साथ वाहनादि का भी सुख प्राप्त होगा।

मई के बाद नवम स्थान का गुरुआपकी आर्थिक उन्नति के लिए और भी अच्छा रहेगा। उस समय आपके धनागम में वृद्धि होगी जिससे आप इच्छित बचत कर सकते हैं। मांगलिक कार्यों या सामाजिक कार्यों एवं बच्चे की उच्च शिक्षा पर आप का धन खर्च होगा।

घर-परिवार, समाज

पारिवारिक रूप से वर्ष का प्रारम्भ अनुकूल रहेगा। चतुर्थ एवं द्वितीय

स्थान पर गुरुकी दृष्टि प्रभाव से आपके परिवार में सुख शान्ति का वातावरण बना रहेगा। घरेलू वातावरण अच्छा रहेगा परन्तु सप्तमस्थ शनि की दृष्टि आपकी पत्नी का स्वास्थ्य खराब कर सकती है या किसी कार्यवश आप पत्नी से दूर रह सकते हैं।

14 मई के बाद तृतीय स्थान पर गुरु एवं शनि के संयुक्त दृष्टि प्रभाव से आपकी समाजिक प्रतिष्ठा में बढ़ोत्तरी होगी। सामाजिक गतिविधियों में आप बढ़-चढ़ के भाग लेंगे जिससे समाज में मान-सम्मान बढ़ेगा। आपको छोटे भाई बहनों का सहयोग प्राप्त होगा।

संतान

संतान की दृष्टि से यह वर्ष सामान्यतः अनुकूल रहेगा। पंचमस्थ शनि स्वगृही होने के कारण आपके बच्चों की उन्नति करेंगे। गुरुग्रह के गोचर के बाद समय काफी अनुकूल हो रहा है। उस समय उच्च शिक्षा प्राप्ति के शुभ योग हैं।

मई के बाद पंचम स्थान का राहु आपकी संतान का स्वास्थ्य प्रभावित कर सकता है। यह समय गर्भाधान के लिए अशुभ है साथ ही गर्भवती महिलाओं को विशेष सावधानी की आवश्यकता है।

स्वास्थ्य

वर्ष का प्रारम्भ स्वास्थ्य के लिए अनुकूल नहीं रहेगा। अष्टमस्थ गुरु के कारण आपके स्वास्थ्य में उतार-चढ़ाव बना रहेगा। मौसम जनित बीमारियों से थोड़ी परेशानी हो सकती है। यदि पहले से कोई बीमारी है तो परहेज की आवश्यकता है।

14 मई के बाद लग्न स्थान पर गुरुके दृष्टि प्रभाव से आपके अंदर रोग प्रतिरोधक शक्ति विकसित होगी। उस समय नैसर्गिक रूप से आपके स्वास्थ्य में सुधार आना शुरू हो जाएगा। धार्मिक कृत्यों में अधिक रुचि बढ़ेगी तथा आप मानसिक रूप से संतुष्ट एवं शारीरिक रूप से स्वस्थ रहेंगे।

करियर एवं प्रतियोगी परीक्षा

करियर एवं प्रतियोगिता परीक्षा के लिए यह वर्ष सफलता प्रदायक रहेगा। वर्षारम्भ में छठे स्थान में राहु के प्रभाव से आप प्रतियोगिता परीक्षाओं में सफलता प्राप्त करेंगे। विदेश जाकर उच्च शिक्षा प्राप्त करने के लिए समय बहुत अनुकूल है।

जो व्यक्ति इलेक्ट्रॉनिक या हार्डवेयर से संबंधित कार्य कर रहे हैं

उनके लिए समय शुभ है। इस वर्ष आप अपने सारे शत्रुओं को छोड़कर आगे निकलेंगे। बेरोजगार जातकों को रोजगार मिल जायेगा। मई के बाद समय और अनुकूल हो जाएगा।

यात्रा—तबादला

यात्रा की दृष्टि से यह वर्ष उत्तम रहेगा। वर्ष के प्रारम्भ में द्वादश स्थान पर गुरु के दृष्टि प्रभाव से आप विदेश यात्रा करेंगे।

14 मई के बाद छोटी—मोटी यात्राओं के साथ लम्बी यात्राएं भी होती रहेंगे। नवमस्थ गुरुके प्रभाव से धार्मिक यात्राएं भी हो सकती हैं।

धर्म कार्य एवं ग्रह शांति

धार्मिक कार्यों के लिए वर्ष का प्रारम्भ अच्छा नहीं रहेगा। मानसिक द्वन्दता के कारण पूजा पाठ में एकाग्रता नहीं रहेगी, परन्तु 14 मई के बाद आपका मन धार्मिक कार्यों में आकृष्ट होगा।

- द्विज, देव, ब्राह्मण, बुजुर्ग, गुरुव मंदिर के पुजारी की सेवा सुश्रूषा करें।
- केला या पीली वस्तुओं का दान करें। वीरवार का व्रत करें एवं बेसन के लड्डू दान करें।

वार्षिक फलादेश - 2026

इस वर्ष मीन राशि के शनि छटे भाव में रहेंगे। 25 नवम्बर तक कुम्भ राशि के राहु पंचम भाव में रहेंगे और उसके बाद मकर राशिमेंचतुर्थ भाव में गोचर करेंगे। वर्ष के पूर्वार्द्ध में मिथुन राशि केगुरुनवम भाव में रहेंगे और 2 जून को कर्क राशिमेंदशम भाव में गोचर करेंगे और फिर से अतिचारी होकर 31 अक्टूबर को सिंह राशि एवं एकादशभाव में प्रवेश कर जाएंगे। इस वर्ष मंगल ग्रह अपनी सरल गति से गोचर करेंगे। वर्षारम्भ से 1 फरवरी तक शुक्र अस्त रहेंगे और अक्टूबर में भी 14 दिन के लिए अस्त होंगे।

व्यवसाय

कार्य व्यवसाय की दृष्टि से यह वर्ष बहुत बढ़ीया रहेगा। आप अपने भाग्य के द्वारा व्यवसाय में उन्नति करेंगे। गुरु एवं शनि ग्रह का अनुकूल स्थान में होने से आपका चौमुखी विकास होगा। आय के मार्ग प्रशस्त होंगे। उच्च अधिकारियों या वरिष्ठ लोगों का सहयोग प्राप्त होगा। जिससे आपके कार्य क्षेत्र में सफलता का प्रतिशत और बढ़ सकता है।

02 मई के बाद नौकरी करने वाले व्यक्तियों का पदोन्नति के साथ-साथ इच्छित स्थान पर स्थानान्तरण भी हो सकता है। भूमि से सम्बन्धित कार्य करने वाले व्यक्तियों को अच्छा लाभ प्राप्त होगा।

धन संपत्ति

आर्थिक दृष्टि से यह वर्ष शुभ फलदायक रहेगा। व्यापारिक अनुकूलता होने के कारण इच्छित बचत करने में सफल रहेंगे। वर्ष के पूर्वार्द्ध में आप भौतिक सुख सुविधा पर भी खर्च करेंगे। बच्चों की स्वास्थ्य संबंधित परेशानी पर भी आपका पैसा खर्च हो सकता है।

02 जून के बाद चतुर्थ स्थान पर गुरु के दृष्टि प्रभाव से भूमि, भवन, वाहन के साथ साथ रत्न आभूषण इत्यादि वस्तुओं की प्राप्ति होगी। अपने परिवार के सदस्यों तथा रिश्तेदारों केमांगलिक कार्यों में भी धन का व्यय होगा। 31 अक्टूबर के बाद धनागम में वृद्धि होगी। जिससे आप आर्थिक स्थिति को सुदृढ़ करने में सफल रहेंगे।

घर-परिवार, समाज

पारिवारिक दृष्टि से यह वर्ष अनुकूल रहेगा। व्यापारिक व्यस्तता के कारण परिजनों को अधिक समय नहीं दे पाएंगेपरन्तु आपके परिवार में सुख शान्ति

का वातावरण बना रहेगा। तृतीय स्थान पर गुरु ग्रह के दृष्टि प्रभाव से सामाजिक उत्थान के लिए आपका पूर्ण प्रयास रहेगा।

02 जून के बाद पारिवारिक रूप से समय और भी अनुकूल हो रहा है। आपके परिवार में परस्पर सहयोग एवं भावनात्मक प्रेम में वृद्धि होगी। परिवार के सभी सदस्यों का सहयोग प्राप्त होगा और आपसी आकर्षण भी बढ़ेगा। पिताजी के लिए यह समय काफी अच्छा रहेगा। मालुत पक्ष के साथ आपके संबंध मधुर होंगे।

संतान

संतान की दृष्टि से यह वर्ष बहुत अच्छा नहीं रहेगा। वर्ष के पूर्वार्द्ध में आपके बच्चे को सफलता प्राप्ति के लिए अधिक परिश्रम करने की आवश्यकता है। दूसरी संतान के लिए समय अच्छा है। उसकी उन्नति के मार्ग प्रशस्त होंगे।

02 जून के बाद समय अधिक प्रभावित हो रहा है। उस समय पंचमस्थ राहु संतान संबंधित परेशानि उत्पन्न कर सकता है। गर्भवती स्त्रियों का गर्भपात हो सकता है। इस समय के अंतराल में बच्चे के स्वास्थ्य से संबंधित कोई भी लापरवाही नहीं करनी चाहिए। 31 अक्टूबर के बाद आपके बच्चों का उन्नति होगी।

स्वास्थ्य

स्वास्थ्य की दृष्टि से यह वर्ष अच्छा रहेगा। नवमस्थ गुरु की पंचम दृष्टि लग्न पर होगी उसके प्रभाव से शारीरिक आरोग्यता की प्राप्ति व कार्य क्षमताओं में वृद्धि के प्रबल संकेत है। मानसिक शांति, प्रसन्नता एवं सकारात्मक सोच में वृद्धि होगी।

वर्ष के उत्तरार्द्ध में स्वास्थ्य के प्रति ध्यान देना आवश्यक होगा। खाने-पीने की वस्तुओं में परहेज रखें। कभी कभी स्वस्थ रहते हुए भी कमजोरी जैसा अनुभव होता रहेगा। रात को जल्दी सोना और सुबह जल्दी उठकर घूमना आपके शरीर के लिए लाभदायक रहेगा।

करियर एवं प्रतियोगी परीक्षा

प्रतियोगिता परीक्षा की तैयारी करने वाले जातकों को सफलता प्राप्त होगी। जो व्यक्ति नौकरी की तलाश में हैं उनको नौकरी मिल सकती है। तकनीकी शिक्षा या व्यवसायिक शिक्षा के लिए भी यह समय श्रेष्ठतम रहेगा।

02 जून के बाद विद्यार्थियों के लिए समय बहुत अच्छा नहीं रहेगा।

पंचम स्थान का राहु उनकी शिक्षा में अवरोध उत्पन्न कर सकता है।

यात्रा—तबादला

वर्ष के पूर्वार्द्ध में छोटी—मोटी यात्राओं के साथ साथ आपकी लम्बी यात्राएं भी होंगी। ये यात्राएं आपके लिए अनुकूल या उन्नतिकारक भी सिद्ध हो सकती हैं। इन यात्राओं के दौरान आपकी किसी के साथ मित्रता भी हो सकती है। 02 जून के बाद नौकरी करने वाले व्यक्तियों का मानोनुकूल स्थान पर स्थानान्तरण होगा।

अपने घर से दूर रहने वाले व्यक्तियों की जन्म स्थल की यात्रा हो सकती है अथवा अपने पूरे परिवार सहित दर्शनीय स्थलों की यात्रा का आनन्द प्राप्त कर सकते हैं। द्वादश स्थान पर शनि ग्रह के दृष्टि प्रभाव से आपकी विदेश यात्रा होगी।

धर्म कार्य एवं ग्रह शांति

वर्ष के पूर्वार्द्ध में नवमस्थ गुरु के प्रभाव से आप कोई विशेष अनुष्ठान संपन्न करेंगे। आप योग, ध्यान, एवं अपने गुरु के द्वारा दिये गये मन्त्रों का पाठ करेंगे। गुरु ग्रह के गोचर के बाद आप दान पुण्य व गरीबों की सहायता अधिक करेंगे।

- प्रत्येक दिन सुबह स्नान के बाद सूर्य को जल दें।
- गणेशजी के मन्त्र का पाठ करें एवं नित्य प्राणायाम करें।
- एकनारियल अपने सिर से सात बार घुमाकर बहते हुए पानी में बहा दें।

वार्षिक फलादेश - 2027

वर्ष के पूर्वार्द्ध में मीनस्थ शनि छठे भाव में रहेंगे और 3 जून को मेष राशि एवं सप्तम भाव में प्रवेश करेंगे और वक्री होकर 03 अक्टूबर को फिर से मीन राशि एवं छठे भाव में आजाएंगे। मकर राशि के राहु इस वर्ष चतुर्थ भाव में रहेंगे। वक्री गुरु 25 जनवरी को कर्क राशि एवं दशम भाव में प्रवेश करेंगे और मार्गी होकर 26 जून को सिंह राशि एवं एकादश भाव में गोचर करेंगे और फिर से अतिचारी होकर 26 नवम्बर को कन्या राशि एवं द्वादश भाव में प्रवेश कर जाएंगे। 26 अप्रैल से 5 जुलाई तक मंगल वक्री होकर सिंह राशि एवं एकादश भाव में रहेंगे। 21 जुलाई से 7 सितम्बर तक शुक्र अस्त रहेंगे।

व्यवसाय

कार्य व्यवसाय की दृष्टि से यह वर्ष बहुत अच्छा रहेगा। आप अपने कार्य व्यवसाय में सफलता प्राप्त करेंगे। वर्ष के पूर्वार्द्ध में आप कोई नया कार्य प्रारम्भ कर सकते हैं या किसी अनुभवी व्यक्ति से मिल कर अपने व्यापार में उन्नति के लिए कोई नई योजना भी बना सकते हैं। चतुर्थस्थ राहु के प्रभाव से नौकरी करने वाले व्यक्तियों का अपने घर से दूर स्थानान्तरण हो सकता है। प्रोपर्टी से संबंधित काम करने वाले व्यक्तियों को अधिक लाभ प्राप्त नहीं होगा।

जून के बाद सप्तम स्थान पर शनि एवं गुरु ग्रह के गोचरीय प्रभाव से आपके कार्य व्यवसाय में उत्तम वृद्धि होगी। उच्च अधिकारियों व वरिष्ठ लोगों का सहयोग प्राप्त होगा। सफलता के पीछे आपकी पत्नी का पूर्ण सहयोग होगा। यदि आप साझेदारी में कोई कार्य कर रहे हैं, तो उसमें इच्छित लाभ प्राप्त होगा और अपने साझेदार से संतुष्ट रहेंगे।

धन संपत्ति

आर्थिक दृष्टिकोण से यह वर्ष उत्तम रहेगा। द्वितीय स्थान पर गुरु ग्रह की दृष्टि प्रभाव से रत्न, आभूषण इत्यादि वस्तुओं की प्राप्ति होगी। आपकी आर्थिक स्थिति में सुधार होगा। षष्ठस्थ शनि पर गुरु ग्रह की दृष्टि प्रभाव से आपके शत्रु पक्ष से आपको धन लाभ होगा। धन निवेश के लिए भी अच्छा समय चल रहा है।

जून के बाद एकादश स्थान में गुरु ग्रह के गोचरीय प्रभाव से आपका रुको हुआ धन मिल सकता है व धनागम में वृद्धि होगी। इस समय कर्ज इत्यादि से मुक्ति मिल सकती है। धन संचित करने में आपकी पत्नी का अहम सहयोग होगा। भाई-बहन या पुत्र के विवाह के अवसर पर भी धन खर्च हो सकता है।

घर—परिवार, समाज

पारिवारिक दृष्टिकोण से यह वर्ष सामान्य रहेगा। चतुर्थस्थ राहु के प्रभाव से आपके परिवार में विषमता की स्थिति बनी रहेगी। परिवार में एक दूसरे के प्रति वैचारिक मतभेद हो सकता है। परन्तु आप अपनी बौद्धिक शक्ति के अनुसार पारिवारिक वातावरण अनुकूल करने की कोशिश करेंगे और आप सफल भी होंगे। आपकी माता का स्वास्थ्य प्रतिकूल हो सकता है। दशमस्थ गुरु के कारण आपको पिता का अच्छा सहयोग मिलेगा।

26 जून के बाद आपको प्रेम प्रसंगों में सफलता मिलेगी। यदि आप अविवाहित हैं तो आपका विवाह हो जाएगा। विवाहित व्यक्तियों का धर्मपत्नी के साथ समन्वय मधुर होगा। तृतीय स्थान में गुरु ग्रह की दृष्टि प्रभाव से आपकी सामाजिक प्रतिष्ठा में वृद्धि होगी। आप सामाजिक कल्याण के लिए कुछ विशेष कार्य संपन्न करेंगे।

संतान

संतान की दृष्टि से वर्ष का पूर्वार्द्ध सामान्य रहेगा। आपके बच्चे अपने परिश्रम के बल पर आगे बढ़ेंगे। वे अपनी बौद्धिक शक्ति एवं कर्म के बल पर अपने लक्ष्य को प्राप्त करेंगे।

26 जून के बाद पंचम स्थान पर गुरु की दृष्टि प्रभाव से नव विवाहित व्यक्तियों को संतान रत्न की प्राप्ति हो सकती है। आपके बच्चों की उन्नति होगी। प्रथम संतान के विषय में शुभ समाचार प्राप्त होंगे। शिक्षा के क्षेत्र में भी प्रगति होने के शुभ योग बने हैं। यदि आपकी सन्तान विवाह योग्य है तो विवाह भी हो सकता है। यदि आप दूसरे बच्चे की इच्छा रखते हैं तो गर्भाधान के लिए उत्तम समय है। 26 नवम्बर के बाद समय कुछ प्रभावित हो सकता है। इस समयान्तराल में सन्तान पर अधिक ध्यान दें।

स्वास्थ्य

स्वास्थ्य की दृष्टि से यह वर्ष उत्तम रहेगा। शारीरिक रूप से स्वस्थ एवं मानसिक रूप से सन्तुष्ट रहेंगे। शनि एवं गुरु ग्रह का गोचर अनुकूल होने के कारण शारीरिक आरोग्यता अनुकूल बनी रहेगा। मौसम जनित बीमारियों से यदि आप परेशान होते हैं तो जल्दी ही अच्छे हो जाएंगे। आप अपने स्वास्थ्य को अनुकूल रखने के लिए शुद्ध एवं शाकाहारी भोजन ही करें।

जून के बाद गुरु ग्रह का गोचर और भी शुभ हो रहा है, लेकिन साथ ही लग्न स्थान पर शनि ग्रह की दृष्टि प्रभाव से मानसिक परेशानी या शारीरिक

आलस्यता बढ़ सकती है, जिसके फलस्वरूप आप बीमार हो सकते हैं। सुबह-सुबह व्यायाम करना आपके लिए लाभप्रद रहेगा। 26 नवम्बर के बाद आपका स्वास्थ्य प्रभावित हो सकता है।

करियर एवं प्रतियोगी परीक्षा

प्रतियोगिता परीक्षा के लिए छठे स्थान पर गुरु एवं शनि ग्रह के संयुक्त गोचरीय प्रभाव से आपको प्रतियोगिता परीक्षा में सफलता मिलने के प्रबल योग बन रहे हैं। इस समय के अंतराल में नौकरी भी मिल सकती है।

26 जून के बाद पंचम स्थान पर गुरु ग्रह की दृष्टि प्रभाव से विद्यार्थियों की शिक्षा के प्रति रुचि बढ़ेगी। व्यवसायिक शिक्षा प्राप्त करने वाले विद्यार्थियों के लिए समय अच्छा है।

यात्रा-तबादला

चतुर्थस्थ राहु के प्रभाव से अपने जन्म स्थल से दूर की यात्रा हो सकती है। स्थान परिवर्तन के योग भी बन रहे हैं। द्वादश स्थान पर शनि ग्रह की दृष्टि प्रभाव से आपकी विदेश यात्रा भी हो सकती है।

जून के बाद छोटी यात्राओं के साथ साथ आपकी लम्बी यात्राएं भी होंगी। वर्षान्त में जलीय स्थल या समुद्र के माध्यम से विदेश यात्रा भी हो सकती है।

धर्म कार्य एवं ग्रह शांति

धार्मिक कार्यों के लिए यह वर्ष अनुकूल रहेगा। वर्ष के पूर्वार्द्ध में अधिक व्यस्तता के कारण आप पूजा पाठ के लिए अधिक समय नहीं निकाल पाएंगे। चतुर्थ राहु के प्रभाव से आपके नित्य नैमित्य पूजा प्रभावित हो सकती है। 26 जून के बाद पंचम स्थान पर गुरु ग्रह की दृष्टि प्रभाव से आपके अंदर ईश्वर के प्रति श्रद्धा एवं विश्वास बढ़ेगा, जिसके फलस्वरूप आप निःस्वार्थ भाव से भगवान की पूजा व सत्कर्म करेंगे। 26 नवम्बर के बाद आप दान पुण्य अधिक करेंगे।

- घर में श्रीयन्त्र स्थापित करें और नित्य उसके सामने देशी घी का दीपक जलाएं।
- सूर्योदय के समय सूर्य को अर्घ्य दें।
- प्रत्येक दिन प्राणायाम करें।

- अपने माता—पिता की सेवा करें।

वार्षिक फलादेश - 2028

वर्षारम्भ में मीन राशि के शनि छटे भाव में रहेंगे और 23 फरवरी को मेष राशि एवं सप्तम भाव में प्रवेश करेंगे। राहु वर्ष के शुरु में मकर राशि एवं चतुर्थ भाव में रहेंगे और 24 मई को धनु राशि एवं तृतीय भाव में प्रवेश करेंगे। वर्षारम्भ में कन्या राशि के गुरु द्वादश भाव में रहेंगे और वक्री होकर 28 फरवरी को सिंह राशि एवं एकादश भाव में प्रवेश करेंगे और फिर से मार्गी होकर 24 जुलाई को कन्या राशि एवं द्वादश भाव में प्रवेश करेंगे। इस वर्ष मंगल ग्रह अपनी सरल गति से गोचर करेंगे। 28 मई से 6 जून तक शुक्र अस्त रहेंगे।

व्यवसाय

व्यावसायिक रूप से वर्ष का प्रारम्भ सामान्य रहेगा। पारिवारिक परेशानी के कारण आपका कार्य व्यवसाय प्रभावित हो सकता है। परन्तु छटे स्थान का शनि आपको सफलता के लक्ष्य तक अवश्य पहुंचाएगा। फरवरी के बाद बड़े अधिकारियों या अनुभवी लोगों का सहयोग मिलेगा। जिसका उचित लाभ उठाकर आप अपने व्यापार में उन्नति करेंगे। यदि आप किसी के साथ मिलकर कार्य कर रहे हैं तो सफलता मिलेगी। चतुर्थ स्थान का राहु नौकरी करने वाले जातकों का स्थान परिवर्तन करा सकता है।

24 जुलाई से गुरु ग्रह का गोचर फिर से प्रतिकूल हो रहा है। आपको धोखा या व्यापार में हानि हो सकती है। गुप्त शत्रु व विरोधियों द्वारा आपके कार्यों में रुकावटें डालने की कोशिश की जा सकती है। अतः आपको सकारात्मक सोच में वृद्धि कर अपना आत्मविश्वास बनाए रखना होगा। राहु एवं शनि ग्रह का गोचर अनुकूल होने के कारण आप अपने शत्रुओं पर विजय प्राप्त कर लेंगे।

धन संपत्ति

आर्थिक रूप से वर्ष का प्रारम्भ सामान्य रहेगा। कुछ अनावश्यक खर्च बढ़ सकते हैं। पारिवारिक खर्च अधिक होने के कारण इच्छित बचत नहीं कर पाएंगे। 28 फरवरी से एकादश स्थान में गुरु के गोचरीय प्रभाव के चलते आपके आय के स्रोत बढ़ेंगे जिससे आपकी आर्थिक स्थिति में सुधार होना शुरु हो जाएगा। पुराने चले आ रहे ऋण इत्यादि से मुक्ति मिल सकती है। फंसा हुआ या रुका हुआ धन वापस मिल सकता है।

24 जुलाई के बाद गुरु ग्रह का गोचर फिर से प्रभावित हो रहा है। उस समय कुछ ऐसे खर्च आ जाएंगे जिससे आपकी आर्थिक स्थिति कमजोर हो

सकती है। अतः किसी प्रकार के जोखिम भरे कार्यों में धन निवेश न करे। लेन-देन के मामले में हमेशा सावधान रहें। परिवार के किसी सदस्य के स्वास्थ्य पर भी आपका पैसा खर्च हो सकता है।

घर-परिवार, समाज

वर्ष का प्रारम्भ पारिवारिक वातावरण के लिए अनुकूल नहीं है। चतुर्थ स्थान के राहु आपके परिवार में विषम परिस्थिति उत्पन्न कर देंगे, जिससे पारिवारिक अनुकूलता भंग हो सकती है। साथ ही परिवार में किसी बड़े व्यक्ति के साथ आपका वैचारिक मतभेद हो सकता है। अतः अच्छा यही होगा की आप अपनी सहनशक्ति को बढ़ाएं, नहीं तो उनके साथ आपके संबंध खराब हो सकते हैं। मातुल पक्ष के लोगों के साथ आपका अच्छा संबंध बना रहेगा। फरवरी से आपको भाईयों सहयोग मिलेगा।

24 मई से घरेलू वातावरण अच्छा होना शुरू हो जाएगा। आपके परिवार में सुख शान्ति का वातावरण बना रहेगा। तृतीयस्थ राहु के प्रभाव से सामाजिक पद व प्रतिष्ठा में वृद्धि होगी। समाज में आपका मान-सम्मान बढ़ेगा। जन कल्याण के लिए आप कोई विशेष कार्य संपन्न करेंगे। सप्तमस्थ शनि आपकी पत्नी का स्वास्थ्य प्रभावित कर सकते हैं। अतः उनको स्वास्थ्य से संबंधित किसी प्रकार की लापवाही नहीं बरतनी चाहिए।

संतान

वर्ष के प्रारम्भ में संतान संबंधित चिन्ताएं बनी रहेंगी। द्वादश स्थान के गुरु बच्चे के स्वास्थ्य को प्रभावित कर सकते हैं जिससे उसकी शिक्षा-दीक्षा भी प्रभावित हो सकती है। 28 फरवरी से गुरु ग्रह का गोचर एकादश स्थान में हो रहा है जिसके बाद अचानक आपके बच्चों के स्वास्थ्य में सुधार होना शुरू हो जाएगा।

आपके बच्चे अपने बौद्धिक बल से आगे बढ़ेंगे। परिश्रम के बल पर अपने लक्ष्य को प्राप्त करेंगे। 24 जुलाई से समय फिर से प्रभावित हो रहा है जिसके फलस्वरूप आपके बच्चों की उन्नति रुक सकती है।

स्वास्थ्य

स्वास्थ्य की दृष्टि से वर्ष का प्रारम्भ अच्छा नहीं रहेगा। द्वादशस्थ गुरु के कारण स्वास्थ्य संबंधित चिन्ताएं बनी रहेंगी। मौसमजनित बीमारियों से आप परेशान होते रहेंगे परन्तु 28 फरवरी के बाद एकादश स्थान में गुरु ग्रह के गोचरीय प्रभाव से आप जल्दी ही अच्छे हो जाएंगे।

24 जुलाई के बाद बीमारी, दुर्घटना या किसी प्रकार के शरीरिक कष्ट का सामना करना पड़ सकता है। द्वादशस्थ गुरु के प्रभाव से मोटापा एवं लीवर से सम्बन्धित बीमारियां हो सकती हैं। ऐसे में स्वास्थ्य का ख्याल रखना जरूरी होगा। सुबह सुबह व्यायाम या योगा करना आपके लिए लाभप्रद रहेगा नहीं तो आपका स्वास्थ्य प्रतिकूल हो सकता है।

करियर एवं प्रतियोगी परीक्षा

वर्ष का पूर्वार्द्ध करियर एवं प्रतियोगिता परीक्षा के लिए श्रेष्ठतम रहेगा। षष्ठस्थ शनि के प्रभाव से आप सारे शत्रुओं को पछाड़कर अपने करियर में आगे बढ़ेंगे। फरवरी के बाद से विद्यार्थियों के लिए समय बहुत उत्तम है। तकनीकी शिक्षा अथवा व्यवसायिक शिक्षा प्राप्त करने वाले विद्यार्थी अपने लक्ष्य में सफल रहेंगे।

24 जुलाई के बाद समय फिर से प्रभावित हो रहा है। आपकी शिक्षा में रुकावटें आ सकती हैं। आलस्य की भावना आपकी उच्च शिक्षा में व्यवधान डाल सकती है। प्रतियोगिता परीक्षार्थियों को उस समय सफलता प्राप्ति के लिए अधिक परिश्रम करने की आवश्यकता होगी।

यात्रा-तबादला

वर्ष के प्रारम्भ में ही आपकी विदेश यात्रा होगी। छोटी-मोटी यात्राएं तो होती रहेंगी परन्तु 23 फरवरी के बाद लम्बी यात्राएं भी खूब होंगी।

नौकरी करने वाले व्यक्तियों का अपने घर से दूर स्थानान्तरण हो सकता है। यह स्थानान्तरण आपके प्रतिकूल स्थान पर होगा।

धर्म कार्य एवं ग्रह शांति

वर्ष के प्रारम्भ में आप दान पुण्य अधिक करेंगे। भण्डारा, गरीबों को दान और दूसरे की सहायता करना आपका नैसर्गिक गुण होगा। फरवरी के बाद एकादशस्थ गुरु ग्रह के प्रभाव से आपका मन पूजा-पाठ के प्रति ज्यादा आकर्षित रहेगा। परमात्मा की भक्ति एवं मन्त्र पाठ में रुचि लेंगे। सप्तमस्थ शनि ग्रह के प्रभाव से आप अपनी धर्मपत्नी के साथ कोई विशेष पूजा-पाठ करेंगे। जैसे- माता का जागरण, चौकी, अखण्ड रामायण पाठ इत्यादि।

- द्विज, देव, ब्राह्मण, बुजुर्ग, गुरु व मंदिर के पूजारी की सेवा, सुश्रूषा करें।
- पीली दाल, केला व बेसन की मिठाई मंदिर में दान करें एवं गुरुवार का व्रत

करें।

- गणेशजी के मन्त्र का पाठ करें। बुधवार के दिन गणेशजी को दूर्वा चढ़ाएं।
- शनिवार के दिन काले कुत्ते को रोटी खिलाएं।

वार्षिक फलादेश - 2029

वर्ष के पूर्वार्द्ध में मेष राशि के शनि सप्तम भाव में रहेंगे और 08 अगस्त को वृष राशि एवं अष्टम भाव में प्रवेश करेंगे और वक्री होकर फिर से 05 अक्टूबर को मेष राशि एवं सप्तम भाव में आ जाएंगे। धनु राशि के राहु तृतीय भाव में रहेंगे। वर्षारम्भ में तुला राशि के गुरु लग्न स्थान में रहेंगे और वक्री होकर 29 मार्च को कन्या राशि एवं द्वादश भाव में प्रवेश करेंगे और फिर से मार्गी होकर 25 अगस्त को तुला राशि एवं लग्न स्थान में आ जाएंगे। वक्री मंगल 27 जुलाई तक कन्या राशि एवं द्वादश भाव में रहेंगे। 15 फरवरी से 16 अप्रैल तक शुक्र अस्त रहेंगे।

व्यवसाय

वर्ष का प्रारम्भ व्यावसायिक उन्नति के साथ होगा। सप्तम स्थान पर गुरु एवं शनि ग्रह के संयुक्त गोचरीय प्रभाव से आपको व्यापार में अच्छा लाभ मिलेगा। वरिष्ठ लोगों का सहयोग प्राप्त होता रहेगा। 29 मार्च से कार्य व्यवसाय में कुछ व्यवधान आ सकता है। गुप्त शत्रुओं द्वारा कार्यों में रुकावटें डाली जा सकती हैं। अतः इस समय के अंतराल में आपको कोई नया कार्य प्रारम्भ नहीं करना चाहिए। पहले से चले आ रहे व्यापार को और अच्छे ढंग से चलाना चाहिए।

05 अक्टूबर के बाद समय फिर से बहुत अच्छा हो रहा है। आपको व्यापार व कार्य क्षेत्र में सफलता मिलना शुरू हो जाएगा। भाग्य अनुकूल होने के कारण उन्नति के श्रेष्ठ योग बन रहे हैं। यदि आप साझेदारी में व्यवसाय कर रहे हैं तो इच्छित लाभ की प्राप्ति होगी। आपके मित्र आपको पूर्ण सहयोग प्रदान करेंगे। सट्टा, शेयर बजार से जुड़े व्यक्तियों को लाभ प्राप्त होगा। नौकरी करने वाले व्यक्तियों को अपने कार्यस्थल पर ही मान-सम्मान मिलेगा।

धन संपत्ति

वर्ष का प्रारम्भ आर्थिक उन्नति के लिए अच्छा रहेगा। आय में अनुकूलता बनी रहेगी परन्तु 29 मार्च के आय के मार्ग प्रभावित होंगे जिससे आपके आर्थिक क्षेत्र में उतार-चढ़ाव की स्थिति बन सकती है इसलिए आपको आर्थिक मामलों में विशेष सावधानी से काम लेना चाहिए। कुछ खर्चे अचानक आपकी आर्थिक स्थिति को बिगाड़ सकते हैं। अतः अभी से अतिरिक्त धन का संचय कर सकते हैं।

05 अक्टूबर के बाद समय फिर से अच्छा हो रहा है। आप के रुके हुए पैसे मिल सकते हैं जिससे आर्थिक स्थिति में कुछ सुधार होना शुरू हो

जाएगा। सप्तम स्थान पर गुरु की दृष्टि प्रभाव से पत्नी या मित्रों से लाभ होगा। अपने व्यापार को और आगे बढ़ाने में भी धन व्यय करेंगे।

घर—परिवार, समाज

वर्षारम्भ में परिवार में सुख शान्ति का वातावरण बना रहेगा। छोटे भाईयों का अच्छा सहयोग मिलेगा परन्तु 29 मार्च के बाद गुरु का गोचर प्रतिकूल होने से पारिवारिक अनुकूलता भी भंग हो सकती है। परिवार में एक—दूसरे के प्रति वेमनस्य की भावना उत्पन्न हो सकती है। परिवार में कुछ लोगों का वर्तव अच्छा नहीं रहेगा। ऐसे में आपको अपने विवेक से काम लेने होगा। 25 अगस्त के बाद ससुराल पक्ष के लोगों के साथ संबंध खराब हो सकते हैं।

05 अगस्त के बाद समय फिर से अच्छा हो रहा है। आपके परिवार में पुत्रादि का विवाह या कोई मांगलिक कार्य संपन्न होगा। उसमें आपकी अहम भूमिका होगी। सप्तम स्थान पर गुरु की दृष्टि प्रभाव से पत्नी के साथ आपके सम्बन्ध मधुर होंगे। तृतीयस्थ राहु के प्रभाव से सामाजिक पद—प्रतिष्ठा के लिए यह वर्ष श्रेष्ठ रहेगा।

संतान

वर्ष का प्रारम्भ संतान के लिए अच्छा रहेगा। पंचम भाव पर गुरु के दृष्टि प्रभाव से आपके बच्चों की उन्नति के अच्छे योग बन रहे हैं। शिक्षा के क्षेत्र में उनकी रुचि बढ़ेगी। यदि वे उच्च शिक्षा प्राप्त करना चाहते हैं, तो अच्छे शैक्षणिक संस्थान में उनका प्रवेश हो जाएगा।

आपके दूसरे बच्चे के लिए भी समय बहुत अच्छा है। उसका विवाह भी हो सकता है। 29 मार्च से 25 अगस्त तक का समय प्रभावित रहेगा। उसके बाद का समय अच्छा रहेगा।

स्वास्थ्य

स्वास्थ्य की दृष्टि से वर्ष का प्रारम्भ उत्तम रहेगा। लग्नस्थ गुरु पर शनि की दृष्टि आपकी सेहत के लिए उत्तम है। यदि आप बीमार भी होते हैं तो आपकी सेहत शीघ्र ही अच्छी हो जाएगी। आपकी आरोग्यता व कार्यक्षमता में वृद्धि होगी। 29 मार्च के बाद अचानक आपके स्वास्थ्य में उतार—चढ़ाव की स्थिति बन सकती है। कफ, मधुमेह एवं पेट संबंधित बीमारियों के कारण आप परेशान हो सकते हैं। मौसमजनित बीमारियों से भी बचें।

25 अगस्त के बाद स्वास्थ्य में सुधार आना शुरू हो जाएगा। अच्छे स्वास्थ्य के लिए आप का खान—पान एवं दिनचर्या भी सुधरेगी। सकारात्मक ऊर्जा

का संचार होगा जिससे रोगप्रतिरोधक शक्ति और अतिरिक्त मानसिक ऊर्जा प्राप्त होगी।

करियर एवं प्रतियोगी परीक्षा

वर्ष का प्रारम्भ विद्यार्थियों के लिए उत्तम रहेगा। व्यवसायिक व्यक्तियों को अच्छा लाभ मिलेगा। तकनीकी शिक्षा या व्यावसायिक शिक्षा प्राप्त करने वाले विद्यार्थियों को सफलता मिलेगी। 29 मार्च के बाद समय कुछ प्रभावित हो रहा है। उस समय प्रतियोगिता परीक्षार्थियों को सफलता प्राप्ति के लिए अथक प्रयास करना पड़ेगा।

25 अगस्त के बाद समय फिर से अनुकूल हो रहा है। आप पढ़ाई-लिखाई में आगे रहेंगे। यदि आप उच्च शिक्षा प्राप्त करना चाहते हैं तो अच्छे शैक्षणिक संस्थान में आपका प्रवेश हो जाएगा।

यात्रा-तबादला

तृतीयस्थ राहु के प्रभाव से वर्षारम्भ से ही छोटी-मोटी यात्राएं होती रहेंगी। ज्यादातर यात्राएं अचानक होंगी। 29 मार्च के बाद द्वादशस्थ गुरु विदेश यात्रा के प्रबल योग बना रहे हैं।

25 अगस्त के बाद नवम स्थान पर गुरु ग्रह की दृष्टि प्रभाव से आपकी लम्बी यात्राएं होंगी। यात्रा के दौरान या वाहन चलाते समय सावधानी बहुत बरतें, क्योंकि अष्टम स्थान का शनि यात्रा के लिए शुभ नहीं होता।

धर्म कार्य एवं ग्रह शांति

वर्षारम्भ में लग्न, पंचम व नवम इन तीनों त्रिकोण भावों पर गुरु के गोचरीय प्रभाव के चलते आप ईश्वर भक्ति, योग, तीर्थाटन तथा गुरु भक्ति या गुरु दीक्षा लेने जैसी गतिविधियों में रुचि लेने के अतिरिक्त पूजा-पाठ, मंत्र जाप तथा यज्ञ आदि कर्म अधिक करेंगे।

- माता-पिता, गुरु, साधू, संन्यासी और अपने से बड़े लोगों का आशीर्वाद प्राप्त करें।
- मंदिर या धार्मिक स्थानों पर केला या बेसन के लड्डू वितरित करें।
- प्रत्येक दिन हनुमान चालीसा का पाठ करें।
- शनिवार के दिन लोहे का तवा गरीब व्यक्ति को दान करें।

वार्षिक फलादेश - 2030

वर्षारम्भ में मेष राशि के शनि सप्तम भाव में रहेंगे और 17 अप्रैल को वृष राशि एवं अष्टम भाव में प्रवेश करेंगे धनु राशि के राहु तृतीय भाव में रहेंगे और 04 फरवरी को वृश्चिक राशि एवं द्वितीय भाव में प्रवेश करेंगे। 25 जनवरी को गुरु वृश्चिक राशि एवं द्वितीय भाव में प्रवेश करेंगे और वक्री होकर 01 मई को तुला राशि एवं लग्न स्थान में गोचर करेंगे और फिर से मार्गी होकर 23 सितम्बर को वृश्चिक राशि एवं द्वितीय भाव में आ जाएंगे। इस वर्ष मंगल अपनी सरल गति से गोचर करेंगे 27 सितम्बर से 18 नवम्बर तक शुक्र अस्त रहेंगे

व्यवसाय

व्यावसाय से जोड़ कर देखा जाए तो वर्ष का प्रारम्भ बहुत ही हितकारी होगा। आपको प्रतीत होगा कि आपके कुछ सपने अभी भी अधूरे हैं और इसलिए इस साल आप उन सपनों को पूरा करने के लिए अधिक मेहनत करेंगे और अपने सपनों को साकार करेंगे। मुख्यतः ग्रहों के गोचर अनुकूल होने के कारण किसी भी समस्या का समाधान करना आपके लिए आसान होगा जिसके चलते आप अपने अधिकारियों की नजरों में आएंगे।

17 अप्रैल के बाद अष्टम स्थान के शनि व्यावसायिक जीवन में उतार-चढ़ाव की स्थिति बना रहे हैं। इस अवधि में आपका अपने प्रति विश्वास ही आपको लगातार विजय दिलाएगा। आप अपने कार्यों को अंजाम तक पहुंचान में कुछ कठिनाईयों का अनुभव करेंगे। आपके कार्यों में गुप्त शत्रुओं द्वारा रूकावटें डाली जा सकती हैं। इसलिए बिना किसी पर विश्वास किये आप अपनी बौद्धिक क्षमता के अनुसार अपना कार्य करते रहें।

धन संपत्ति

वर्ष का प्रारम्भ आपके लिए सिर्फ लाभ को दर्शाता है। अपने लक्ष्य के प्रति आपका उत्साह उजागर हो जाएगा। निवेश करने के लिए भी यह एकदम उपयुक्त समय होगा। द्वितीयस्थ गुरु के प्रभाव से रत्न आभूषण इत्यादि वस्तुओं की प्राप्ति होगी। संचित धन में भी वृद्धि होगी।

अप्रैल के बाद राहु एवं शनि ग्रह का गोचर प्रतिकूल होने से आर्थिक समृद्धि में कमी आएगी। द्वितीय स्थान का राहु अचानक कुछ ऐसे खर्च ला देगा जिसके चलते आपको आर्थिक तंगी आ सकती है। अतः इस समय के अंतराल में कोई बड़ा निर्णय लेने से पहले उस क्षेत्र से जुड़े लोगों की सलाह अवश्य लें, नहीं तो पैसा फंस सकता है।

घर—परिवार, समाज

वर्षारम्भ से ही आपके परिवार में खुशी का माहौल बना रहेगा। परिवार में एक—दूसरे के प्रति परस्पर सहयोग की भावना उत्पन्न होगी जिससे आपस में भावनात्मक लगाव बढ़ेगा।

राहु ग्रह का गोचर पारिवारिक वातावरण के लिए शुभ नहीं है। परिवार के कुछ लोगों का बर्ताव अच्छा नहीं रहेगा। उस समय आपको अपनी वाणी पर नियन्त्रण रखना होगा। ससुराल पक्ष के लोगों के साथ आपके संबंध अच्छे नहीं रहेंगे। वर्ष के उत्तरार्द्ध में आप सामाजिक गतिविधियों में कम ही भाग लेंगे।

संतान

यह वर्ष संतान के लिए श्रेष्ठ रहेगा। वर्ष का प्रथम माह बच्चों के लिए अच्छा रहेगा। 04 फरवरी से राहु एवं गुरु की युति संतान के लिए अच्छा नहीं है। इस समय के अंतराल में संतान संबंधित चिंताएं बढ़ सकती हैं। अतः उनके स्वास्थ्य एवं पढ़ाई—लिखाई पर आपको विशेष ध्यान देना चाहिए।

1 मई से गुरु ग्रह का गोचर शुभ होने से आपके बच्चों की उन्नति होगी। आप अपने बच्चों से जितनी अपेक्षा रखते हैं वे उससे भी अच्छा करेंगे। संतान इच्छित व्यक्तियों के लिए यह उत्तम समय चल रहा है। आपके बच्चों के साथ मधुर संबंधों में वृद्धि होगी जिससे आपके घरेलू वातावरण में भी सुधार होगा।

स्वास्थ्य

लग्न स्थान पर शनि की दृष्टि स्वास्थ्य के लिए अच्छी नहीं होती अतः आपको अपने स्वास्थ्य के प्रति थोड़ा सतर्क रहने की आवश्यकता है ताकि आप अपने जीवन का भरपूर लाभ उठा सकें। फिर चाहे व्यावसायिक जीवन हो या व्यक्तिगत जीवन, यदि आप स्वस्थ नहीं होंगे तो इसका बुरा असर आपके जीवन पर पड़ेगा।

राहु ग्रह का गोचर आपके स्वास्थ्य के लिए और प्रतिकूल हो रहा है। अतः आप खुद को बीमार होने से बचाएं। इस दौरान आप तनाव से भी ग्रसित हो सकते हैं। स्वस्थ रहने के लिए आप योग, ध्यान या सुबह—सुबह व्यायाम नियमित रूप से करें।

करियर एवं प्रतियोगी परीक्षा

वर्ष का प्रथम माह विद्यार्थियों के लिए उत्तम रहेगा। करियर में

सफलता प्राप्ति के लिए लगातार परिश्रम करने की आवश्यकता है। व्यावसायिक शिक्षा व तकनीकी शिक्षा प्राप्त करने वालों के लिए यह समय श्रेष्ठ है।

17 अप्रैल के बाद समय कुछ प्रभावित हो रहा है। इस समय आपको अपना आत्मविश्वास बनाए रखना होगा। अपने मन को लक्ष्य के प्रति केन्द्रित कर तैयारी करते रहना चाहिए क्योंकि आपकी मेहनत ही आपको लक्ष्य तक पहुंचाएगी।

यात्रा—तबादला

तृतीयस्थ राहु के प्रभाव से आपके छोटी—मोटी यात्राएं तो होती रहेंगी परन्तु 01 मई से नवम स्थान पर गुरु ग्रह की दृष्टि के कारण आपकी लम्बी यात्राएं भी होंगी। इस समय आपकी व्यवसाय से संबंधित यात्रा हो सकती है।

यात्रा करते समय या वाहन चलाते समय सावधानी बहुत जरूरी है, क्योंकि शनि एवं राहु ग्रह का गोचर प्रतिकूल होने से वाहन दुर्घटना या यात्रा के अंतराल चोरी होने के प्रबल संकेत है।

धर्म कार्य एवं ग्रह शांति

धार्मिक कार्यों के लिए वर्ष का प्रारम्भ सामान्य रहेगा परन्तु 1 मई से नवम स्थान पर गुरु ग्रह की दृष्टि प्रभाव से धार्मिक कार्यों के प्रति आपकी रुचि बढ़ेगी।

- शनिवार के दिन काली वस्तु का दान करें। शनि मन्त्र का पाठ करें।
- प्रत्येक मंगलवार के दिन हनुमान जी को चोला चढ़ाए।
- दुर्गा जी की उपासना करें या दुर्गा बीसा कवच गले में धारण करें।

वार्षिक फलादेश - 2031

इस वर्ष वृष राशि के शनि अष्टम भाव में रहेंगे। वर्ष के पूर्वार्द्ध में वृश्चिक राशि के राहु द्वितीय भाव में रहेंगे और 9 अगस्त को तुला राशि एवं लग्न स्थान में प्रवेश करेंगे। वर्षारम्भ में वृश्चिक राशि के गुरु द्वितीय भाव में रहेंगे और 17 फरवरी को धनु राशि एवं तृतीय भाव में प्रवेश करेंगे और वक्री होकर 14 जून को वृश्चिक राशि एवं द्वितीय भाव में गोचर करेंगे और फिर मार्गी होकर 15 अक्टूबर को धनु राशि एवं तृतीय भाव में आ जाएंगे। 4 जनवरी से 15 अगस्त तक मंगल वक्री होकर तुला राशि एवं लग्न स्थान में रहेंगे। 2 अगस्त से 15 अगस्त तक शुक्र अस्त रहेंगे।

व्यवसाय

व्यावसायिक रूप से वर्ष का प्रारम्भ बहुत अच्छा नहीं रहेगा। राहु एवं शनि ग्रह का गोचर प्रतिकूल होने के कारण व्यावसायिक जीवन में व्यवधान आएगा। इस समय के अंतराल में किसी पर विश्वास करना या कोई नया कार्य प्रारम्भ करना आपके हित में नहीं रहेगा। गुरु ग्रह के गोचर के बाद समय कुछ अच्छा होगा। नए रोजगार, पदोन्नति या किसी व्यवसाय में साझेदार के साथ एक सफल योजना बना सकते हैं।

9 अगस्त के बाद कार्यस्थल पर वैचारिक मतभेद उत्पन्न हो सकते हैं। यदि आप साझेदारी में काम कर रहे हैं तो आप अपने साझेदार से असंतुष्ट रहेंगे। गुप्त या प्रत्यक्ष शत्रुओं द्वारा आपके कार्यों में रुकावटें डाली जा सकती हैं। ऐसे में आपको बिना किसी पर विश्वास किये अपने आत्मविश्वास के साथ काम करते रहना चाहिए।

धन संपत्ति

आर्थिक दृष्टि से वर्ष का प्रारम्भ बढ़िया नहीं रहेगा। द्वितीय स्थान में ग्रह गोचर धन संचय में कमी करेगा। अचानक कुछ ऐसे खर्चे आ जाएंगे जिससे आपकी आर्थिक स्थिति कमजोर हो सकती है। इस समय आपको बड़े निवेश या खरीदारी से बचना होगा।

अगस्त के बाद आपको लाभ होगा। व्यावसायियों को अपने व्यवसाय का विस्तार करने के लिए लुभावने अवसर मिलेंगे। 15 अक्टूबर के बाद रत्न, आभूषण इत्यादि वस्तु की प्राप्ति हो सकती है। पुराने चले आ रहे कर्ज इत्यादि से मुक्ति मिल जाएगी। यदि आप धन निवेश करना चाह रहे हैं तो यह समय आपके लिए अनुकूल है।

घर—परिवार, समाज

द्वितीय स्थान में गुरु एवं राहु की युति के प्रभाव से आपका पारिवारिक वातावरण अनुकूल रहेगा। गुरु ग्रह का गोचर आपके भाईयों के लिए बहुत शुभ रहेगा। सामाजिक पद प्रतिष्ठा में वृद्धि होगी। सामाजिक गतिविधियों में आप बढ़-चढ़ कर भाग लेंगे। समाज उत्थान या सामाजिक कल्याण के लिए आप कोई विशेष कार्य भी संपन्न करेंगे।

9 अगस्त के बाद आपके परिवार में किसी सदस्य की वृद्धि होगी जिससे आपके परिवार में खुशी का माहौल बना रहेगा। इस वर्ष आपके परिवार में मांगलिक कार्य भी अधिक होंगे।

संतान

वर्षारम्भ से 18 फरवरी तक का समय संतान के लिए अच्छा नहीं रहेगा। 9 अगस्त से आपके बच्चों की उन्नति होगी और उनके साथ संबंधों में मधुरता आएगी। आपके घरेलू वातावरण में भी सुधार होगा।

आपकी दूसरे संतान के लिए यह समय श्रेष्ठतम है। यदि आपका दूसरा बच्चा विवाह के योग्य है। तो उसका विवाह हो सकता है।

स्वास्थ्य

वर्ष का पूर्वार्द्ध स्वास्थ्य के लिए अच्छा नहीं रहेगा। लग्नस्थ मंगल के प्रभाव से कुछ न कुछ परेशानी बनी रहेगी। मौसमजनित बीमारियों से भी आप परेशान होते रहेंगे। यदि पहले से किसी लम्बी बीमारी से परेशान हैं तो परहेज की ज्यादा आवश्यकता है। गुरु ग्रह के गोचर के बाद समय कुछ अच्छा होगा। आप मानसिक रूप से संतुष्ट व शारीरिक रूप से रोग मुक्त रहेंगे।

9 अगस्त से राहु का गोचर लग्न स्थान में होने के कारण अचानक आप फिर से बीमार हो सकते हैं। ऐसे में अपने स्वास्थ्य को अनुकूल रखने के लिए नियमित व्यायाम या योग करना आपके लिए लाभप्रद रहेगा। कुछ समय ऐसा भी आएगा जब आप खुद को थका हुआ महसूस करेंगे किन्तु कोई बड़ी स्वास्थ्य संबंधित समस्या का सामना नहीं करना पड़ेगा। अतः आप तनाव व चिंतामुक्त रहें।

करियर एवं प्रतियोगी परीक्षा

वर्षारम्भ में आपको गुप्त शत्रुओं का सामना करना पड़ सकता है। 18 फरवरी के बाद भाग्य का सहयोग पूर्ण रूप से मिलने के फलस्वरूप प्रतियोगियों

को परास्त कर आप अपने लक्ष्य को प्राप्त करेंगे। विद्यार्थियों को नये-नये तकनीकी विषय की ओर रुझान होगा। मैनेजमेंट, प्रशासनिक सेवा, शिक्षण से जुड़े लोगों को रिसर्च व ट्रेनिंग के सिलसिले में विदेश जाने का मौका मिल सकता है।

9 अगस्त के बाद लग्नस्थ राहु के प्रभाव से आप अचानक आलसी हो जाएंगे और यही आलस्य आपकी सफलता में रुकावट उत्पन्न करेगा। यदि आप नौकरी की तलाश में हैं तो 15 अक्टूबर के बाद नौकरी मिलेगी।

यात्रा-तबादला

वर्ष का प्रारम्भ यात्रा की दृष्टि से अनुकूल है। 18 फरवरी के बाद गुरु ग्रह के गोचरीय प्रभाव से छोटी-मोटी यात्राओं के साथ आपकी लम्बी यात्राएं भी होंगी।

नवम स्थान पर गुरु ग्रह की दृष्टि प्रभाव से आप धार्मिक तीर्थ यात्रा भी करेंगे। 14 जून के बाद विदेश यात्रा भी हो सकती है।

धर्म कार्य एवं ग्रह शांति

वर्षारम्भ में घरेलू परेशानी के कारण धार्मिक कार्य कम ही करेंगे। राहु एवं गुरु ग्रह की युति आपके दैनिक पूजा पाठ भी प्रभावित कर सकती है। अष्टमस्थ शनि के कारण तन्त्र, मन्त्र, यन्त्र इत्यादि के प्रति आपका आकर्षण बढ़ेगा। गुप्त विद्या या तान्त्रिक क्रियाओं की सिद्धि के लिए आप साधना भी कर सकते हैं।

- मंगलवार के दिन हनुमान जी को लड्डू का भोग लगाकर गरीब लोगों को बांट दें।
- प्रत्येक दिन हनुमान चालीसा का पाठ करें।
- दुर्गा जी की उपासना करें या राहु मन्त्र का पाठ करें।

वार्षिक फलादेश - 2032

वर्षारम्भ में शनि वृष राशि एवं अष्टम भाव में होंगे और 31 मई को मिथुन राशि एवं नवम भाव में प्रवेश करेंगे। तुला राशि के राहु लग्न स्थान में रहेंगे। वर्षारम्भ में धनु राशि के गुरु तृतीय भाव में रहेंगे और 5 मार्च को मकर राशि एवं चतुर्थ भाव में गोचर करेंगे और वक्री होकर 12 अगस्त को धनु राशि एवं तृतीय भाव में आजाएंगे और पुनः मार्गशीर्ष होकर 23 अक्टूबर को मकर राशि एवं चतुर्थ भाव में प्रवेश करेंगे। इस वर्ष मंगल अपनी सरल गति से गोचर करेंगे।

व्यवसाय

कार्य व्यवसाय के लिए यह वर्ष बहुत अच्छा नहीं रहेगा। अष्टमस्थ शनि के कारण व्यावसायिक जीवन में थोड़े बहुत झटके आएंगे। आपके कार्यों में गुप्त शत्रु या विरोधियों द्वारा रूकावटें डाली जा सकती हैं। बिना किसी पर विश्वास किये आपको अपना कार्य करते रहना चाहिए और इस अंतराल में जल्दबाजी में कोई महत्वपूर्ण निर्णय नहीं लेना चाहिए नहीं तो उसका परिणाम प्रतिकूल होगा।

गुरु ग्रह के गोचर के बाद नौकरी करने वाले व्यक्तियों का अनुकूल स्थान पर स्थानान्तरण होगा। जो व्यक्ति नए रोजगार की तलाश में है उन्हें शनि के गोचर के बाद सफलता अवश्य मिलेगी। उस समय आप अपने सपनों को साकार करने के लिए अपने लक्ष्यों की ओर बेझिझक, पूर्ण विश्वास के साथ बढ़ेंगे।

धन संपत्ति

आर्थिक रूप से यह वर्ष अनुकूल नहीं रहेगा। वर्ष से प्रारम्भ में ही कुछ ऐसे खर्च आ जाएंगे जिससे आर्थिक स्थिति कमजोर हो सकती है। अष्टमस्थ शनि के कारण धोखा या धन हानि का योग बना हुआ है। अतः शीघ्र पैसा कमाने वाले तरीकों पर अंकुश लगाना होगा। जोखिम भरे कार्य में निवेश करने से बचें अन्यथा आपको हानि हो सकती है।

पारिवारिक सदस्य की बीमारी दूर करने में भी आपका पैसा खर्च हो सकता है। किसी को उधार पैसा न दें नहीं तो वापसी की उम्मीद कम है और अपने खर्च पर भी अंकुश लगाएं। शनि ग्रह के गोचर के बाद समय अच्छा हो रहा है। फिर भी आर्थिक निर्णय लेने से पहले उस विषय में सोच विचार करना बहुत जरूरी है।

घर—परिवार, समाज

वर्ष के प्रारम्भ में पारिवारिक वातावरण में उतार—चढ़ाव की स्थिति

बनी रहेगी जिससे परिजनों के बीच सामंजस्य बिठाने में कठिनाई पैदा होगी। परिवार के कुछ लोगों का बर्ताव ठीक नहीं रहेगा। ससुराल पक्ष के लोगों के लिए यह समय अनुकूल नहीं है।

गुरु ग्रह का गोचर पारिवारिक वातावरण के लिए बहुत अच्छा रहेगा। परिवार में एक दूसरे के साथ भावनात्मक लगाव में वृद्धि होगी। माता के लिए समय काफी शुभ है। 23 अक्टूबर से आपका समाजिक स्तर बढ़ेगा।

संतान

पंचम स्थान पर राहु एवंशनि ग्रह की संयुक्त दृष्टि प्रभाव से बच्चों को स्वास्थ्य संबंधित परेशानी होगी जिससे उनकी शिक्षा-दीक्षा भी प्रभावित होगी। मई के बाद समय अच्छा हो रहा है।

गुरु ग्रह के गोचर के बाद आपकी दूसरे संतान के लिए समय अच्छा हो रहा है। आपके दूसरे बच्चों के साथ प्रेम समन्वय में वृद्धि होगी। यदि आप दूसरी संतान की इच्छा रखते हैं तो यह समय श्रेष्ठ है। यदि आप अपने बच्चों के मनोबल को बढ़ाते रहें तो वे अपने लक्ष्य को अवश्य प्राप्त कर लेंगे।

स्वास्थ्य

पूरे वर्ष लग्न स्थान के राहु आपके स्वास्थ्य में उतार-चढ़ाव की स्थिति बनाए रखेंगे। व्यापारिक व्यस्तता के कारण आप समय पर अपना खान-पान नहीं कर पाएंगे जिसके परिणामस्वरूप आपके स्वास्थ्य में गिरावट आ सकती है। बेहतर होगा कि आप अपने दैनिक जीवन में भोजन का अनुशासन बनाये रखें व लापरवाही ना करें। किसी भी मुद्दे को लेकर आवश्यकता से ज्यादा चिंता न करें।

सुबह जल्दी उठ कर व्यायाम करना लाभप्रद रहेगा। मई के बाद समय काफी अच्छा हो रहा है। उसके बाद आपकी स्वास्थ्य संबंधित परेशानी दूर होना शुरू हो जाएगी।

करियर एवं प्रतियोगी परीक्षा

करियर एवं प्रतियोगिता परीक्षा के लिए यह वर्ष सामान्य रहेगा। 5 मई के बाद माध्यमिक शिक्षा ग्रहण कर रहे शिक्षार्थियों के लिये समय बहुत शुभ है।

विदेशी भाषा सीखने के लिए 12 अगस्त के बाद समय काफी शुभ है यदि आप अपने शत्रुओं को परास्त करना चाहते हैं, तो नीतियों में बदलाव

करना पड़ेगा।

यात्रा—तबादला

नवमस्थ गुरु के प्रभाव से छोटी—मोटी यात्राओं के साथ आप लम्बी—लम्बी यात्राएं भी करेंगे। धार्मिक स्थलों की यात्रा करने का अवसर प्राप्त होगा। 5 मार्च के बाद नौकरी करने वाले व्यक्तियों का स्थानान्तरण होगा। यह स्थानान्तर आपकी अनुकूल स्थान पर भी हो सकती है।

अपने घर से दूर रहने वाले व्यक्ति अपनी जन्मभूमि की यात्रा करेंगे या अपने परिवार के साथ दर्शनीय स्थलों की यात्रा करेंगे।

धर्म कार्य एवं ग्रह शांति

इस वर्ष आप तीर्थयात्रा और धार्मिक कार्य अधिक करेंगे। कोई भी शुभ कार्य योजनाबद्ध तरीके से ही संपन्न करें अन्यथा पूजादि कार्यों में व्यवधान आने की आशा है। आप अपने कार्य व्यवसाय पर अधिक ध्यान देंगे और कर्म ही पूजा है इस वाक्य को फलीभू करेंगे।

- प्रत्येक दिन सूर्य को जल दें एवं प्राणायाम करें।
- बुधवार के दिन चींटियों को दाना डालें एवं भूखे व्यक्तियों को खाना खिलाएं।
- प्रत्येक दिन हनुमान चालीसा का पाठ करें एवं शनि ग्रह का दान करें।

वार्षिक फलादेश - 2033

इस वर्ष शनि मिथुन राशि एवं नवम भाव में रहेंगे। 30 जनवरी तक राहु तुला राशि एवं लग्न स्थान में रहेंगे उसके बाद कन्या राशि एवं द्वादश भाव में प्रवेश करेंगे। 18 मार्च तक गुरु मकर राशि एवं चतुर्थ भाव में रहेंगे उसके बाद कुम्भ राशि एवं पंचम भाव में प्रवेश करेंगे। 24 मार्च से 8 अक्टूबर तक मंगल वक्री होकर धनु राशि एवं तृतीय भाव में रहेंगे।

व्यवसाय

कार्य—व्यवसाय के लिए यह वर्ष उत्तम रहेगा। व्यापार में बदलाव या फिर नौकरी में पदोन्नति की भी संभावना बन रही है। 18 मार्च से अनुभवी और वरिष्ठ लोगों का सहयोग मिलेगा जिससे आपके कार्यों में लाभ की मात्रा और बढ़ जाएगी। किसी बड़ी कंपनी के साथ मिलना या उसके साथ कार्य करने का अवसर भी प्राप्त होगा। कार्यस्थल में प्रशंसा और पहचान मिलेगी। यह आपकी आशावादी विचारधारा के कारण ही होगा। राहु ग्रह का गोचर अच्छा नहीं होने कारण अचानक आपके कार्यों में कुछ परेशानियां आ सकती हैं लेकिन आप अपने बौद्धिक बल के द्वारा उसका भी निदान निकाल लेंगे।

नवमस्थ शनि पर गुरु ग्रह की दृष्टि प्रभाव से आप के अन्दर गजब का आत्मविश्वास उत्पन्न होगा जिससे आप अपने क्लाइंट्स को प्रभावित करने में सफल होंगे। यदि आप नौकरी में है तो बड़े अधिकारी आपसे प्रसन्न रहेंगे। आपको पुरस्कृत भी किया जाएगा। कार्य स्थल पर आपका मान—संमान भी बढ़ेगा।

धन संपत्ति

आर्थिक दृष्टिकोण से वर्ष का प्रारम्भ सामान्य रहेगा। द्वादश स्थान का राहु आर्थिक स्थिति में उतार—चढ़ाव करते रहेंगे। लगभग सभी वित्तीय मामलों में आपको निराशा ही हाथ लगेगी और हानि का सामना करना पड़ेगा। अतः जोखिम भरे कार्यों में निवेश न करें। शीघ्र पैसा बनाने वाले तरीकों पर अंकुश लगाएं। 18 मार्च के बाद आय भाव पर गुरु ग्रह की दृष्टि प्रभाव से धनागम के स्रोतों में वृद्धि होगी। साथ ही फंसे हुए धन या रुके हुए धन की प्राप्ति हो सकती है। धार्मिक यात्रा या मांगलिक कार्यों में धन व्यय होगा।

शिक्षा, शेयर व बैंक से संबंधित कार्य करने वाले व्यक्तियों को अच्छा लाभ प्राप्त होगा। आपके सामने कई लाभकारी सौदे आएंगे। इसका भरपूर लाभ उठाने के लिए आप सतर्क रहें।

घर—परिवार, समाज

वर्ष का प्रारम्भ पारिवारिक वातावरण के लिए उत्तम रहेगा। चतुर्थस्थ गुरु के प्रभाव से परिवार में सुख, शान्ति का वातावरण बनेगा। इन सबके पीछे आपका ही महत्वपूर्ण योगदान होगा। क्योंकि आप भी बहुत से ऐसे कामों को अंजाम देने वाले हैं जो पारिवारिक जीवन के लिए हितकर होंगे। आपके माता पिता के लिए समय काफी शुभ है।

मार्च के बाद चतुर्थ स्थान पर राहु ग्रह की दृष्टि प्रभाव से आपके परिवार में किंचित परेशानि आ सकती है। परन्तु आप नकारात्मक परिस्थितियों को भी सकारात्मक रूप में परिवर्तित कर देंगे। पंचमस्थ राहु के प्रभाव से आपके प्रेम संबंधों में मधुरता बढ़ेगी। बच्चों के साथ भवनात्मक लगाव में वृद्धि होगी। अपने परिजनों के साथ आप किसी धार्मिक स्थल की यात्रा करेंगे या घर परिवार में शुभ कृत्यों का आयोजन होगा।

संतान

यह वर्ष संतान के लिए उत्तम रहेगा। आपके बच्चे अपने परिश्रम के बल पर आगे बढ़ेंगे। 18 मार्च से पंचम स्थान में गुरु ग्रह का गोचर संतान के लिए श्रेष्ठ है। शिक्षा के क्षेत्र में उनकी रुचि बढ़ेगी। यदि वे उच्च शिक्षा प्राप्त करना चाहते हैं, तो सबसे अच्छे शैक्षणिक संस्थान में उनका प्रवेश हो जाएगा। नवविवाहित व्यक्तियों को संतान रत्न की प्राप्ति होगी।

आपके दूसरे बच्चे के लिए भी समय अच्छा है। यदि वे किसी प्रतियोगिता परीक्षा की तैयारी कर रहे हैं तो अपने लक्ष्य में अवश्य सफल रहेंगे। उनके सारे विरोधी शान्त होंगे। इस वर्ष वे अच्छा उन्नति करेंगे।

स्वास्थ्य

स्वास्थ्य की दृष्टि से यह वर्ष मिला-जुला रहेगा। वर्ष के प्रारम्भ में व्यावसायिक व्यस्तता के कारण आप अपने स्वास्थ्य पर ध्यान नहीं देंगे। मौसमजनित बीमारियों से परेशान हो सकते हैं। द्वादश स्थान का राहु अचानक आपको बीमार कर सकता है। परन्तु 18 मार्च से लग्न स्थान पर शुभ ग्रह की दृष्टि आपके अंदर सकारात्मक ऊर्जा का विकास करेगी। आप अपने दैनिक कार्यों में स्फूर्तिवान बने रहेंगे।

आप अपने प्रियजनों और परिजनों के साथ अधिक से अधिक समय बिताएंगे। शारीरिक आरोग्यता प्राप्ति के लिए आप घर में कोई विशेष धार्मिक आयोजन करेंगे। जो आपकी मनोकामनाओं को पूरा करने में सहयोग करेगा।

करियर एवं प्रतियोगी परीक्षा

इस वर्ष विद्यार्थियों को शिक्षा के क्षेत्र में विशेष उपलब्धी प्राप्त होगी। उच्च शिक्षा प्राप्ति के लिए 18 मार्च के बाद का समय बहुत अच्छा है। प्रतियोगिता परीक्षार्थी परीक्षा में सफल होंगे। जो व्यक्ति अपना व्यापार प्रारम्भ करना चाहते हैं। उनके लिए यह समय अनुकूल है।

आपके लिए रोजगार के नये अवसर भी पैदा होंगे। जिससे आप व्यापार में सफलता और समाज में प्रतिष्ठा प्राप्त करेंगे। नवमस्थ शनि पर गुरु ग्रह की दृष्टि प्रभाव से आपका भाग्य साथ देगा।

यात्रा—तबादला

द्वादश स्थान पर गुरु ग्रह की दृष्टि प्रभाव से वर्षारम्भ में आपकी विदेश यात्रा के योग बन रहे हैं। तृतीय स्थान पर शनि ग्रह की दृष्टि छोटी—मोटी यात्राएं कराती रहेगी। 18 मार्च के बाद नवम स्थान पर गुरु ग्रह की दृष्टि आपकी लम्बी यात्राएं भी कराएगी।

आप अपने परिवार सहित किसी दर्शनीय स्थल की यात्रा करेंगे। यह यात्रा अधिक सुखद व मनोरंजनात्मक होगी। इस यात्रा के अंतराल में आपकी किसी के साथ मित्रता भी हो सकती है।

धर्म कार्य एवं ग्रह शांति

इस वर्ष आप धार्मिक कार्य अधिक करेंगे। चतुर्थस्थ गुरु के प्रभाव से आपके घर में धार्मिक व मांगलिक कार्यक्रम अधिक होंगे। 18 मार्च से पूजा—पाठ, यज्ञ—अनुष्ठान व मन्त्र जाप के प्रति आपकी रुचि बढ़ेगी।

- आप गुरु मन्त्र लेकर उसकी साधना भी कर सकते हैं। ईश्वर के प्रति आपकी निष्ठा एवं विश्वास बढ़ेगा।
- प्रत्येक दिन सूर्य को (तांबे के लोटे में लाल अक्षत, लाल फूल एवं रोली डालकर) जल दें।
- प्रत्येक दिन दुर्गा कवच का पाठ करें।
- बुधवार के दिन गणेशजी को दुर्वा चढ़ाएं व गणेश अथर्वशीष का पाठ करें।

वार्षिक फलादेश - 2034

वर्ष के पूर्वार्द्ध में शनि मिथुन राशि एवं नशम भाव में रहेंगे और 13 जुलाई को कर्क राशि एवं दशम भाव में प्रवेश करेंगे। 12 अगस्त से पहले राहु कन्या राशि एवं द्वादश भाव में रहेंगे और उसके बाद सिंह राशि एवं एकादश भाव में प्रवेश करेंगे। वर्षारम्भ में गुरु कुम्भ राशि एवं पंचम भाव में रहेंगे और 28 मार्च को मीन राशि एवं छठे भाव में प्रवेश करेंगे। मंगल ग्रह अपनी सरल गति से गोचर करेंगे।

व्यवसाय

वर्ष के प्रारम्भ में आपको ज्यादा से ज्यादा मुनाफा होगा। यह समय आपकी सभी मनोकामनाओं को पूरा करने वाला है। लॉटरी, सट्टा इत्यादि कार्यों में अपना भाग्य आजमा सकते हैं। आप को अच्छी सफलता मिल सकती है। नवम स्थान का शनि अपेक्षाकृत ज्यादा मुनाफा देने वाला है, लेकिन आपकी सभी मनोकामनाएं जुलाई के बाद ही पूरी होंगी। हालाँकि जो लोग कारोबार या रीयल एस्टेट से जुड़े हैं, उनको थोड़ा मायूस होना पड़ सकता है। वैसे चिंता करने की बात नहीं है। क्योंकि 12 अगस्त के बाद राहु ग्रह का गोचर व्यावसायिक जीवन में अच्छी उन्नति ले कर आ रहा है।

बड़ी-बड़ी योजनाएं और अवसर आपके द्वार पर दस्तक देंगे। बस आपको पूर्ण विश्वास के साथ आगे की ओर कदम बढ़ाना है। नौकरी करने वाले व्यक्तियों का पदोन्नति के साथ स्थानान्तरण होगा। सवाल यह नहीं उठता है कि आप किस प्रकार की नौकरी कर रहे हैं, हर हाल में आपको सराहना, सहयोग और ऐसी खुशी मिलेगी जिसकी तलाश आप एक लम्बे समय से कर रहे थे। वर्तमान नौकरी के अलावा अन्य स्रोतों से भी आपको लाभ मिलेगा।

धन संपत्ति

आर्थिक रूप से वर्ष का प्रारम्भ आपके लिए उत्तम रहेगा। संचित धन में वृद्धि होगी। धनागम के स्रोत बढ़ेंगे। नवीन संपत्ति खरीदने की दिशा में प्रयासरत रहेंगे। इस संबंध में आपको सफलता भी मिलेगी। 28 मार्च से गुरु ग्रह का गोचर प्रतिकूल हो रहा है। अतः इस समय के अंतराल में आपको क्रय विक्रय के मामले में सावधान रहना चाहिए। किसी को उधार पैसा न दें नहीं तो वापसी की उम्मीद कम है। अपने खर्च पर भी अंकुश लगाएं नहीं तो द्वादश स्थान के राहु आपका अनावश्यक खर्च बढ़ा सकते हैं।

वर्ष के उत्तरार्द्ध में आय के स्रोतों में बढ़ोत्तरी होगी। रुके हुए या

फंसे हुए पैसे मिलेंगे। कार्य व्यवसाय में भी आपको अच्छा लाभ मिलेगा, जिससे पुराने चले आ रहे कर्जे इत्यादि से मुक्ति मिल सकती है। एकादशस्थ राहु के कारण अचानक धन लाभ होगा और आय के सारे बन्द मार्ग खुलेंगे।

घर—परिवार, समाज

इस वर्ष आपकी पारिवारिक स्थिति बेहतर रहने वाली है। सभी लोगों के साथ स्नेह और आपसी सौहार्द के साथ पेश आएँ। परिवार के लोगों के सुझावों पर अमल करना आपके लिए फायदे का सौदा हो सकता है, लेकिन इसके विरुद्ध जाना घातक हो सकता है। जुलाई के बाद चतुर्थ स्थान पर शनि की दृष्टि परिवार में कुछ परेशानियों को जन्म दे सकती है, लेकिन कुछ ज्यादा हानि होने की संभावना नहीं है।

माँ के साथ कुछ नाराजगी हो सकती है तथा उन्हें स्वास्थ्य संबंधी भी कुछ परेशानियाँ हो सकती हैं, अतः उनका समुचित ख्याल रखें और व्यवहार में संयम बरतें। पिता के साथ आपके संबंध बेहतर रहेंगे। साल का उत्तरार्द्ध आपके लिए बेहतर साबित होगा और कारोबार में मुनाफा होगा। अपने जीवनसाथी के साथ मां—बाप की सेवा कर पुण्यार्जन करें।

संतान

संतान के लिए वर्ष का प्रारम्भ काफी शुभ रहेगा। यदि संतान की इच्छा रखते हैं तो गर्भाधान के लिए उत्तम समय चल रहा है। यदि आपके बच्चे उच्च शिक्षा प्राप्त करना चाहते हैं तो अच्छे शैक्षणिक संस्थान में उनका प्रवेश हो जाएगा।

जुलाई के बाद पंचम स्थान पर राहु ग्रह की दृष्टि आपके बच्चों का स्वास्थ्य प्रतिकूल कर सकती है जिसके कारण उनकी शिक्षा—दिक्षा में रुकावटें आ सकती हैं। अतः उस समय अपने बच्चों के स्वास्थ्य पर विशेष ध्यान दें।

स्वास्थ्य

स्वास्थ्य की दृष्टि से वर्ष का प्रारम्भ उत्तम रहेगा। शारीरिक अनुकूलता बनाये रखने के लिए आप संतुलित आहार एवं नियमित व्यायाम करते रहेंगे। लग्न स्थान पर गुरु ग्रह की दृष्टि प्रभाव से आप शुद्ध शाकाहारी भोजन ही ग्रहण करेंगे। आपके अंदर अच्छे विचार आएंगे और आप मानसिक रूप से संतुष्ट रहेंगे। परन्तु 28 मार्च के बाद आप छोटी—मोटी बीमारियों के कारण परेशान हो सकते हैं। राहु ग्रह का गोचर प्रतिकूल होने के कारण मानसिक अशान्ति व आलस्य की भावना उत्पन्न हो सकती है। खान पान एवं दिनचर्या की अनुशासित

बनायें।

वर्ष का उत्तरार्द्ध स्वास्थ्य के लिए अनुकूल रहेगा। खुद को मानसिक तौर पर खुश रखने की कोशिश करें। पर्याप्त मात्रा में पानी पीना और नियमित रूप से टहलना आपकी अच्छी सेहत का राज हो सकता है। हरी पत्तेदार सब्जियों को अपने आहार में शामिल करें। उपरोक्त सामान्य बातों का पालन कर आप निश्चित तौर पर स्वास्थ्य के धनी हो सकते हैं।

करियर एवं प्रतियोगी परीक्षा

विद्यार्थियों के लिए वर्ष का प्रारम्भ बहुत उत्तम रहेगा। प्रतियोगिता परीक्षार्थियों को अपने लक्ष्य में सफलता मिलने का योग बन रहा है। व्यवसायी इस समय के अंतराल में कोई नया कार्य प्रारम्भ करेंगे तो अच्छा लाभ मिलेगा। आप विदेश जाकर उच्च शिक्षा प्राप्त करना चाहते हैं तो यह समय आपके लिए काफी शुभ है।

जो व्यक्ति नौकरी की तलाश में हैं उनको वर्ष के उत्तरार्द्ध में नौकरी मिल जाएगी। आपके लिए यह बहुत ही अच्छा समय चल रहा है। आप जिस क्षेत्र में काम कर रहे हैं उसमें आपको सम्मान मिलेगा।

यात्रा—तबादला

नवम स्थान पर गुरु ग्रह की दृष्टि आपकी लम्बी यात्रा के योग बन रही है। 28 मार्च के बाद आप विदेश यात्रा भी करेंगे। इन यात्राओं से आपको अच्छा लाभ मिलेगा। यात्रा के अंतराल में किसी से मित्रता भी हो सकती है।

वर्ष का उत्तरार्द्ध सामान्य रहेगा। छोटी यात्रा तो होती रहेंगी। विशेष किसी प्रकार की यात्रा का योग नहीं बन रहा है। नौकरी करने वाले व्यक्तियों का प्रतिकूल स्थान पर स्थानान्तरण होगा।

धर्म कार्य एवं ग्रह शांति

धार्मिक कार्यों के लिए वर्ष का प्रारम्भ उत्तम रहेगा। आप अधिक से अधिक धार्मिक कार्य करेंगे। जैसे मन्दिर निर्माण, भण्डारा, गरीबों की सहायता इत्यादि। तीर्थ स्थलों की यात्रा कर खूब पुण्यार्जन करेंगे। वर्ष के उत्तरार्द्ध में आप दान पुण्य अधिक करेंगे।

- माता—पिता, गुरु, साधू, संन्यासी और अपने से बड़े लोगों का आशीर्वाद प्राप्त

करें।

- मंदिर या धार्मिक स्थानों पर केला या बेसन के लड्डू वितरित करें।
- प्रत्येक दिन सूर्य को जल दें।
- दुर्गा कवच का पाठ करें या दुर्गा बीसा यन्त्र अपने घर में स्थापित कर उसका पूजन करें।

वार्षिक फलादेश - 2035

इस वर्ष कर्क राशि का शनि दशम भाव में और सिंह राशि का राहु एकादश भाव में रहेंगे। 5 अप्रैल तक गुरु मीन राशि एवं छठे भाव में रहेंगे और उसके बाद मेष राशि एवं सप्तम भाव में प्रवेश करेंगे। 21 जुलाई से 9 सितम्बर तक वक्री मंगल मीन राशि एवं छठे भाव में रहेंगे।

व्यवसाय

प्रारम्भ के तीन माह छोड़ दिए जाएं तो यह साल आपके लिए श्रेष्ठ रहने वाला है। आप अपने परिश्रम की बदौलत व्यावसायिक जीवन में उन्नति करेंगे। दशमस्थ शनि आपके अंदर काम करने का जुनून उत्पन्न करेगा। यही आपके व्यावसायिक उन्नति का कारण बनेगा। नौकरी करने वाले व्यक्तियों का पदोन्नति के साथ स्थानान्तरण भी हो सकता है। आपको अधीनस्थ कर्मचारियों का अच्छा सहयोग मिलेगा और बड़े अधिकारी आपसे प्रसन्न रहेंगे।

व्यापारियों को उम्मीद से ज्यादा मुनाफा होने वाला है। विभिन्न स्रोतों से धन का आगमन होगा। लक्ष्मी आपके द्वार पर दस्तक देगी। यदि आप ब्याज पर भी पैसे देते हैं तो भी अच्छे लाभ होने की संभावना है। इसके अतिरिक्त जो लोग शिक्षा के क्षेत्र से जुड़े हैं या इससे संबंधित क्षेत्र में उनका पैसा लगा है उनको भी बेहतर मुनाफा होगा। साझेदारी में कार्य करने वाले व्यक्तियों को अच्छा लाभ मिलेगा।

धन संपत्ति

वर्षारम्भ आर्थिक उन्नति के लिए सामान्य रहेगा। परन्तु 6 अप्रैल के बाद गुरु ग्रह का गोचर बहुत ही शुभ हो रहा है। उसके बाद आपकी आर्थिक स्थिति बेहद ही शानदार रहने वाली है। इस सफर में आपको बहुत ही कम चुनौतियों का सामना करना पड़ेगा। जिन्दगी के इस सुनहरे पल का भरपूर आनंद लें।

एकादश स्थान पर गुरु ग्रह की दृष्टि धनागम में वृद्धि करगी। यह समय आपके लिए उपलब्धियों से भरा रहेगा। नई संपत्ति में निवेश करेंगे। पुराने कर्ज से मुक्त होंगे। तरक्की के द्वार खुलेंगे। व्यावसायिक उन्नति के लिए भी आप धन निवेश करेंगे। घरेलू सुख सुविधा पर भी आप अधिक खर्च करेंगे।

घर-परिवार, समाज

पारिवारिक मामलों के लिए वर्ष का पूवार्द्ध मिला-जुला रहेगा। चतुर्थ

स्थान पर शनि की दृष्टि पारिवारिक माहौल में विषमता की स्थिति उत्पन्न कर सकती है। अतः आपको पारिवारिक मामलों में बड़ी ही समझदारी से काम लेना होगा। हालांकि द्वितीय स्थान पर गुरु ग्रह की दृष्टि परिवार में किसी सदस्य की वृद्धि को दर्शाता है। 6 अप्रैल के बाद मित्र व पत्नी के साथ संबंध बहुत ही मधुर होंगे। पति पत्नी के बीच भावनात्मक लगाव में वृद्धि होगी।

आपके भाई-बहनों के लिए यह समय बहुत ही शुभ है। तृतीय स्थान पर गुरु ग्रह की दृष्टि के कारण सामाजिक पद प्रतिष्ठा में वृद्धि होगी। परिवार में मांगलिक कार्य होते रहेंगे, जिससे परिवार में खुशी का माहौल बना रहेगा।

संतान

वर्ष का प्रारम्भ संतान के लिए उत्तम नहीं रहेगा। छठे स्थान का गुरु आपकी संतान के लिए अच्छा नहीं है। शारीरिक कष्ट एवं मानसिक परेशानी बनी रहेगी, जिससे उनकी शिक्षा-दीक्षा में भी रुकावटें आ सकती हैं।

6 अप्रैल से गुरु ग्रह का गोचर अच्छा हो रहा है। उसके बाद आपके बच्चों की उन्नति होगी। बच्चों के स्वास्थ्य संबंधित किसी भी प्रकार की लापरवाही न करें क्योंकि पूरे वर्ष पंचम स्थान पर राहु की दृष्टि बनी रहेगी। आपके दूसरे बच्चे के लिए समय काफी शुभ है। उसका चौमुखी विकास होगा।

स्वास्थ्य

साल का प्रारम्भ स्वास्थ्य के लिहाज से अच्छा नहीं रहेगा। वर्षारम्भ से ही कुछ न कुछ शारीरिक परेशानी बनी रहेगी। यदि पहले से आप किसी बीमारी से पीड़ित हैं तो यह समय ज्यादा प्रभावित रहने वाला है। शारीरिक कष्ट के साथ मानसित चिंता भी बनी रहेगी।

6 अप्रैल से लग्न स्थान पर गुरु ग्रह की दृष्टि शारीरिक व्याधियों को दूर कर आरोग्यता प्रदान करेगा। आपके अंदर सकारात्मक ऊर्जा का विकास होगा जिससे आप अपने को पूर्ण रूप से स्वस्थ महसूस करेंगे। अपने खान-पान पर संयम रखें। सूर्योदय से पहले उठकर टहलना और व्यायाम करना आपके लिए लाभप्रद रहेगा।

करियर एवं प्रतियोगी परीक्षा

वर्ष का प्रारम्भ करियर एवं प्रतियोगिता परीक्षा के लिए सामान्य रहेगा। परन्तु 6 अप्रैल के बाद समय काफी अच्छा हो रहा है। उस समय प्रतियोगिता परीक्षार्थी अपने लक्ष्य में सफल रहेंगे। अप्रैल के बाद अध्ययन कार्यों में आपकी रुचि बढ़ेगी।

जो लोग नौकरी की तलाश में हैं उनको मनोनुकूल नौकरी मिल सकती है। व्यावसायिक शिक्षा प्राप्त करने वाले विद्यार्थियों के लिए यह समय श्रेष्ठ है। इस समय के अंतराल में आप किसी के साथ मित्रता में कार्य कर सकते हैं।

यात्रा—तबादला

द्वादश स्थान पर गुरु एवं शनि ग्रह के संयुक्त दृष्टि प्रभाव से आपकी विदेश यात्रा के प्रबल योग बन रहे हैं। इस समय के अंतराल में आपकी छोटी मोटी यात्राएं होती रहेंगी।

6 अप्रैल के बाद पत्नी के साथ दर्शनीय स्थलों की यात्रा का आनन्द प्राप्त करेंगे। सप्तमस्थ गुरु पर शनि ग्रह की दृष्टि प्रभाव से आपकी व्यवसायिक यात्राएं भी होती रहेंगी। इन यात्राओं से आपको अच्छा लाभ होगा।

धर्म कार्य एवं ग्रह शांति

वर्ष के प्रारम्भ में पूजा पाठ में आपका मन कम ही लगेगा। अधिक आलस्यता के कारण आपका दैनिक पूजा—पाठ भी प्रभावित हो सकता है। 6 अप्रैल के बाद धार्मिक कार्यों में आपकी रुचि बढ़ेगी। ईश्वर भक्ति के कार्यों में आप अधिक समय देंगे। भगवान के प्रति आपका आकर्षण और बढ़ेगा।

बेसन की लड्डू वीरवार के दिन विष्णुजी के मन्दिर में वितरित करें एवं गुरु ग्रह के मन्त्र का पाठ करें।

- प्रत्येक दिन सूर्योदय के समय सूर्य को जल देना आपके लिए अत्यधिक लाभप्रद रहेगा।
- गणेशजी के निम्न मन्त्र का पाठ करें—

ॐ गं गणपतये नमः

वार्षिक फलादेश - 2036

वर्ष के पूर्वार्द्ध में शनि कर्क राशि एवं दशम भाव में रहेंगे और 27 अगस्त को सिंह राशि एवं एकादश भाव में प्रवेश करेंगे। 13 अप्रैल तक राहु सिंह राशि एवं एकादश भाव में रहेंगे और उसके बाद कर्क राशि एवं दशम भाव में प्रवेश करेंगे। वर्षारम्भ में मेषस्थ गुरु सप्तम भाव में रहेंगे और 15 अप्रैल को वृष राशि एवं अष्टम भाव में प्रवेश करेंगे और अतिचारी होकर 9 सितम्बर को मिथुन राशि एवं नवम भाव में प्रवेश करेंगे और पुनः वक्री होकर 17 नवम्बर को वृष राशि एवं अष्टम भाव में आ जाएंगे।

व्यवसाय

कार्य व्यवसाय की दृष्टि से यह वर्ष उत्तम रहेगा। आमदनी के नये-नये स्रोत मिलने की उम्मीद है। इस अवधि में कोई नया कार्य प्रारम्भ करेंगे, तो उसमें सफलता मिलने की उम्मीद अधिक है। आपको अनुभवी और वरिष्ठ लोगों का अच्छा सहयोग मिलेगा जिससे आपके कार्यों में लाभ की उम्मीद और बढ़ जाएगी। यदि आप साझेदारी में कोई कार्य कर रहे हैं तो आपको इच्छित लाभ प्राप्त होगा और आप अपने साझेदार से संतुष्ट रहेंगे। 15 अप्रैल से गुरु ग्रह का गोचर प्रतिकूल हो रहा है। अतः उस समय के अंतराल में कोई नया कार्य प्रारम्भ न करें।

9 सितम्बर के बाद समय बहुत ही अनुकूल हो रहा है। अतः उस समय व्यवसाय से संबंधित यात्राएं भी होंगी, जो आपके लिए अनुकूल सिद्ध होंगी। किसी बड़ी कम्पनी के साथ भी कार्य करने का अवसर प्राप्त होगा और उनके साथ कार्य कर आप अपने व्यवसाय में उन्नति करेंगे। पिता का सहयोग व भाग्य में रुकावटों का उन्मूलन होगा।

धन संपत्ति

आर्थिक दृष्टिकोण से वर्ष का प्रारम्भ उत्तम रहेगा। सप्तम स्थान के गुरु आपके धनागम में निरन्तरता बनाए रखेंगे, जिससे आप इच्छित बचत करने में सफल रहेंगे। आप निष्ठा के साथ धनार्जन में लगे रहेंगे। एकादशस्थ राहु के कारण विभिन्न स्रोतों से धन का आगमन होगा। पुराने चले आ रहे कर्जे इत्यादि से मुक्ति मिलेगी। 15 अप्रैल के बाद चतुर्थ स्थान पर गुरु एवं शनि ग्रह की संयुक्त दृष्टि प्रभाव से आपको भूमि-भवन, वाहन इत्यादि का सुख प्राप्त होगा।

अपने परिवार के सदस्यों तथा रिश्तेदारों के मांगलिक कार्यों में आपका धन खर्च होगा। यदि कोई बड़ा निवेश करना चाहते हैं, तो उसके लिए भी

समय अनुकूल है। अष्टमस्थ गुरु के कारण कुछ अनावश्यक खर्च भी आ सकते हैं। परन्तु 9 सितम्बर के बाद समय फिर से अच्छा हो रहा है। उस समय आपकी आर्थिक उन्नति में वृद्धि होगी।

घर—परिवार, समाज

पारिवारिक रूप से वर्ष का प्रारम्भ सामान्यतः अच्छा रहेगा। आपको भाईयों का सहयोग मिलेगा। सप्तमस्थ गुरु के प्रभाव से आपके पत्नी के साथ संबंध मधुर होंगे। परन्तु माता पिता के लिए यह समय अच्छा नहीं है। उनको स्वास्थ्य संबंधित परेशानी हो सकती है। यदि आप अविवाहित हैं तो विवाह का प्रबल योग बन रहा है।

गुरु ग्रह का गोचर आपके ससुराल वालों के साथ संबंध खराब कर सकता है, जिससे आप मानसिक रूप से अशान्त रह सकते हैं। छोटी-छोटी बातों पर झगड़ा या विवाद करना आपके लिए लाभप्रद नहीं रहेगा। अगस्त के बाद एकादशस्थ शनि के प्रभाव से सामाजिक प्रतिष्ठा में वृद्धि होगी। सामाजिक गतिविधियों में आप बढ़-चढ़ के भाग लेंगे।

संतान

वर्षारम्भ संतान के लिए उत्तम रहेगा। उनके विषय में शुभ समाचार प्राप्त होंगे। शिक्षा के क्षेत्र में भी अच्छी प्रगति होने के शुभ योग बनेंगे। उनके पराक्रम में वृद्धि होगी परन्तु उसके बावजूद भी आपकी चिंताएं बनी रहेंगी। आपका दूसरा बच्चा विवाह के योग्य है तो उसका विवाह हो जाएगा। यदि दूसरी संतान की इच्छा रखते हैं तो यह समय बहुत ही शुभ है।

15 अप्रैल के बाद आपके बच्चों का स्वास्थ्य खराब हो सकता है। अष्टम स्थान के गुरु आपकी संतान को मानसिक अशान्ति दे सकते हैं, जिससे उसकी पढ़ाई—लिखाई प्रभावित हो सकती है। अतः वर्ष के उत्तरार्द्ध में अपने बच्चों पर ज्यादा ध्यान दें।

स्वास्थ्य

स्वास्थ्य के दृष्टिकोण से वर्ष का प्रारम्भ अत्यधिक अनुकूल रहेगा। लग्न स्थान पर गुरु ग्रह की दृष्टि प्रभाव से आपके मन में अच्छे विचार आएंगे, जिससे प्रत्येक कार्य को सकारात्मक रूप से करेंगे। अच्छे स्वास्थ्य के लिए आप का खान—पान एवं दिनचर्या भी अच्छी रहेगी। लग्न स्थान पर शुभ ग्रह का प्रभाव होने से आप शुद्ध शाकाहारी भोजन ही ग्रहण करेंगे, जिससे आप का स्वास्थ्य अनुकूल बना रहेगा। यदि मौसमजनित कोई बीमारी होती है तो आप शीघ्र ही

अच्छे हो जाएंगे।

अप्रैल के बाद अष्टमस्थ गुरु के कारण आपके अंदर रोग प्रतिरोधक शक्ति कम होगी। जिससे आप अपने को कमजोर व बीमार महसूस कर सकते हैं। मसालेदार और तेल वाले आहार के प्रति आपका रुची बढ़ेगी, इसे नियंत्रित करने की कोशिश करें। नहीं तो पेट संबंधित तकलीफें बढ़ सकती हैं। आप अचानक बीमार हो सकते हैं। तुला दान व अन्न दान करना आपके स्वास्थ्य के लिए लाभदायक रहेगा।

करियर एवं प्रतियोगी परीक्षा

करियर एवं प्रतियोगिता परीक्षा के लिए यह वर्ष अत्यधिक अनुकूल रहेगा। एकादश स्थान में राहु के प्रभाव से आप प्रतियोगिता परीक्षाओं में सफलता प्राप्त करेंगे। यदि आप विदेश जा कर उच्च शिक्षा प्राप्त करना चाहते हैं तो उसके लिए समय बहुत अनुकूल है।

जो व्यक्ति इलेक्ट्रॉनिक या हार्डवेयर से संबंधित कार्य कर रहे हैं। उनको अपने करियर में अच्छी सफलता मिलेगी। जो व्यक्ति नौकरी के तलाश में हैं उसको नौकरी मिल जाएगी। इस वर्ष आप अपने सारे शत्रुओं को पीछे छोड़ कर आगे निकलेंगे।

यात्रा-तबादला

यात्रा की दृष्टि से यह वर्ष अनुकूल रहेगा। तृतीय स्थान पर गुरु ग्रह के दृष्टि प्रभाव से छोटी मोटी यात्राएं होंगी। सप्तमस्थ गुरु के प्रभाव से व्यवसाय से सम्बन्धित यात्राएं भी होंगी। नौकरी करने वालों का प्रतिकूल स्थान पर स्थानान्तरण होगा।

15 अप्रैल के बाद द्वादश स्थान पर गुरु एवं शनि की संयुक्त दृष्टि प्रभाव से आप विदेश यात्रा करेंगे। इस यात्रा से आपको अच्छा लाभ प्राप्त होगा।

धर्म कार्य एवं ग्रह शांति

धार्मिक कार्यों के लिए यह वर्ष अच्छा रहेगा। वर्ष के प्रारम्भ में पूजा पाठ के प्रति आपका आकर्षण बढ़ेगा। आप अपनी धर्मपत्नी के साथ मिलकर हवनादि कार्य संपन्न करेंगे। तीर्थ यात्रा कर पुण्यार्जन भी करेंगे। 15 अप्रैल के बाद द्वादश स्थान पर गुरु एवं शनि की संयुक्त दृष्टि प्रभाव से आप दान पुण्य

भण्डारा इत्यादि अच्छे कर्मों पर अधिक पैसा खर्च करेंगे, जिससे आपको आत्मिक सुख का अनुभव होगा। अनाथालय या गरीब बच्चे की पढ़ाई-लिखाई पर भी आपका पैसा खर्च होगा।

- सूर्योदय से पहले उठकर सूर्य नमस्कार करें व सूर्य को जल चढ़ाएं।
- गुरुवार के दिन केला या बेसन के लड्डू गरीबों में बाटें और वीरवार का व्रत करें।
- अपने घर में पारद शिवलिंग स्थापित करें एवं उसका नित्य पूजन करें।

वार्षिक फलादेश - 2037

इस वर्ष शनि सिंह राशि एवं एकादश भाव में रहेंगे। 19 अक्टूबर तक राहु कर्क राशि एवं दशम भाव में रहेंगे और उसके बाद मिथुन राशि एवं नवम भाव में प्रवेश करेंगे। वर्षारम्भ में गुरु वृष राशि एवं अष्टम भाव में रहेंगे। 26 अप्रैल को मिथुन एवं नवम भाव में प्रवेश करेंगे और अतिचारी होकर 16 सितम्बर को कर्क राशि एवं दशम भाव में प्रवेश करेंगे। 29 अगस्त से 28 नवम्बर तक वक्री मंगल वृष राशि एवं अष्टम भाव में रहेंगे।

व्यवसाय

व्यावसायिक जीवन के लिए यह वर्ष उत्तम रहेगा। एकादशस्थ शनि के कारण व्यापार में अच्छी सफलता मिलेगी। नौकरी करने वालों की अचानक पदोन्नति हो सकती है। 26 अप्रैल तक गुरु ग्रह का गोचर प्रतिकूल होने के कारण जल्दबाजी में कोई निर्णय न लें। गलत-सही का चुनाव करने के बाद ही निर्णय लें। अन्यथा आपको हानि हो सकती है।

गुरु ग्रह के गोचर के बाद समय बहुत ही श्रेष्ठ रहेगा। आमदनी के नये-नये स्रोत मिलने की उम्मीद है। इस अवधि में कोई नया कार्य प्रारम्भ करेंगे, तो उसमें सफलता मिलने की उम्मीद ज्यादा है। आपको अनुभवी और वरिष्ठ लोगों का अच्छा सहयोग मिलेगा जिससे आपके कार्यों में लाभ की उम्मीद और बढ़ जाएगी।

धन संपत्ति

वर्ष का प्रारम्भ जितना लाभकारी होगा उतना ही चुनौतीपूर्ण भी होगा। साल की शुरुआत में निवेश से सम्बंधित योजनाओं पर ध्यान न दें और अपने दस्तावेज भी संभाल कर रखें। हड़बड़ी में कोई भी कार्य न करें नहीं तो आर्थिक हानि हो सकती है। निवेश व आर्थिक निर्णय लेते समय सतर्क रहें व जल्दबाजी न करें। जितना ज्यादा हो सके धन की बचत करने की कोशिश करें और फिजूल के खर्चों पर नियंत्रण रखें।

चतुर्थ स्थान पर राहु ग्रह की दृष्टि के कारण कोई करीबी ही आपको दगा दे सकता है। ऐसे लोगों से बचने के लिए किसी भी प्रकार के वित्तीय लेनदेन में पूरी सावधानी बरतें। गुरु ग्रह का गोचर आपके लिए काफी शुभ है। फंसे हुए व रुके हुए धन की प्राप्ति होगी। 16 सितम्बर से द्वितीय एवं चतुर्थ स्थान पर गुरु ग्रह की दृष्टि प्रभाव से अचल संपत्ति के साथ साथ वाहन का भी सुख प्राप्त होगा। मांगलिक कार्य या सामाजिक कार्यों में आप का धन खर्च हो सकता है।

आप अपने बच्चे की उच्च शिक्षा पर भी धन व्यय करेंगे।

घर—परिवार, समाज

परिवार के सदस्यों के साथ बेहतर संबंध बनाकर चलना आपके लिए लाभप्रद रहेगा। नहीं तो चतुर्थ स्थान पर राहु की दृष्टि विषमता की स्थिति उत्पन्न कर सकती है। अतः आपको खुद पर नियंत्रण रखना होगा। माता के साथ आपके संबंध मधुर नहीं रहेंगे, उनके साथ झगड़ा होने की संभावना है। अतः थोड़ा सावधान रहें। पिता के साथ कुछ अनबन हो सकती है। परन्तु 26 अप्रैल को गुरु ग्रह का गोचर सामाजिक प्रतिष्ठा के लिए बहुत ही शुभ है। सामाजिक गतिविधियों में आप बढ़ चढ़ के भाग लेंगे, जिससे समाज में मान—सम्मान के साथ साथ आपकी ख्याति भी बढ़ेगी। आपको भाई बहनों का पूर्ण सहयोग मिलेगा।

सितम्बर के बाद पारिवारिक रूप से समय बहुत ही शुभ हो रहा है। द्वितीय एवं चतुर्थ स्थान पर गुरु दृष्टि प्रभाव से आपके परिवार में सुख शान्ति का वातावरण बनेगा। पूरे परिवार का सहयोग प्राप्त होगा और घरेलू वातावरण भी अच्छा रहेगा। माता का पूर्ण सहयोग मिलेगा। परन्तु आपके बच्चों के स्वास्थ्य के लिए यह समय अच्छा नहीं है।

संतान

वर्ष का प्रारम्भ संतान के लिए अच्छा नहीं है। आपके बच्चे अपने परिश्रम के बल पर आगे बढ़ेंगे। वे अपने बौद्धिक बल पर अपने लक्ष्य को प्राप्त करेंगे। अष्टमस्थ गुरु संतान को स्वास्थ्य संबंधित परेशानी दे सकते हैं। ऐसे में उनके स्वास्थ्य पर ज्यादा ध्यान देना चाहिए।

अप्रैल के बाद समय काफी अनुकूल हो रहा है। नवविवाहित व्यक्तियों को संतान रत्न की प्राप्ति हो सकती है। आपके बच्चे शिक्षा के क्षेत्र में विशेष उन्नति करेंगे। दूसरे बच्चे के लिए यह वर्ष सामान्य रहेगा।

स्वास्थ्य

इस वर्ष आपके स्वास्थ्य में उतार चढ़ाव की स्थिति बनी रहेगी। अष्टमस्थ गुरु के कारण मौसमजनित बीमारियों से परेशान हो सकते हैं। यदि पहले से कोई लम्बी बीमारी है तो परहेज की ज्यादा आवश्यकता है। ऐसी स्थिति में आपको खान पान के साथ अपनी दिनचर्या भी सुधारनी चाहिए। लग्न स्थान पर शनि की दृष्टि आपको आलसी बना सकती है। किसी आर्थिक मुद्दे को लेकर या किसी विरोधी के कारण दिमागी तनाव न पालें। चिड़—चिड़े न बनें अन्यथा इस सबका आपकी सेहत पर विशेष प्रभाव पड़ेगा।

26 अप्रैल के बाद स्वतः आपके स्वास्थ्य में सुधार होना शुरू हो जाएगा। लग्न स्थान पर शुभ ग्रह के प्रभाव से मन में अच्छे विचार आएंगे। आपके अंदर रोग प्रतिरोधक शक्ति का संचार होगा, जिससे आपका स्वास्थ्य अनुकूल बना रहेगा। फिर भी सुबह सुबह व्यायाम करना आपके लिए लाभदायक रहेगा।

करियर एवं प्रतियोगी परीक्षा

यात्रा की दृष्टि से यह वर्ष ठीक-ठाक रहेगा। वर्ष के प्रारम्भ में द्वादश स्थान पर गुरु की दृष्टि विदेश यात्रा का योग बना रही है। 26 अप्रैल के बाद आपकी छोटी-मोटी यात्राएं होती रहेंगी। नवमस्थ गुरु के कारण लम्बी यात्राओं के साथ साथ धार्मिक यात्राएं भी हो सकती हैं।

यात्रा के अंतराल में किसी के साथ आपकी मित्रता हो सकती है। यह मित्रता आपके लिए लाभप्रद रहेगी। सितम्बर के बाद नौकरी करने वाले व्यक्तियों का स्थानान्तरण होगा। यह स्थानांतरण आपके मनोनुकूल स्थान पर भी हो सकता है। अपने घर से दूर रहने वाले व्यक्तियों की जन्म भूमि की यात्रा होगी।

यात्रा-तबादला

विद्यार्थियों के लिए वर्ष का पूर्वार्द्ध अनुकूल नहीं रहेगा। विद्यार्थियों के लिए बाधाएं आती रहेंगी। परन्तु अप्रैल माह के बाद शिक्षा के क्षेत्र में उन्नति करेंगे। उच्च शिक्षा प्राप्ति के लिए अच्छे शैक्षणिक संस्थान में प्रवेश मिल सकता है।

विद्याध्ययन में एकाग्रता बढ़ाने के लिए गुरुवार के दिन उपवास करें। व्यापार व नौकरी में अचानक उन्नति के योग बने हुए हैं।

धर्म कार्य एवं ग्रह शांति

धार्मिक कार्यों के लिए वर्ष का प्रारम्भ अच्छा नहीं रहेगा। अष्टम स्थान का गुरु धार्मिक कार्यों के लिए अच्छा नहीं है। अतः पूजा, पाठ, यज्ञ, अनुष्ठान में आपका मन कम ही लगेगा। लग्न स्थान पर शनि की दृष्टि के कारण मानसिक द्वन्दता बनी रहेगी, जिससे पूजा पाठ में मन एकाग्र नहीं हो पायेगा। गुरु ग्रह का गोचर धार्मिक कार्यों के लिए बहुत ही शुभ है। आपका मन धार्मिक कार्यों की ओर आकृष्ट होगा। अपने गुरुजनों का सम्मान करेंगे। उनके दिये गये उपदेशों का पालन करेंगे और गरीबों की सहायता कर उनके दुःख दूर करेंगे। विशेष रूप से आप भगवान शिव जी की उपासना करेंगे।

- द्विज, देव, ब्राह्मण, बुजुर्ग, गुरु व मंदिर के पूजारी की सेवा सुश्रूषा करें।
- केला या पीली वस्तु का दान करें। वीरवार का व्रत करें एवं बेसन के लड्डू दान करें।
- तुला दान करें व महामृत्युंजय मन्त्र का नित्य पाठ करें।
- श्वेतार्क गणपति अपने पूजा घर में स्थापित करें और उसके सामने देशी घी का दीपक जलाएं।

वार्षिक फलादेश - 2038

इस वर्ष राहु मिथुन राशि एवं नवम भाव में रहेंगे। 22 अक्टूबर तक शनि सिंह राशि एवं एकादश भाव में रहेंगे और उसके बाद कन्या राशि एवं द्वादश भाव में गोचर करेंगे। वर्षारम्भ में गुरु कर्क राशि दशम भाव में रहेंगे और वक्री होकर 17 जनवरी को मिथुन राशि एवं नवम भाव में गोचर करेंगे और पुनः मार्गी होकर 11 मई को कर्क राशि एवं दशम भाव में आजाएंगे और अतिचारी होकर 7 अक्टूबर को सिंह राशि एवं एकादश भाव में प्रवेश करेंगे।

व्यवसाय

एकादश स्थान का शनि कार्य व्यवसाय के लिए श्रेष्ठ है। आपको व्यापार में लाभ एवं उन्नति प्राप्त होगी। मई के बाद नौकरी करने वाले व्यक्तियों का पदोन्नति के साथ स्थानान्तरण होगा। यह स्थानान्तरण आपके लिए लाभप्रद रहेगा। उन्नति के मार्ग इस वर्ष प्रशस्त रहेंगे तथा अनावश्यक समस्याओं एवं व्यवधानों का आपको सामना नहीं करना पड़ेगा। आपका चतुर्मुखी विकास होगा।

यदि आप भूमि से संबंधित कार्य कर रहे हैं तो सफलता अवश्य मिलेगी। कुछ सम्मानित व बड़े लोगों का सहयोग मिलेगा। यदि कोई नया कार्य प्रारम्भ करना चाहते हैं तो यह समय बहुत ही शुभ है। परन्तु अक्टूबर के बाद समय किंचित प्रभावित हो रहा है। राहु एवं शनि ग्रह का गोचर प्रतिकूल होने के कारण कुछ प्रतिद्वंदी आपके कार्यों में रुकावट डाल सकते हैं, जिससे आप परेशान हो सकते हैं। अतः इस समय के अंतराल में आप बड़े विवेक से काम लें। व्यापार में किसी पर आंख बन्द कर विश्वास न करें नहीं तो हानि हो सकती है।

धन संपत्ति

एकादशस्थ शनि के प्रभाव से धनागम में वृद्धि होगी जिससे आपकी आर्थिक स्थिति में वृद्धि होगी। मई के बाद द्वितीय एवं चतुर्थ स्थान पर गुरु ग्रह की दृष्टि प्रभाव से भूमि, भवन, वाहन के साथ रत्न आभूषण इत्यादि की प्राप्ति होगी। अपने परिवार के सदस्यों तथा रिश्तेदारों के मांगलिक कार्यों में धन का व्यय करेंगे। यदि कोई बड़ा निवेश करना पड़े तो उस क्षेत्र से जुड़े अनुभवी व्यक्तियों की सलाह अवश्य लें।

अक्टूबर के बाद शनि ग्रह का गोचर प्रतिकूल होने के कारण बीमारी इत्यादि में धन व्यय होगा। अनावश्यक खर्च बढ़ सकता है। अतः अपने खर्चों पर अंकुश लगाएं तथा किसी को उधार न दें। यदि पैतृक संपत्ति पर कोई वाद-विवाद चल रहा हो तो फैसला आपके के हक में नहीं होगा।

घर—परिवार, समाज

इस साल पारिवारिक माहौल अनुकूल रहेगा। घर परिवार में सुख शान्ति का माहौल बना रहेगा। पारिवारिक अनुकूलता का आप विशेष ध्यान रखेंगे तथा अन्य लोगों को भी इसमें सम्मिलित करेंगे। रिश्तेदारों के साथ भी आपके संबंध मधुर रहेंगे। मई के बाद आपके माता पिता के लिए समय बहुत ही शुभ हो रहा है तथा उनका स्वाभाव बहुत ही सरल होगा। कर्तव्यपरायणता का भाव भी उनमें विद्यमान होगा तथा अपनी व्यवहार कुशलता से वे परिवार की सुख शान्ति एवं समृद्धि में वृद्धि करेंगे। आपके प्रति उनके मन में विशेष स्नेह का भाव होगा।

एकादशस्थ शनि के प्रभाव से आपको मान सम्मान एवं प्रतिष्ठा की प्राप्ति होगी तथा अपनी बुद्धिमत्ता एवं विद्वता से आप किसी सामाजिक पद को भी अर्जित करने में समर्थ होंगे। समाज में आप आदरणीय एवं प्रभावशाली व्यक्ति होंगे। सभी लोग आपको यथोचित सम्मान प्रदान करेंगे। आप अपने जीवन में अर्जित उपलब्धियों से सन्तुष्ट रहेंगे।

संतान

संतान की दृष्टि से वर्ष का प्रारम्भ सामान्यतः अनुकूल रहेगा। पंचम स्थान पर गुरु की दृष्टि आपके बच्चों के लिए शुभ है। उन्नति के सारे मार्ग खुलेंगे और आपके बच्चों का चौमुखी विकास होगा। प्रथम संतान के बारे में शुभ समाचार प्राप्त होंगे। परन्तु राहु की युति संतान संबंधित कुछ परेशानी भी उत्पन्न कर सकती है। लेकिन उसका हल आप निकाल लेंगे।

मई के बाद समय किंचित प्रभावित हो रहा है। अतः आपके बच्चों को स्वास्थ्य संबंधित परेशानी हो सकती है, जिससे उनकी शिक्षा—दीक्षा व उन्नति में व्यवधान आने की संभावना बन रही है। लेकिन चिंता की कोई बात नहीं है। अक्टूबर के बाद समय फिर से अनुकूल हो रहा है। यह समय संतान की भाग्योन्नति के लिए बहुत ही शुभ है।

स्वास्थ्य

यह साल स्वास्थ्य के लिए अच्छा रहेगा। लग्न स्थान पर गुरु एवं शनि की संयुक्त दृष्टि प्रभाव से आपकी शारीरिक आरोग्यता की प्राप्ति व कार्य क्षमताओं में वृद्धि के प्रबल संकेत हैं। आपकी सकारात्मक सोच में वृद्धि होगी। आपके अंदर नवीन विचारों का सृजन होगा। मई के बाद समय और भी उत्तम हो रहा है। उस समय अच्छे स्वास्थ्य के साथ आपका खान—पान एवं दिनचर्या भी सुधरेगी।

अक्टूबर के बाद शनि ग्रह का गोचर प्रतिकूल होने के कारण रक्तचाप, वायु विकार व पित्त विकार आदि रोगों की संभावना हो सकती है। अत्यधिक आलस्यता के कारण आप स्वस्थ रहते हुए भी बीमारी जैसा अनुभव करेंगे। यदि आपने स्वास्थ्य पर ध्यान नहीं दिया तो किसी बड़ी बीमारी के चपेट में आ सकते हैं। ऐसी स्थिति में आपको अपने स्वास्थ्य पर विशेष ध्यान देना चाहिए।

करियर एवं प्रतियोगी परीक्षा

विद्यार्थियों के लिए वर्ष का प्रारम्भ अनुकूल रहेगा। पंचम स्थान पर गुरु की दृष्टि विद्यार्थियों के लिए अच्छी रहेगी। शिक्षा के क्षेत्र में अच्छी उन्नति करेंगे। उच्च शिक्षा प्राप्ति के लिए अच्छे शैक्षणिक संस्थान में आपको प्रवेश मिल सकता है। एकादशस्थ शनि के प्रभाव से प्रतियोगिता परीक्षा में भी सफलता मिलेगी तथा करियर में अच्छी उन्नति करेंगे।

मई के बाद अत्यधिक भोजन एवं आलस्य से बचें। विद्याध्ययन में एकाग्रता बढ़ाने के लिए गुरुवार के दिन उपवास करें। यदि आप व्यापारी हैं तो 22 अक्टूबर के बाद आपके व्यापार में व्यवधान आ सकता है। नौकरी करने वालों के लिए यह वर्ष सामान्य रहेगा।

यात्रा-तबादला

छोटी मोटी यात्राओं के साथ आपकी लम्बी यात्राएं भी होंगी। इन यात्राओं से आपको अत्यधिक लाभ मिलेगा। मई के बाद नौकरी करने वाले व्यक्तियों का पदोन्नति के साथ स्थानान्तरण भी हो सकता है।

22 अक्टूबर के बाद द्वादशस्थ शनि के प्रभाव से आपकी विदेश यात्रा होने के प्रबल योग बन रहे हैं। यात्रा करते समय या वाहन चलाते समय सावधानी अत्यधिक जरूरी है। क्योंकि द्वादश स्थान का शनि यात्रा के अंतराल में दुर्घटना का भी योग बना रहा है।

धर्म कार्य एवं ग्रह शांति

धार्मिक कार्यों के लिए वर्षारम्भ श्रेष्ठ है। पूजा पाठ के प्रति आपकी रुचि बढ़ेगी। दान पुण्य अधिक करेंगे। पंचम स्थान पर गुरु ग्रह की दृष्टि प्रभाव से ध्यान व योग अधिक करेंगे।

आध्यात्मिक ज्ञान के कारण आपको अलौकिक आनन्द की अनुभूति होगी। सत्संग व सत्कर्म अधिक करेंगे। भागवत कथा सुनना व सत्संग में जाना

आपका नैसर्गिक गुण होगा। अक्टूबर के बाद आप दान पुण्य अधिक करेंगे।

- प्रत्येक दिन हनुमान चालीसा का पाठ करें।
- सूर्योदय के समय सूर्य को जल दें।
- शनिवार के दिन पीपल के वृक्ष के नीचे जल चढ़ाएं एवं शाम के समय चौमुखी दीपक जलाएं।
- वीरवार के दिन पीली वस्तु का दान करें।

वार्षिक फलादेश - 2039

वर्षारम्भ में शनि कन्या राशि एवं द्वादश भाव में रहेंगे तथा वक्री होकर 5 अप्रैल को सिंह राशि एवं एकादश भाव में प्रवेश करेंगे और पुनः मार्गी होकर 13 जुलाई को कन्या राशि एवं द्वादश भाव में आ जाएंगे। 7 अप्रैल को राहु वृष राशि एवं अष्टम भाव में प्रवेश करेंगे। वर्षारम्भ में गुरु सिंह राशि एवं एकादश भाव में रहेंगे तथा 3 मार्च को वक्री होकर कर्क राशि एवं दशम भाव में प्रवेश करेंगे और मार्गी होकर 2 जून को सिंह राशि एवं एकादश भाव में आ जाएंगे और अतिचारी होकर 4 नवम्बर को कन्या राशि एवं द्वादश भाव में गोचर करेंगे।

व्यवसाय

वर्ष के प्रारम्भ में शनि ग्रह का गोचर प्रतिकूल होने के कारण कार्य व्यवसाय में उतार चढ़ाव की स्थिति बनी रहेगी। गुप्त व प्रत्यक्ष शत्रुओं द्वारा आपके कार्यों में रुकावटें डाली जा सकती हैं। हार्डवेयर, ईंधन व कानून से जुड़े लोगों के लिए यह समय अच्छा नहीं है। हालांकि 5 अप्रैल से समय अच्छा हो रहा है। उस समय आपके व्यापार में सुधार होगा। नौकरी करने वाले व्यक्तियों की पदोन्नति हो सकती है। भूमि, वाहन व शिक्षा से जुड़े लोगों का चौमुखी विकास होगा। दशमस्थ गुरु के प्रभाव से मान सम्मान व यश में वृद्धि होगी।

वर्ष का उत्तरार्द्ध आपके लिए अच्छा नहीं रहेगा क्योंकि शनि एवं राहु ग्रह का गोचर एक साथ प्रतिकूल होने से आपके सारे कार्य प्रभावित होंगे। आपके प्रतिद्वंदी आपको किसी कानूनी प्रक्रिया में फंसा सकते हैं। अतः जितना हो सके वाद-विवाद व कोर्ट कचहरी से दूर रहना ही आपके लिए लाभप्रद रहेगा। इस समय के अंतराल में कोई नया कार्य प्रारम्भ न करें तथा पुराने कार्यों को ही अच्छे ढंग से चलाएं। किसी पर भी ज्यादा विश्वास न करें तथा अपने मन की बात सब के साथ शेयर न करें। 4 नवम्बर के बाद व्यवसाय, नौकरी व निवेश संबंधी मामलों में जल्दबाजी में जोखिम भरा निर्णय लेना घातक होगा।

धन संपत्ति

द्वादशस्थ शनि के प्रभाव से आर्थिक स्थिति में उतार चढ़ाव की स्थिति बनी रहेगी। धनागम तो होगा परन्तु व्यय अधिक होने के कारण बचत नहीं कर पाएंगे। आप अपनी भौतिक सुख सुविधाओं पर अधिक खर्च करेंगे। परन्तु 5 अप्रैल के बाद अचल धन व रत्नादि वस्तुओं की प्राप्ति हो सकती है। आय के स्रोत बढ़ेंगे तथा रुके हुए व फंसे हुए धन की प्राप्ति होगी। नौकरी करने वाले व्यक्तियों के वेतन में अचानक बढ़ोत्तरी होगी तथा आपको बड़े अधिकारियों से भी लाभ प्राप्त होगा।

वर्ष के उत्तरार्द्ध में राहु एवं शनि ग्रह का गोचर प्रतिकूल होने के कारण आर्थिक हानि का योग बना रहा है। इस समय आपको खर्चों पर नियंत्रण और भावनाओं पर काबू रखने की जरूरत है। अचानक परिवार में कुछ ऐसे खर्चे आ सकते हैं जिससे आपको आर्थिक कमी का एहसास हो सकता है। अतः इस समय के अंतराल में आपको सावधान रहना चाहिए। 4 नवम्बर के बाद आर्थिक लेन देन व निवेश न करें नहीं तो आपका पैसा फंस सकता है।

घर-परिवार, समाज

द्वादश स्थान का शनि पारिवारिक वातावरण के लिए अच्छा नहीं है। घरेलू माहौल को अनुकूल बनाये रखने के लिए छोटी मोटी बातों को अनदेखा न करें नहीं तो आपका पारिवारिक वातावरण ज्यादा प्रभावित हो सकता है। आपको अपनी वाणी पर भी नियंत्रण रखना होगा। परन्तु 5 अप्रैल से समय अनुकूल हो रहा है। आपके भाई बहनों की उन्नति होगी। माता पिता का पूर्ण सहयोग मिलेगा। परिवार में सुख शान्ति का वातावरण बना रहेगा। आपके व्यक्तित्व में निखार व चमक पैदा होगी। धर्मपत्नी के साथ संबंध मधुर बने रहेंगे। मान सम्मान तथा पद प्रतिष्ठा में वृद्धि होगी, जिससे समाज में आपका यश सर्वत्र व्याप्त होगा। सभी लोग आपसे प्रभावित होंगे तथा आपको उचित सम्मान प्रदान करेंगे।

13 जुलाई के बाद समय फिर से प्रभावित हो रहा है। राहु एवं शनि ग्रह का गोचर प्रतिकूल होने से पारिवारिक चिंताएं बढ़ सकती हैं। ससुराल एवं मातुल पक्ष के लोगों के लिए यह समय शुभ नहीं है। इस समय के अंतराल में घरेलू जिम्मेदारियां बढ़ेंगी, जिससे आप मानसिक रूप से परेशान हो सकते हैं। ऐसे में आप अपनी धैर्य शक्ति बढ़ाएं तथा पारिवारिक स्थिति को अनुकूल बनाए रखने के लिए पूर्ण प्रयास करें क्योंकि 4 नवम्बर के बाद समय और ज्यादा प्रतिकूल हो रहा है।

संतान

पंचम स्थान पर गुरु की दृष्टि संतान के लिए श्रेष्ठ योग बना रही है। प्रथम संतान के विषय में शुभ समाचार प्राप्त होंगे। शिक्षा के क्षेत्र में भी अच्छी प्रगति करेंगे। नवविवाहित व्यक्तियों को संतान रत्न की प्राप्ति होगी। 3 मार्च के बाद आपके बच्चों को उन्नति करने के लिए अधिक प्रयास करना पड़ेगा। प्रथम संतान का स्वास्थ्य खराब हो सकता है। परन्तु 2 जून के बाद समय बहुत ही श्रेष्ठ हो रहा है।

आपके बच्चों का चौमुखी विकास होगा तथा वे आपकी उम्मीदों से

बढ़कर कार्य करेंगे। यदि आपके बच्चे विवाह के योग्य हैं तो विवाह होने का प्रबल योग बन रहा है। परन्तु 4 नवम्बर के बाद समय फिर से प्रतिकूल हो रहा है। अतः उस समय उनके रहन सहन पर विशेष ध्यान देना होगा।

स्वास्थ्य

वर्ष के प्रारम्भ में आपके स्वास्थ्य में उतार-चढ़ाव काफी देखने को मिलेंगे। खासकर जोड़ों में दर्द, सिर में दर्द, मानसिक चिंता एवं वायु संबंधी समस्या हो सकती है। अतः स्वास्थ्य को लेकर किसी प्रकार की लापरवाही न करें अन्यथा स्वास्थ्य ज्यादा प्रतिकूल हो सकता है। व्यापारिक कारणों या अपने निजी कारणों की वजह से मानसिक तनाव बढ़ सकता है। द्वादशस्थ शनि के कारण आपको ऐसा लगेगा कि आप धीरे धीरे कमजोर होते जा रहे हैं। परन्तु 5 अप्रैल से आपके स्वास्थ्य में सुधार होगा। खान पान तथा दिनचर्या पर आप विशेष ध्यान देंगे। अपने दैनिक जीवन नवीन गतिविधियों को शामिल करेंगे। जैसे सुबह व्यायाम करना या खेल कूद व प्रतियोगिता में शामिल होगा।

13 जुलाई से राहु एवं शनि ग्रह का गोचर प्रतिकूल होने से आप अचानक बीमार हो सकते हैं। आपकी दैनिक दिनचर्या भी खराब हो सकती है। मसालेदार और तेल वाले आहार के प्रति आपकी रुची बढ़ेगी। इसे नियंत्रित करने की कोशिश करें नहीं तो आपका मोटापा बढ़ सकता है। आलस्य का त्याग कर स्फूर्तिवान बनें। आपके लिए लाभप्रद रहेगा।

करियर एवं प्रतियोगी परीक्षा

द्वादश स्थान में शनि का गोचर प्रतिकूल होने के कारण आलस्यता व दीर्घसूत्रता आपकी उन्नति में बाधक बन सकती है। अतः समय का सदुपयोग के साथ मन को एकाग्र कर अपने लक्ष्य के प्रति केन्द्रित करना आपके लिए लाभप्रद रहेगा। 5 अप्रैल के बाद विद्यार्थियों के लिए समय अनुकूल हो रहा है। जो विद्यार्थी किसी नये कॉलेज के लिए प्रवेश परीक्षा की तैयारी कर रहे हों उन्हें मनोनुकूल अच्छे कॉलेज में दाखिला मिल जाएगा। यदि गूढ़ विज्ञान और मनोविज्ञान में आपकी रुचि है तो उनके लिए समय अनुकूल है।

13 जुलाई के बाद यदि शिक्षा के संदर्भ में कोई लुभावना प्रस्ताव मिल रहा है तो सावधान रहिए, यह प्रस्ताव आपके लिए अच्छा नहीं है। शनि एवं राहु ग्रह का गोचर अनुकूल नहीं होने कारण आपको धोखा मिल सकता है। जो व्यक्ति विदेश में अपना करियर बनाना चाहते हैं, उनके लिए यह समय बहुत ही शुभ है।

यात्रा—तबादला

वर्ष के प्रारम्भ में द्वादश स्थान के शनि विदेश यात्रा के प्रबल योग बना रहे हैं। तृतीय स्थान पर गुरु की दृष्टि प्रभाव से छोटी यात्राएं होती रहेंगी। इस वर्ष आपकी सारी यात्राएं अचानक होंगी क्योंकि नवमस्थ राहु के कारण पूर्व निर्धारित यात्राएं निरस्त होंगी।

5 अप्रैल के बाद उच्च शिक्षा हेतु आपकी विदेश यात्रा होगी। नौकरी करने वाले व्यक्तियों का पदोन्नति के साथ स्थानान्तरण होगा। यह स्थानान्तरण आपके अनुकूल स्थान पर भी हो सकता है। यात्रा करते समय व वाहन चलाते समय सावधानी बहुत ही जरूरी है क्योंकि 13 जुलाई के बाद राहु एवं शनि का गोचर दुर्घटना इत्यादि का प्रबल योग बना रहा है।

धर्म कार्य एवं ग्रह शांति

धार्मिक कार्यों के लिए यह वर्ष मिला जुला रहेगा। वर्षारम्भ में आप एक कर्मनिष्ठ व्यक्ति होंगे अर्थात् कर्म को ही अपना धर्म मानेंगे और कर्म पर ज्यादा विश्वास करेंगे। गरीबों की सहायता करेंगे और उसके दुःखों को दूर करने का पूर्ण प्रयास करेंगे। 5 अप्रैल के बाद आपके अंदर ईश्वर के प्रति विश्वास बढ़ेगा। जिससे आप निःस्वार्थ भाव से भगवान की पूजा करेंगे। सुबह शाम मन्दिर जाना व पूजा पाठ करना आपका नैसर्गिक गुण होगा। आपके दैनिक पूजा पाठ में भी सुधार होगा।

- प्रत्येक दिन हनुमान चालीसा का पाठ करें व मंगलवार के दिन हनुमानजी को चोला चढ़ाएं।
- अपने घर में पारद शिवलिंग की स्थापना करें और सुबह सुबह उसका दर्शन करें।
- दुर्गा कवच का पाठ करें तथा आठ मुखी रुद्राक्ष काले धागे में सोमवार के दिन धारण करें।
- तुला दान मतलब अपने बजन के बराबर अन्न का दान करें।

वार्षिक फलादेश - 2040

इस वर्ष शनि कन्या राशि एवं द्वादश भाव में रहेंगे। पूरे वर्ष राहु वृष राशि एवं अष्टम भाव में रहेंगे तथा 11 दिसम्बर को मेष राशि एवं सप्तम भाव में प्रवेश करेंगे। वर्षारम्भ में गुरु कन्या राशि एवं द्वादश भाव में रहेंगे तथा वक्री होकर 6 अप्रैल को सिंह राशि एवं एकादश भाव में गोचर करेंगे तथा मार्गी होकर पुनः 28 जून को कन्या राशि एवं द्वादश भाव में आ जाएंगे तथा अतिचारी होकर 3 दिसम्बर को तुला राशि एवं प्रथम भाव में प्रवेश करेंगे।

व्यवसाय

वर्षारम्भ व्यवसायिक उन्नति के लिए अच्छा नहीं है। गुरु, राहु एवं शनि ग्रह का गोचर प्रतिकूल होने के कारण आपके प्रतिद्वंदी आगे बढ़ेंगे तथा आपको किसी षड्यन्त्र में फंसा सकते हैं। यदि आप नौकरी में हैं तो बड़े अधिकारियों से वैचारिक मतभेद होने के कारण आपकी उन्नति रुक सकती है या प्रतिकूल स्थान पर स्थानान्तरण हो सकता है ऐसी विषम परिस्थिति में आपको बड़े ही विवेक से काम लेना होगा। लोहा, तेल, कच्चे माल के कारखानों आदि से जुड़े लोगों के लिए समय ज्यादा प्रभावित रहेगा। 6 अप्रैल के बाद गुरु ग्रह का गोचर शुभ होने के कारण कुछ सफलता मिलेगी। अनुभवी व वरिष्ठ अधिकारियों का सहयोग मिलेगा, जिसके प्रभाव से कार्यक्षेत्र में उन्नति के मार्ग प्रशस्त होंगे।

वर्ष के उत्तरार्द्ध में समय फिर से प्रभावित हो रहा है। मालिक या किसी सत्ताधारी से संबंध बिगड़ जाने के कारण व्यापार या कार्यक्षेत्र प्रभावित रह सकता है। काम धंधा अच्छा नहीं चलेगा। लेन देन के व्यापार में हानि होने की संभावना है। कार्यक्षेत्र से सम्बन्धित कुछ न कुछ परेशानियां सदैव घेरे रहेंगी। इन तमाम कारणों के चलते इस अवधि में किसी नए काम के बारे में सोचना या नए काम की शुरुआत करना जोखिम भरा होगा। आप स्वयं में आत्मविश्वास की कमी का अनुभव करेंगे।

धन संपत्ति

मुख्यतः सभी ग्रहों का गोचर प्रतिकूल होने के कारण अनावश्यक खर्चें बढ़ेंगे, जिससे संचित धन में कमी आ सकती है। जोखिम भरे कार्यों में धन निवेश न करें। शीघ्र पैसा कमाने वाले तरीकों पर अंकुश लगाएं। धन के मामले में किसी पर बहुत जल्दी विश्वास न करें। घर में रोग की अधिकता होगी जिसके निवारण में धन का व्यय होगा। रिश्तेदारों व मित्रों के साथ पैसे का लेन देन न करें नहीं तो उनके साथ आपके संबंध बिगड़ सकता है। 3 मार्च से 2 जून तक समय कुछ अच्छा हो रहा है। फिर भी निवेश के मामले में सावधान रहें क्योंकि द्वादश स्थान

में शनि ग्रह का गोचर शुभ नहीं है।

परिवार में मांगलिक कार्य सम्पन्न होंगे उसमें भी आपका पैसा खर्च हो सकता है। अपनी व्यापारिक उन्नति के लिए बैंक से लोन भी ले सकते हैं। नई संपत्ति क्रय करने के लिए यह समय शुभ नहीं है। धन संपत्ति से जुड़े मामलों को कोर्ट कचहरी में ले जाने से बचें। नहीं तो आपका ज्यादा नुकसान होगा। आप कुछ ऐसे कामों में उलझे रह सकते हैं जो कम फायदा देने वाले होंगे। कुछ बेकार के कामों में भी आप पैसे बर्बाद कर सकते हैं। कुछ ऐसे खर्चे भी सामने आ सकते हैं जिनकी आपने उम्मीद नहीं की होगी। इस प्रकार की आर्थिक समस्याएं आपकी दिमागी शांति को भंग करने का काम करेंगी। 3 दिसम्बर के बाद समय कुछ अनुकूल होगा।

घर-परिवार, समाज

परिवार के कुछ लोगों के बर्ताव से आपकी भावनाएं आहत हो सकती हैं। कुछ विषम परिस्थितियां भी निर्मित होंगी अतः अच्छा यही रहेगा कि विपरीत परिस्थितियों को झेलते समय आप अपने अन्दर प्रतिरोधात्मक शक्ति विकसित करें। कुछ लोगों का व्यवहार वैमनस्य पूर्ण भी रह सकता है। आपके ईष्ट-मित्र अपने वादों से मुकर सकते हैं तथा उनके साथ आपके संबंध खराब हो सकते हैं।

आपके बच्चों का स्वास्थ्य अच्छा नहीं रहेगा। द्वितीय स्थान में केतु की स्थिति इस बात के संकेत कर रही है कि यदि आपने निष्ठा के साथ संबंधों को सुधारने का प्रयास किया तो आपके सम्बंध संतोषप्रद रह सकते हैं। अपने दाम्पत्य जीवन को सुखमय बनाये रखने के लिए अपने जीवनसाथी के साथ विशेष स्नेह व सहनशीलता से काम लेना होगा। सामाजिक पद प्रतिष्ठा के लिए यह वर्ष समान्य रहेगा।

संतान

गुरु ग्रह का गोचर प्रतिकूल होने के कारण बच्चों के लिए समय शुभ नहीं है। आपके बच्चे कुसंगति का शिकार हो सकते हैं। उनका रहन-सहन व दिनचर्या बिगड़ सकती है, जिससे उनकी उन्नति में व्यवधान आ सकता है। 6 अप्रैल को गुरु ग्रह का गोचर संतान के लिए शुभ है। आपके बच्चे अपनी योग्यता के बल पर उन्नति करेंगे तथा उनके बारे में शुभ सामाचार प्राप्त होंगे। नव विवाहित व्यक्तियों को संतान रत्न की प्राप्ति होगी।

वर्ष का उत्तरार्द्ध आपके बच्चों के स्वास्थ्य के लिए अच्छा नहीं है। आलस्यता एवं दीर्घ सूत्रता के कारण उनकी उन्नति में व्यवधान आ सकता है।

स्वास्थ्य

स्वास्थ्य के दृष्टिकोण से यह वर्ष अच्छा नहीं रहेगा। स्वास्थ्य संबंधित परेशानी बनी रहेगी। चोट चपेट व वाहनादि से दुर्घटना इत्यादि का योग बन रहा है तथा कोई बड़ी समस्या भी हो सकती है। पेट संबंधी समस्या जैसे अचानक पेट दर्द, गैस, अपच या बदहजमी आदि हो सकती है। सर्जरी आदि होने की भी संभावनाएं बनी हुई हैं। अतः स्वास्थ्य को लेकर सचेत रहना उचित होगा। खान-पान पर संयम रखना बहुत जरूरी होगा क्योंकि आपके स्वास्थ्य को सबसे ज्यादा खतरा फूड पॉइजनिंग के कारण होगा। 6 अप्रैल से 28 जून तक समय कुछ अच्छा हो रहा है। इस समय के अंतराल में आप अपने को स्वस्थ महसूस करेंगे।

वर्ष के उत्तरार्द्ध में समय फिर से प्रभावित हो रहा है। आर्थिक मुद्दे को लेकर या किसी विरोधी के कारण दिमागी तनाव भी रह सकता है। किसी यात्रा के दौरान भी आपका स्वास्थ्य खराब हो सकता है। अतः अनावश्यक यात्राएं करना भी ठीक नहीं होगा। गलत प्रवृत्तियों पर भी अंकुश लगाने की आवश्यकता है। किसी कानूनी मामले में पड़कर चिंता करना भी स्वास्थ्य पर बुरा प्रभाव डालेगा। खान-पान पर संयम रखें अन्यथा उदर विकार होने की सम्भावना है। आपको समय-समय पर डॉक्टर की सलाह लेते रहना चाहिए। इसके अतिरिक्त आपको अपनी रोग प्रतिरोधक क्षमताओं को बढ़ाने के लिए अपने खान पान का विशेष ध्यान रखना होगा। जहां तक हो सके शुद्ध शाकाहारी भोजन करें।

करियर एवं प्रतियोगी परीक्षा

प्रतियोगिता परीक्षाओं में सफलता की दृष्टि से यह साल श्रेष्ठ नहीं है, परन्तु 6 अप्रैल से 28 जून तक का समय विद्यार्थियों के लिए अच्छा है। यदि आप उच्च शिक्षा हेतु अच्छे शैक्षणिक संस्थान में प्रवेश पाना चाहते हैं तो यह समय उत्तम है।

यदि आप अपने करियर में सफलता पाना चाहते हैं तो अथक परिश्रम करना पड़ेगा। नौकरी इच्छित व्यक्तियों को कुछ दिन और इंतजार करना पड़ सकता है। जो लोग विदेश में अपना करियर बनाना चाह रहे हैं उनके लिए यह समय बहुत ही श्रेष्ठ है।

यात्रा-तबादला

इस वर्ष विदेश यात्रा के प्रबल योग बन रहे हैं। 6 अप्रैल के बाद आपकी छोटी मोटी यात्राएं होंगी। इन यात्राओं से आपको अच्छा लाभ मिलेगा।

यात्रा के अंतराल में आपकी किसी के साथ मित्रता भी हो सकती है। यह मित्रता आपके लिए काफी लाभप्रद रहेगी। सामुद्रिक यात्रा या जलीय स्थान की यात्रा अधिक होगी।

धर्म कार्य एवं ग्रह शांति

धार्मिक कार्य के लिए यह साल अच्छा नहीं है। आपके सारे धार्मिक कार्यों में व्यवधान आएंगे। आलस्यता के कारण आपका दैनिक पूजा पाठ भी प्रभावित होगा, परन्तु आप दान पुण्य अधिक करेंगे। गरीबों की सहायता करना, भूखे को खाना खिलाना आप अपना धर्म समझेंगे।

- वीरवार के दिन पीला वस्तु केला या बेसन के लड्डू दान करें।
- महामृत्युंजय यन्त्र अपने घर में स्थापित करें और नित्य उसका पूजन करें।
- शनिवार के दिन काली वस्तु का दान करें तथा काले कुत्ते को रोटी खिलाएं।
- प्रत्येक दिन सूर्योदय के समय सूर्य को जल दें।

वार्षिक फलादेश - 2041

इस वर्ष राहु मेष राशि एवं सप्तम भाव में रहेंगे। वर्ष के पूर्वार्द्ध में गुरु तुला राशि एवं लग्न स्थान में रहेंगे तथा वक्री होकर 6 मई से 30 जुलाई तक कन्या राशि एवं द्वादश भाव में रहेंगे तथा उसके बाद पुनः मार्गी होकर तुला राशि एवं लग्न स्थान में आ जाएंगे। 25 सितम्बर तक शनि कन्या राशि एवं द्वादश भाव में रहेंगे तथा उसके बाद तुला राशि एवं लग्न स्थान में प्रवेश करेंगे।

व्यवसाय

कार्य व्यवसाय के लिए वर्ष का पूर्वार्द्ध मिला-जुला रहेगा। राहु एवं शनि ग्रह का गोचर प्रतिकूल होने के कारण व्यवसाय में उतार-चढ़ाव की स्थिति बनी रहेगी। व्यापारिक उन्नति के लिए कोई बड़ा निवेश न करें नहीं तो आपका पैसा फंस सकता है। लग्नस्थ गुरु के कारण आपको सरकारी अफसरों और अनुभवी लोगों का सहयोग भी पर्याप्त रूप से मिलता रहेगा।

6 मई से 30 जुलाई तक आपके कार्यों में व्यवधान आने की संभावना बन रही है। मित्र के साझेदारी में कड़वाहट आने की संभावना बन रही है। जुलाई के बाद आप अपने कार्यक्षेत्र को लेकर कुछ नई योजनाएं बनाएंगे तथा आपके कार्यों में सुधार होगा। वर्षान्त में आप व्यवसाय में अधिक व्यस्त रहेंगे। प्रतिष्ठा में बढ़ोत्तरी व आय के साधनों में सुधार होने के प्रबल योग हैं।

धन संपत्ति

आर्थिक मामलों के लिए इस वर्ष आपको ज्यादा सतर्क रहना होगा क्योंकि द्वादश स्थान में शनि ग्रह का गोचर धन संपत्ति के लिए अच्छा नहीं है। कुछ अनावश्यक खर्च भी आ सकते हैं जो आपकी आर्थिक स्थिति को कमजोर कर सकते हैं। 6 मई के बाद आप कोई बड़ा निवेश न करें नहीं तो आपका पैसा फंस सकता है। शेयर बाजार व सट्टे-लॉटरी में धन लगाने से बचें।

वर्ष के उत्तरार्द्ध में आर्थिक स्थिति को बेहतर करने के लिए आप कठोर परिश्रम करेंगे। थोड़ी सूझ-बूझ और अवसर को पहचान कर आप धन कमाने में सफल रहेंगे। अनावश्यक खर्चों पर नियंत्रण रखना आपकी प्राथमिकता होनी चाहिए, ताकि अवसर पड़ने पर पैसों की दिक्कत न हो। 25 सितम्बर के बाद धन संपत्ति के मामले में सुधार देखने को मिलेगा। जीवनसाथी को अपने कार्यक्षेत्र में कोई सफलता मिलने से आपको आर्थिक सहयोग मिलना संभव है।

घर—परिवार, समाज

पारिवारिक जीवन की बात करें तो यह वर्ष सामान्य रहेगा। संतान या पिता के लिए वर्ष का प्रारम्भ शुभ रहने वाला है। 6 मई के बाद अचानक धर्मपत्नी के साथ संबंधों में खटास आने की संभावना बन रही है। पारिवारिक सदस्यों का सहयोग नहीं मिलने के कारण आप कुछ परेशान रह सकते हैं, परन्तु 30 जुलाई के बाद समय काफी अनुकूल हो रहा है।

वर्ष के उत्तरार्द्ध में पारिवारिक अनुकूलता के साथ-साथ सामाजिक प्रतिष्ठा में भी वृद्धि होगी। परिवार में खुशी का माहौल बना रहेगा। वर्षान्त दाम्पत्य जीवन के लिए काफी शुभ है। पति-पत्नी के बीच भावनात्मक लगाव में वृद्धि होगी। पुराने परिचितों से मिलने-जुलने और पुराने रिश्तों को फिर से तरोताजा करने के लिए अच्छा समय है।

संतान

वर्षारम्भ बच्चों के लिए शुभ है। पंचम स्थान पर गुरु की दृष्टि बच्चों की उन्नति के लिए श्रेष्ठ योग बना रही है। संतान के विषय में शुभ समाचार प्राप्त होंगे। शिक्षा के क्षेत्र में अच्छी प्रगति होने के शुभ योग बन रहे हैं।

वर्ष के उत्तरार्द्ध में संतान के पराक्रम में वृद्धि होगी तथा इनका सामाजिक स्तर भी बढ़ेगा। यह समय आपके दूसरी संतान के लिए ज्यादा शुभ है।

स्वास्थ्य

वर्ष का प्रारम्भ शारीरिक आरोग्यता की प्राप्ति व कार्य क्षमताओं में वृद्धि के लिए शुभ है। मानसिक शांति, प्रसन्नता एवं सकारात्मक सोच में वृद्धि होगी। लग्नस्थ गुरु के कारण आप प्रत्येक कार्य को सकारात्मक रूप से करेंगे। खाने पीने पर आप विशेष ध्यान देंगे।

6 मई से 30 जुलाई के अंतराल आपके स्वास्थ्य में कुछ कमी आने की संभावना बन रही है। मौसम जनित बीमारियां परेशान कर सकती हैं।

करियर एवं प्रतियोगी परीक्षा

विद्यार्थियों की वर्ष के प्रारम्भ में पढ़ाई-लिखाई में रुचि बढ़ेगी। स्मरण शक्ति अच्छी होने से आप कठिन विषयों को बड़ी आसानी से समझने में सफल होंगे। उच्च शिक्षा तथा रिसर्च से जुड़े छात्रों को अपनी मेहनत के अनुपात में ज्यादा बेहतर परिणाम प्राप्त होंगे।

जो छात्र विदेश में जाकर उच्च शिक्षा प्राप्त करना चाहते हैं उनको 6

मई के बाद नये अवसर मिलने की उम्मीद है तथा 25 सितम्बर के बाद शिक्षा संबंधित सभी कार्यों में सफलता मिलने की प्रबल संभावना बन रहा है।

यात्रा—तबादला

वर्ष का प्रारम्भ व्यवसायिक लम्बी यात्राओं के लिए शुभ है। धार्मिक व पर्यटक स्थल की यात्रा होने की संभावना बन रहा है। 6 मई से 30 जुलाई के अंतराल आपके विदेश यात्रा का प्रबल योग बन रहा है।

वर्ष के उत्तरार्द्ध में आपके व्यवसायिक यात्राएं भी अधिक होंगी। मुख्यतः सभी यात्राएं मंगलमय व सौभाग्यवर्धक तथा आनंददायक होंगी।

धर्म कार्य एवं ग्रह शांति

वर्ष के प्रारम्भ में पंचम स्थान पर गुरु ग्रह की दृष्टि धार्मिक कार्य के लिए शुभ है। पूजा पाठ के प्रति आपकी रुचि बढ़ेगी। व्रत, यज्ञ, अनुष्ठा व भगवान की भक्ति में ज्यादा समय व्यतित होगा। गुरु भक्ति व मन्त्र सिद्धि के प्रति भी आपकी रुचि बढ़ेगी।

- एक मुखी रुद्राक्ष धारण करें।
- विष्णु सहस्रनाम का पाठ करें।
- नीलम रत्न धारण करें।
- अपने पूजा घर में स्फटिक श्रीयन्त्र की स्थापना करें।

वार्षिक फलादेश - 2042

इस वर्ष शनि तुला राशि एवं लग्न स्थान में रहेंगे। 22 जून तक राहु मेष राशि एवं सप्तम भाव में रहेंगे तथा उसके बाद मीन राशि एवं छठे भाव में प्रवेश करेंगे। वर्ष के पूर्वार्द्ध में गुरु वृश्चिक राशि एवं द्वितीय भाव में रहेंगे तथा वक्री होकर 10 जून से 27 अगस्त तक तुला राशि एवं लग्न स्थान में गोचर करेंगे और पुनः मर्गी होकर फिर से वृश्चिक राशि एवं द्वितीय भाव में आ जाएंगे।

व्यवसाय

व्यवसाय की दृष्टि से यह वर्ष अधिक अनुकूल नहीं रहेगा। व्यवसाय में परिवर्तन की संभावना बन रही है। नौकरी करने वालों का स्थानान्तरण हो सकता है। जिम्मेदारियों का बोझ बढ़ेगा। व्यवसाय/नौकरी व निवेश संबंधी मामलों में जल्दबाजी में जोखिम भरा निर्णय लेना घातक होगा।

शनि ग्रह का गोचर प्रतिकूल होने के कारण कोई नया कार्य प्रारम्भ न करें। यदि करना बहुत जरूरी है तो उस क्षेत्र से जुड़े अनुभवी लोगों की सलाह जरूर लें। यदि किसी के साथ मिलकर व्यापार कर रहे हैं तो आप अपने भागीदार से असंतुष्ट रहेंगे।

धन संपत्ति

आर्थिक दृष्टि से यह वर्ष मिला जुला रहेगा। द्वितीयस्थ गुरु के कारण धनागम का स्रोत बना रहेगा। परिवार के सदस्यों और अन्य लोगों के हित में अधिक खर्च करेंगे।

निवेश के मामले में सावधानी रखना जरूरी होगा। जोखिम भरे कार्यों में धन निवेश न करें। शीघ्र पैसा बनाने के तरीकों पर अच्छी तरह सोच-विचार कर निर्णय लें। यह वर्ष जोखिम उठाने के लिए उपयुक्त नहीं है। संपत्ति के क्रय-विक्रय संबंधी कार्यों के लिए 22 जून को राहु ग्रह का गोचर सफलता लेकर आ रहा है। अंतिम निर्णय सोच समझ कर लें।

घर-परिवार, समाज

इस वर्ष आपके मान-सम्मान में लगातार वृद्धि होगी। आप सामाजिक गतिविधियों में और अधिक सक्रिय होंगे। सप्तमस्थ राहु पर शनि की दृष्टि जीवनसाथी की स्वास्थ्य संबंधी कठिनाईयों को बताता है। द्वितीय स्थान में गुरु की स्थिति परिवार में किसी सदस्य की वृद्धि का योग बना रही है।

वर्ष का उत्तरार्द्ध पारिवारिक मामलों के लिए अधिक अनुकूल नहीं है।

परिवार से जुड़े हर मामलों में बहुत सावधानी बरतने की आवश्यकता है। परिवार में कुछ लोगों के साथ वैचारिक मतभेद भी हो सकते हैं। वर्षान्त में घर में मांगलिक कार्य भी संभव होंगे।

संतान

संतान के लिए यह वर्ष सामान्यतः अनुकूल रहेगा। आपके बच्चे अपने परिश्रम के बल पर वांछित उन्नति एवं सफलता अर्जित करेंगे। माता पिता के प्रति उनके मन में पूर्ण आदर एवं सम्मान का भाव होगा। आपकी आज्ञापालन में वे हमेशा तत्पर रहेंगे।

आप अपनी ओर से उनकी उन्नति का यथोचित प्रबन्ध करेंगे और वे आपकी महत्वाकांक्षाओं की पूर्ति करने में सफल भी होंगे। यदि आपकी संतान विवाह के योग्य है तो विवाह का प्रबल योग बन रहा है।

स्वास्थ्य

लग्नस्थ शनि स्वास्थ्य में उतार चढ़ाव की स्थिति बनाए रखेंगे। यदि पहले से किसी बीमारी से पीड़ित हैं तो अपने स्वास्थ्य पर ज्यादा ध्यान देने की आवश्यकता है। चिकित्सकीय परामर्श लेते रहें और अपने खान-पान पर भी विशेष ध्यान दें। नहीं तो स्वास्थ्य ज्यादा प्रतिकूल हो सकता है।

जून के बाद आपके स्वास्थ्य में सुधार होगा क्योंकि लग्न स्थान में गुरु ग्रह का गोचर सकारात्मक ऊर्जाओं की वृद्धि कर रहा है, जो आपके स्वास्थ्य के लिए बहुत ही शुभ है। वर्षान्त में आपका स्वास्थ्य फिर से बिगड़ सकता है। अतः खान-पान पर संयम रखना बहुत जरूरी होगा क्योंकि आपके स्वास्थ्य को सबसे ज्यादा खतरा फूड पॉइजनिंग के कारण होगा। घुटनो में दर्द व पैर में चोट लगने की पूर्ण संभावना बन रही है।

करियर एवं प्रतियोगी परीक्षा

विद्यार्थियों के लिए यह समय उच्च शिक्षा प्राप्ति हेतु उत्तम है। जो विद्यार्थी किसी नये कॉलेज में प्रवेश परीक्षा की तैयारी कर रहे हैं उन्हें मनोनुकूल अच्छे कॉलेज में दाखिला मिल जाएगा।

यदि गूढ़ विज्ञान और मनोविज्ञान में आपकी रुचि है तो उनके लिए समय अनुकूल है। यदि शिक्षा के संदर्भ में कोई लुभावना प्रस्ताव मिल रहा है तो आपको सावधान रहना चाहिए क्योंकि शनि ग्रह का गोचर प्रतिकूल चल रहा है जिसके कारण आपको धोखा मिल सकता है। यदि आप नौकरी की तलाश में हैं तो 22 जून के बाद वांछित नौकरी मिल सकती है।

यात्रा—तबादला

वर्ष के प्रारम्भ में छोटी—मोटी यात्राएं होंगी परन्तु 10 जून के बाद आप बड़ी यात्राओं का भी आनन्द लेंगे। व्यवसाय से संबंधित अधिक यात्राएं होंगी। तीर्थ यात्राओं का भी योग बन रहा है।

नौकरी करने वाले व्यक्तियों का स्थानान्तरण होगा। यह स्थानान्तरण आपके घर से दूर भी हो सकता है। विदेश यात्रा के लिए यह वर्ष अनुकूल नहीं है।

धर्म कार्य एवं ग्रह शांति

लग्न स्थान के शनि धार्मिक कार्यों में व्यवधान उत्पन्न करेंगे जिससे आप चाह कर भी कोई शुभ कार्य नहीं कर पाएंगे। आलस्य के कारण दैनिक पूजा पाठ भी प्रभावित होगा। जून के बाद लग्न स्थान में गुरु ग्रह के गोचरीय प्रभाव से समय अनुकूल हो रहा है। आपका मन धार्मिक कार्यों के प्रति विशेष आकर्षित होगा। घर में कोई मांगलिक या धार्मिक कार्य संपन्न होगा। किसी तीर्थ स्थान की यात्रा होगी। गुरु का आशीर्वाद व गुरु दीक्षा प्राप्त होगी।

वर्षान्त में आप दान पुण्य अधिक करेंगे। तन्त्र, मन्त्र व यन्त्र के प्रति भी आपकी रुचि बढ़ेगी। साधना व योग में आप अधिक से अधिक समय निकालेंगे। सत्संग में जाना व गुरुवाणी सुनना आपका नैसर्गिक गुण होगा।

- शिवजी की उपासना करें एवं महामृत्युंजय मंत्र का पाठ करें।
- मंगलवार के दिन हनुमान जी को चोला चढ़ाएं।
- अपने बड़े बुजुर्गों का आशीर्वाद प्राप्त करना एवं माता—पिता की सेवा करना लाभदायक रहेगा।
- शनिवार के दिन काले कुत्ते को रोटी खिलाएं एवं काली वस्तु का दान करें।

वार्षिक फलादेश - 2043

वर्ष के प्रारम्भ में गुरु वृश्चिक राशि एवं द्वितीय भाव में रहेंगे तथा 27 जनवरी को धनु राशि एवं तृतीय भाव में प्रवेश करेंगे और पुनः वक्री होकर 30 जुलाई को वृश्चिक राशि एवं द्वितीय भाव में गोचर करेंगे तथा अतिचारी होकर फिर से 11 सितम्बर को धनु राशि एवं तृतीय भाव में आ जाएंगे। पूरे साल शनि तुला राशि एवं लग्न स्थान में रहेंगे तथा 12 दिसम्बर को वृश्चिक राशि एवं द्वितीय भाव में प्रवेश करेंगे। 19 सितम्बर तक राहु मीन राशि एवं छठे भाव में रहेंगे तथा उसके बाद कुम्भ राशि एवं पंचम भाव में गोचर करेंगे।

व्यवसाय

इस वर्ष अच्छे परिणाम के लिए आपको कठिन परिश्रम करना होगा। संपर्कसूत्रों से निश्चित ही आपका भला होने वाला है। शब्दों में मिठास लाएं इससे आपको अधूरे कार्य पूरे करने में मदद मिलेगी। अपने अधिकारों में थोड़ी कटौती करें। यह आपके लिए अच्छा होगा। कार्यक्षेत्र में कुछ लोगों से किये गए समझौते में दरार आने की संभावना दिख रही है। इस दिशा पर तुरंत कार्यवाही करें। यदि आप साझेदारी में कार्य कर रहे हैं तो सभी कार्यों में पारदर्शिता रखें नहीं तो मित्रता में दरार आ सकती है। गैरकानूनी तरीकों से धन कमाने की कोशिश न करें नौकरी करने वाले व्यक्तियों के लिए यह वर्ष अच्छा रहेगा तथा आपसे बड़े अधिकारी आपकी सहायता करते रहेंगे।

11 सितम्बर के बाद आपको व्यापार में लाभ मिलेगा। बड़े अधिकारी, वरिष्ठ जन या अनुभवी लोगों का अच्छा सहयोग प्राप्त होगा, जिससे आप अपने कार्य व्यवसाय में कुछ विशेष करेंगे। यदि आप साझेदारी में कोई कार्य कर रहे हैं तो उसमें इच्छित लाभ मिलेगा तथा आप अपने साझेदार से संतुष्ट रहेंगे।

धन संपत्ति

अपनी आर्थिक स्थिति को बेहतर करने के लिए आप कठोर परिश्रम करने वाले हैं। अपने अनावश्यक खर्चों पर नियंत्रण रखना आपकी प्राथमिकता होनी चाहिए, ताकि अवसर पड़ने पर पैसों की दिक्कत न हो। लग्न स्थान का शनि आपके स्वास्थ्य पर पैसे खर्च करा सकता है। जिससे आपकी आर्थिक स्थिति कमजोर हो सकती है परन्तु वर्ष का उत्तरार्द्ध उत्तम रहेगा।

30 जुलाई के बाद आर्थिक स्थिति में विशेष सुधार देखने को मिलेगा। साथ ही कोई पुराना फँसा हुआ पैसा वापिस मिलने की उम्मीद है, जिससे आप काफी राहत महसूस करेंगे। संचित धन में वृद्धि होगी तथा रत्न आभूषण इत्यादि

वस्तुओं की प्राप्ति होगी। फिर भी निवेश के मामले सावधान रहना बहुत जरूरी है।

घर—परिवार, समाज

इस वर्ष आपका पारिवारिक जीवन सामान्य रहने वाला है। मित्रों के साथ किसी सामाजिक कार्यक्रम में शामिल हो सकते हैं। आपके भाईयो के लिए वर्ष का पूर्वार्द्ध उत्तम रहने वाला है। जीवनसाथी को स्वास्थ्य संबंधी समस्याओं के प्रति सचेत रहने की आवश्यकता है क्योंकि सप्तम स्थान पर शनि की दृष्टि पत्नी की सेहत के लिए अच्छी नहीं होती।

तृतीयस्थ गुरु पर शनि की दृष्टि प्रभाव से आपके पराक्रम तथा कार्य क्षमताओं का विकास होगा। सामाजिक गतिविधियों में आप बढ़ चढ़ के भाग लेंगे। सामाजिक कल्याण के लिए आप कोई विशेष कार्य संपन्न करेंगे, जिससे आपकी सामाजिक प्रतिष्ठा में वृद्धि होगी। 30 जुलाई को द्वितीय स्थान में गुरु ग्रह के गोचरीय प्रभाव से आपका घरेलू वातावरण अनुकूल रहेगा। माता पिता सहित पूरे परिवार का सहयोग प्राप्त होगा। ससुराल तथा मातुल पक्ष के लोगों के लिए यह समय बहुत ही शुभ है।

संतान

संतान के दृष्टिकोण से यह वर्ष सामान्य रहेगा। वर्षारम्भ में आपके बच्चे अपने परिश्रम के बल पर आगे बढ़ेंगे। वे अपने बौद्धिक बल के द्वारा अपने लक्ष्य को प्राप्त करेंगे। आपके दूसरे बच्चे के लिए यह वर्ष बहुत अच्छा है। यदि वे उच्च शिक्षा प्राप्त करना चाहते हैं तो अच्छे शैक्षणिक संस्थान में प्रवेश हो जाएगा। यदि वे विवाह के योग्य हैं तो विवाह होने का प्रबल योग बन रहा है।

19 सितम्बर के बाद सन्तान सम्बन्धी चिन्ताएं बढ़ेंगी। आपके बच्चों को स्वास्थ्य सम्बन्धी विकार उत्पन्न हो सकते हैं। शिक्षा—दीक्षा में रुकावटें आ सकती हैं। गर्भवती स्त्रियों को सावधान रहना चाहिए नहीं तो पंचमस्थ राहु के कारण आपका गर्भपात भी हो सकता है।

स्वास्थ्य

स्वास्थ्य के दृष्टिकोण से यह वर्ष अच्छा नहीं रहेगा। लग्न स्थान का शनि आपके स्वास्थ्य में उतार चढ़ाव कि स्थिति बनाए रखेगा। सामाजिक गतिविधियों की व्यस्तताओं के चलते आपको अपने स्वास्थ्य की चिन्ता नहीं रहेगी तथा आप समय पर अपना खान पान नहीं कर पाएंगे, जिसके परिणामस्वरूप स्वास्थ्य में गिरावट आ सकती है। बेहतर होगा कि आप अपने दैनिक जीवन में भोजन का अनुशासन बनाए रखें व लापरवाही ना करें। किसी आर्थिक मुद्दे को

लेकर आवश्यकता से ज्यादा चिंता न करें नहीं तो इससे भी आपकी मानसिक शान्ति भंग होगी। सुबह जल्दी उठ कर पार्क में घूमना या व्यायाम करना आपके लिए लाभप्रद रहेगा।

19 सितम्बर को राहु ग्रह का राशि परिवर्तन आपके स्वास्थ्य को और ज्यादा प्रभावित कर सकता है, जिससे रक्तचाप, वायु विकार व पित्त विकार आदि रोगों की संभावना दूर हो सकती है। शुद्ध शाकाहारी व सात्विक भोजन करें तथा मानसिक तनाव से स्वयं को दूर रखने के लिए योग, ध्यान, व्यायाम आदि नियमित रूप से करें।

करियर एवं प्रतियोगी परीक्षा

प्रतियोगिता परीक्षा के लिए यह वर्ष सामान्य रहेगा। छात्र वर्ग के लिए समय अनुकूल रहेगा। उच्च शिक्षा प्राप्त कर रहे विद्यार्थियों को मनचाहे परिणाम मिलने की संभावना है। आपकी एकाग्रता में बढ़ोत्तरी होगी। आप सभी विषयों का अभ्यास बहुत ही अच्छे तरीके से करेंगे परिणामस्वरूप नतीजों में सकारात्मकता देखने को मिलेगी। जो छात्र विदेश में जाकर उच्च शिक्षा प्राप्त करना चाहते हैं, उनको नए अवसर मिलने की उम्मीद है। प्रतियोगिता परीक्षा में भाग लेने वालों के लिए समय अनुकूल है।

19 सितम्बर के बाद प्रतियोगिता परीक्षार्थियों को अधिक मेहनत करनी होगी। आपको धैर्य और बुद्धिमत्ता से अपना काम संभालना होगा। आप अपने परिश्रम के बल पर अपने लक्ष्य को प्राप्त करेंगे। विद्यार्थियों की अध्ययन के प्रति रुचि बढ़ेगी। आलस्य की भावना सफलता में बाधक साबित हो सकती है।

यात्रा-तबादला

यात्रा के दृष्टिकोण यह वर्ष अच्छा रहेगा। वर्ष के पूर्वार्द्ध में तृतीय स्थान पर गुरु ग्रह के गोचरीय प्रभाव से छोटी-मोटी यात्राओं के साथ आपकी लम्बी यात्राएं भी होंगी।

व्यावसायिक यात्राओं के साथ आपकी मनोरंजनात्मक यात्राएं भी होती रहेंगी। इन यात्राओं से आपको काफी लाभ मिलेगा। लग्न स्थान का शनि यात्रा के अंतराल में आपका स्वास्थ्य प्रभावित कर सकता है।

धर्म कार्य एवं ग्रह शांति

धार्मिक कार्य के लिए यह वर्ष अनुकूल है। वर्षारम्भ में नवम स्थान पर गुरु की दृष्टि प्रभाव से आप पूजा पाठ में विशेष रुचि लेंगे। नियमित रूप से आप दैनिक पूजा करते रहेंगे।

गुरु ग्रह के गोचर के बाद यन्त्र, मन्त्र, तन्त्र के प्रति आपका विश्वास बढ़ सकता है तथा घरेलू सुख, शान्ति एवं समृद्धि प्राप्ति के लिए हवन, ग्रह शान्ति या अन्य कोई पूजा संपन्न करेंगे, जिसमें आपकी धर्मपत्नी का पूर्ण सहयोग मिलेगा।

- शनिवार के दिन काली वस्तु का दान करें तथा शनि मन्त्र का पाठ करें।
- आठ मुखी रुद्राक्ष सोमवार के दिन अभिमन्त्रित कर गले में धारण करें।
- नियमित रूप से श्रीसूक्तं और दुर्गा चालीसा का पाठ करें।
- प्रतिदिन सूर्य को जल दें।

योग

वाशि योग

सूर्याद्व्ययगैर्वाशिर्द्वितीयगैश्चन्द्रवर्जितैर्वेशि ।
उत्कृष्टवचाः स्मृतिमानुद्योगयुतो निरीक्षते तिर्यक् ।
सर्वशरीरे पृथुलो नृपतिसमः सात्त्विको वाशौ ॥

॥ सारावली ॥ अ.14/श्लोक 1, 6 ॥

यदि जन्मकुंडली में सूर्य से द्वादश स्थान में चंद्रमा को छोड़कर अन्य ग्रह विद्यमान हो तो वाशि नामक योग बनता है।

योग कारक ग्रह : बुध,सूर्य

योग की संभावना : 2 में 1

आपकी जन्मकुंडली में यह योग पूर्णरूप से घटित हो रहा है। फलस्वरूप आप उत्कृष्ट वाणी वाले, स्मरण शक्ति वाले, उद्यमी, तिरछी दृष्टि वाले, स्थूल शरीर वाले, राजा के समान व्यक्तित्व वाले तथा सात्त्विक प्रवृत्ति वाले होंगे।

राजकुलोत्पन्न राजयोग

स्वोच्चत्रिकोणगृहगैर्बलसंयुतैश्च
त्रयाद्यैर्नृपो भवति भूपतिवंशजातः ।

॥ सारावली ॥ अ. 35/श्लोक 2 ॥

यदि जन्म के समय में तीन या उससे अधिक ग्रह अपने उच्च में, मूलत्रिकोण तथा स्वराशि में स्थित हों तो ऐसा व्यक्ति राजकुल में उत्पन्न होकर राजा होता है।

योग कारक ग्रह : मंगल,बुध,शुक्र,शनि

योग की संभावना : 27 में 1

आपकी जन्मकुंडली में यह योग पूर्णरूप से घटित हो रहा है। फलस्वरूप आपको समाज में श्रेष्ठ मान प्रतिष्ठा प्राप्त होगी। अपने परिवार या कुल में आप श्रेष्ठ तथा प्रभावशाली माने जाएंगे। अपने पारिवारिक प्रतिष्ठा की वृद्धि करेंगे। आप सफल होंगे।

चक्रवर्ती राजयोग

एकोऽपि विहगः कुर्यात्पंचमांशगतो नृपम् ।
समस्तबलसम्पन्नश्चक्रवर्तिनमेव च ॥

॥ सारावली ॥ अ. 35 /श्लोक 64 ॥

यदि कोई भी ग्रह कुण्डली में अपने पंचमांश में स्थित हो तो जातक राजा होता है

और यदि पूर्णबली हो तो चक्रवर्ती राजा होता है।

योग कारक ग्रह : सूर्य,शनि

योग की संभावना : 2 में 1

आपकी जन्मपत्रिका में यह योग पूर्ण रूपेण प्रतिष्ठित हो रहा है। फलस्वरूप आप एक प्रसिद्ध सम्मानित देश—विदेशों में प्रतिष्ठा प्राप्त करने वाले राष्ट्राध्यक्ष/राज्याध्यक्ष अथवा सर्वोच्चाधिकारी होकर पूर्ण राज—सुख प्राप्त करेंगे।

धेनु योग :

भावैः सौम्ययुतेक्षितैस्तदधिपैः सुस्थानगैर्भास्वरैः
स्वोच्चस्वर्क्षगतैर्विलग्नभवनाद्योगाः क्रमाद्द्वादश।
सान्नापान्निविभवोऽखिलविद्यापुष्कलोऽधिककुटुम्बविभूतिः।
हेमरत्नधनधान्यसमृद्धो राजराज इवराजति धेनौ।।

।। फलदीपिका ।। अ.6/श्लोक 44, 46 ।।

यदि जन्मपत्रिका में द्वितीय भाव में शुभ ग्रह हों या दूसरे भाव को शुभ ग्रह देखते हों और दूसरे भाव का स्वामी उदित होकर स्वराशि या उच्च राशि में स्थित होता हुआ सुस्थान में बैठा हो तो धेनु योग बनता है।

योग कारक ग्रह : गुरु,मंगल

योग की संभावना : 96 में 1

आपकी जन्मपत्रिका में यह योग पूर्ण रूप से घटित हो रहा है। फलस्वरूप आप सुवर्ण, धन, धान्य और रत्न से समृद्ध, राजराज के समान होंगे। यहां पर राजराज के दो अर्थ हैं। 1. राजाओं का राजा, 2. कुबेर के समान भाव यह है कि आप धनवान होंगे। आप विद्या, कुटुम्ब, उत्तम भोजन आदि से युक्त होंगे।

छत्रयोग

भावैः सौम्ययुतेक्षितैस्तदधिपैः सुस्थानगैर्भास्वरैः
स्वोच्चस्वर्क्षगतैर्विलग्नभवनाद्योगाः क्रमाद्द्वादश।
सुसंसारसौभाग्यसन्तानलक्ष्मी
निवासो यशस्वी सुभाषी मनीषी।
अमात्यो महीशस्य पूज्यो धनाढ्यः
स्फुरत्तीक्ष्णबुद्धिर्भवेच्छत्रयोगे।।

।। फलदीपिका ।। अ. 4/श्लोक 44, 49

यदि जन्मपत्रिका में पंचम भाव में शुभग्रह हों या शुभ ग्रह से पंचम भाव निरीक्षित हो तथा पंचमेश अस्त न हो और वह स्वराशि या उच्चराशि में स्थित होकर उत्तम स्थान में बैठा हो तो

छत्रयोग बनता है।

योग कारक ग्रह : चंद्र,शनि

योग की संभावना : 96 में 1

आपकी जन्मकुंडली में यह योग पूर्णरूपेण घटित हो रहा है। फलस्वरूप आप सौभाग्यशाली, पुत्रवान, धनवान, यशस्वी, बुद्धिमान, प्रखर वक्ता, तेज बुद्धिवाले और राजसुख से युक्त राजा के मंत्री होंगे। आप राजसरकार से सम्मानित होंगे। आपको पंचम भाव से संबन्धित सभी सुख प्राप्त होंगे।

काम योग

भावैः सौम्युतेक्षितैस्तदधिपैः सुस्थानगैर्भास्वरैः

स्वोच्चस्वर्क्षगतैर्विलग्नभवनाद्योगाः क्रमाद्द्वादश।

परदारपराङ्मुखो भवेद्दरदारात्मजबन्धुसंश्रितः।

जनकादधिकः शुभैर्गुणैर्महनीयां श्रियमेति कामजः॥

॥ फलदीपिका ॥ अ. 6 / श्लोक 44, 51

यदि जन्मपत्रिका में सप्तम भाव में शुभ ग्रहों की दृष्टि हो तथा सप्तम स्थान में शुभ ग्रह बैठे हो एवं सप्तम भाव का स्वामी स्वराशि या उच्च राशि में स्थित होकर उत्तम स्थान में बैठा हो तो कामयोग बनता है।

योग कारक ग्रह : शुक्र,मंगल

योग की संभावना : 96 में 1

आपकी जन्मकुण्डली में यह योग पूर्णरूप से घटित हो रहा है। फलस्वरूप आप दूसरे के स्त्री में आसक्त नहीं होंगे और आपको उत्तम जीवनसाथी, सन्तान और बन्धुओं का सुख प्राप्त होगा। आप शुभ गुणों से युक्त लक्ष्मीवान् होंगे। आप अपने पिता से अधिक उच्च पद प्राप्त करेंगे।

सुनफा योग

सुनफा रविरहितैः वित्तसंस्थैः कैरववनबान्धवाद्विहगैः।

श्रीमान् स्वबाहुविभवो बहुधर्मशीलः

शास्त्रार्थविद्बहुयशाः सुगुणाभिरामः।

शान्तः सुखी क्षितिपतिः सचिवोऽथ वा स्यात्।

सुतः पुमान् विपुलधीः सुनफाभिधाने॥

॥ सारावली ॥ अ. 13/श्लोक 1, 4॥

यदि जन्मकुंडली में सूर्य को छोड़कर चंद्रमा से धनभाव में कोई ग्रह हो तो सुनफा योग बनता है।

योग कारक ग्रह : बुध,चंद्र

योग की संभावना : 2 में 1

आपकी जन्मपत्रिका में यह योग पूर्णरूप से घटित हो रहा है। फलस्वरूप आप लक्ष्मीवान्, अपने परिश्रम से धनार्जन करने वाले, धार्मिक, यशस्वी, गुणी, शान्तप्रिय, सुखी, राजा या मंत्री होंगे।

युद्ध कुशल एवं कलह प्रवीण योग

धैर्यान्वितो विक्रमराशिनाथसंयुक्तराश्यंशपतौ यदंशे ।

तदंशनाथे स्वगृहादिवर्गे युद्धे विदग्धः कलहप्रवीणः ॥

॥ सर्वार्थचिन्तामणि ॥ अ.4/श्लो.-33 ।

यदि जन्मपत्रिका में तृतीयेश जिसकी राशि अंश में है, वह ग्रह अपने राश्यादि वर्ग में हो तो जातक धैर्यवान्, युद्ध में चतुर और कलह करने में निपुण होता है।

योग कारक ग्रह : गुरु,मंगल

योग की संभावना : 9 में 1

आपकी जन्मकुंडली में यह योग पूर्ण रूपेण घटित हो रहा है। फलस्वरूप आप धैर्यधारण करने वाले, युद्ध में चतुर और कलह प्रिय प्राणी होंगे। ऐसा प्रतीत होता है।

धीर पुरुष योग

जीवान्विते धीरतया समेतः सर्वार्थशास्त्रार्थविशारदः स्यात् ॥

॥ सर्वार्थचिन्तामणि ॥ अ.4/श्लो.-41 ।

यदि जन्मकुंडली में तृतीयेश गुरु से युक्त हो तो सब अर्थ एवं शास्त्रार्थ पारंगत होता है।

योग कारक ग्रह : गुरु

योग की संभावना : 12 में 1

आपकी जन्मकुंडली में यह योग पूर्ण रूपेण घटित हो रहा है। फलस्वरूप आप विद्वान् एवं धैर्यवान् होंगे। ऐसा प्रतीत होता है।

कर्णरोग योग

तृतीयनाथे पापान्विते पापनिरीक्षिते वा वदन्ति कर्णोद्वारोगमत्र ।

॥ सर्वार्थचिन्तामणि ॥ अ.4/श्लो.-49 ।

यदि जन्मपत्रिका में तृतीयेश पाप युक्त या दृष्ट हो तो कर्णरोग होता है।

योग कारक ग्रह : मंगल,शनि,गुरु

योग की संभावना : 2 में 1

आपकी जन्मपत्रिका में यह योग पूर्णरूप से घटित हो रहा है फलस्वरूप आपको

कर्णरोग होगा। ऐसा प्रतीत होता है।

सर्प भय योग

॥ भारतीय ज्योतिष ॥ पृ.-285 ॥

यदि जन्मपत्रिका में तृतीये राहु स्थित राशि पद से युक्त हो अथवा लग्न राहु युक्त हो तो जातक को सर्प का भय होता है।

योग कारक ग्रह : राहु

योग की संभावना : 4 में 1

आपकी जन्मपत्रिका में यह योग पूर्ण रूपेण घटित हो रहा है। फलस्वरूप आपको सर्प का भय होगा। ऐसा प्रतीत होता है।

मातृस्नेह योग

यदा लग्नसुखेशौ वा मित्रभूतौ परस्परम् ।
शुभेक्षितौ शुभैर्युक्तौ मातृस्नेहं विनिर्दिशेत् ॥

॥ सर्वार्थचिन्तामणि ॥ अ.4/श्लो.-148

यदि जन्मपत्रिका में लग्नेश चतुर्थेश परस्पर मित्र हों, शुभ ग्रहों से युक्त और दृष्ट हो तो माता का विशेष स्नेह प्राप्त होता है।

योग कारक ग्रह : शनि,शुक्र

योग की संभावना : 36 में 1

आपकी जन्मपत्रिका में यह योग पूर्ण रूपेण घटित हो रहा है। फलस्वरूप आपको अपनी माता का विशेष स्नेह प्राप्त हो ऐसा प्रतीत होता है।

पुत्रनाश योग

पापमध्ये तु यद्भावे तदीशेऽपि तथा स्थिते ।
कारके पापसंयुक्ते पुत्रनाशं वदेत्तदा ॥

॥ सर्वार्थचिन्तामणि ॥ अ. 5/श्लो.-14

यदि जन्मपत्रिका में पंचम भाव या पंचमेश पाप ग्रहों के बीच हो, तथा संतान कारक ग्रह भी पाप युक्त हो तो पुत्रनाश योग बनता है।

योग कारक ग्रह : मंगल,शनि,गुरु

योग की संभावना : 6 में 1

आपकी जन्मपत्रिका में यह योग पूर्ण रूपेण घटित हो रहा है। फलस्वरूप आपको संतान सुख में बाधा हो ऐसा प्रतीत होता है।

दत्तकपुत्र प्राप्ति योग

मान्दं सुतर्क्षं यदि वाऽथबौधं

मान्द्यर्कपुत्रान्वितवीक्षितं चेत् दत्तात्मजः ॥

॥ फलदीपिका ॥ अ. 12/श्लो.-8 ॥

जन्मपत्रिका में यदि पंचम भाव पर मिथुन, कन्या, मकर या कुंभ राशि हो और शनि पंचम स्थान में स्थित हों या पंचम भाव पर मान्दिय शनि की दृष्टि हो तो दत्तक पुत्र प्राप्त होता है।

योग कारक ग्रह : शनि

योग की संभावना : 9 में 1

आपकी जन्मपत्रिका में यह योग पूर्ण रूपेण घटित हो रहा है। फलस्वरूप आपको पुत्र गोद लेना पड़े, ऐसी संभावना है।

पुत्रहीन योग

शुक्रेन्दुवर्गे सुतमे विलग्नाच्छुक्रेण चन्द्रेण युतेऽथ दृष्टे ।

शन्यारदृष्टे सति पुत्रहीनः ॥

॥ जातकपारिजात ॥ अ. 13/श्लो.-10

यदि जन्मपत्रिका में लग्न से पंचम भाव शुक्र या चंद्रमा से दृष्ट, युक्त और वर्ग में हो और उसपर शनि एवं मंगल की दृष्टि हो तो पुत्रहीन योग बनता है।

योग कारक ग्रह : चंद्र,शुक्र,मंगल,शनि

योग की संभावना : 6 में 1

आपकी जन्मपत्रिका में यह योग पूर्ण रूपेण घटित हो रहा है। फलस्वरूप आप पुत्रहीन होंगे, ऐसा प्रतीत होता है।

शिर मुख या गुल्म रोग योग

बलहीनेऽरिनाथे वा लग्नस्थे वा धरासुते ।

मूर्धार्तिमुखरोगो वा गुल्मविद्रधिभाग्भवेत् ॥

॥ सर्वार्थचिन्तामणि-अ.-5/श्लो.-42 ॥

यदि जन्मकुंडली में षष्ठेश निर्बल हो या लग्नस्थ हो अथवा लग्न में मंगल हो तो शिर में पीड़ा या मुखरोग अथवा गुल्मरोग होता है।

योग कारक ग्रह : गुरु

योग की संभावना : 2 में 1

आपकी जन्मकुंडली में यह योग पूर्ण रूपेण घटित हो रहा है। फलस्वरूप आपको शिर

रोग, मुखरोग या गुल्म रोग से पीड़ित होंगे। ऐसा प्रतीत होता है।

विना पीड़ा मृत्यु योग

सौम्यांशके सौम्यगृहेऽथ सौम्य सम्बन्धगे वा क्षयेशे।
अक्लेशजातं मरणं नराणाम्॥

॥ फलदीपिका—अ.14/श्लो.—21॥

यदि जन्मकुंडली में द्वादशेश सौम्यग्रह की राशि या सौम्य ग्रह के नवांश या सौम्य ग्रह के साथ स्थित हो तो विना पीड़ा की मृत्यु होती है।

योग कारक ग्रह : बुध

योग की संभावना : 2 में 1

आपकी जन्मकुंडली में यह योग पूर्ण रूपेण घटित हो रहा है। फलस्वरूप आपका मरण विना क्लेश का होगा। ऐसा प्रतीत होता है।

विना पीड़ा मृत्यु योग

सौम्यगृहेऽथ सौम्य सम्बन्धगे क्षयभे क्षयेशे।
अक्लेशजातं मरणं नराणाम्॥

॥ फलदीपिका—अ.14/श्लो.—21॥

यदि जन्मपत्रिका में द्वादश भाव में सौम्य ग्रह स्थित हो और द्वादश भाव का स्वामी भी सौम्य ग्रह हो तो मृत्यु काल में विशेष पीड़ा नहीं होती है।

योग कारक ग्रह : बुध

योग की संभावना : 2 में 1

आपकी जन्मकुंडली में यह योग पूर्णरूपेण घटित हो रहा है। फलस्वरूप आपको मृत्युकाल में अधिक पीड़ा नहीं होगी। ऐसा प्रतीत होता है।

वैकुण्ठवास योग

वैकुण्ठं शशिजो सम्प्रापयेत्प्राणिनः
सम्बन्धाद्व्ययनाकस्य कथयेत्तत्रान्त्यराश्यंशतः।

॥ फलदीपिका—अ.14/श्लो.—23॥

यदि जन्मपत्रिका के द्वादश भाव में बुध स्थित हो या द्वादश भाव जिस ग्रह की नवांश में हो यदि उस नवांश में बुध हो अथवा द्वादश भाव के स्वामी बुध से कोई संबंध स्थापित करता हो तो मरणोपरांत वैकुण्ठवासी होता है।

योग कारक ग्रह : बुध

योग की संभावना : 2 में 1

आपकी जन्मपत्रिका में यह योग पूर्ण रूपेण घटित हो रहा है। फलस्वरूप आप मरणोपरांत वैकुण्ठवासी होंगे। ऐसा प्रतीत होता है।

स्वर्गनिवास योग

भृगुसुतः स्वर्गसम्प्रापयेत्प्राणिनः ।

सम्बन्धाद्व्ययनायकास्य कथयेत्तत्रान्त्यराश्यंशतः ॥

॥ फलदीपिका-अ.14 / श्लो.-23 ॥

यदि जन्मपत्रिका में द्वादश भाव में शुक्र स्थित हो या द्वादश भाव जिस ग्रह की नवांश में हो यदि उस नवांश में शुक्र हो या द्वादश स्थान के स्वामी शुक्र से संबंध स्थापित करता हो तो जातक स्वर्ग में निवास करता है।

योग कारक ग्रह : शुक्र

योग की संभावना : 2 में 1

आपकी जन्मकुंडली में यह योग पूर्णरूपेण घटित हो रहा है। फलस्वरूप आप मरणोपरांत स्वर्ग में निवास करेंगे। ऐसा प्रतीत होता है।

एक पत्नी योग

स्वर्क्षे कुटुम्बाधिपतौ कलत्रनाथे यदा त्वेककलत्रभाक् स्यात् ॥

॥ सर्वार्थचिन्तामणि ॥ अ-6 / श्लो.-13

यदि जन्मकुण्डली में द्वितीयेश और सप्तमेश अपनी-अपनी राशि में स्थित हो अर्थात् दोनों स्वराशिगत हो तो एक स्त्रीवाला होता है।

योग कारक ग्रह : मंगल

योग की संभावना : 72 में 1

आपकी जन्मपत्रिका में यह योग पूर्ण रूपेण घटित हो रहा है। फलस्वरूप आपको एक ही जीवनसाथी से सुख प्राप्त होगा। ऐसा प्रतीत होता है।

बहुभार्या योग

कुटुम्बकलत्रनाथाभ्यां समेतैर्ग्रहनायकैर्वा कलत्रसंख्यां प्रवदन्ति सन्तः ।

॥ सर्वार्थचिन्तामणि ॥ अ.-6 / श्लो.-14 ।

यदि जन्मकुण्डली में द्वितीयेश या सप्तमेश के साथ जितने ग्रह हों उतनी पत्नी होती हैं।

योग कारक ग्रह : गुरु, मंगल

योग की संभावना : 12 में 1

आपकी जन्मकुण्डली में यह योग पूर्ण रूपेण घटित हो रहा है। फलस्वरूप आपके दो या दो से अधिक जीवनसाथी हो सकते हैं। ऐसा प्रतीत होता है।

द्विविवाह योग

कारके पापसंयुक्ते नीचराश्यंशकेऽपि वा ।

पापग्रहेण संदृष्टे विवाहद्वयमादिशेत् ॥

॥ सर्वार्थचिन्तामणि ॥ अ.-6/श्लो.-19

यदि जन्मकुण्डली में सप्तमभाव कारक ग्रह पाप युक्त हो अथवा नीचराशि नीचांशक में पाप ग्रह से दृष्ट हो तो द्विविवाह योग बनता है।

योग कारक ग्रह : शुक्र,सूर्य,राहु,केतु

योग की संभावना : 3 में 1

आपकी जन्मपत्रिका में यह योग पूर्ण रूपेण घटित हो रहा है। फलस्वरूप आप दो जीवन साथी होंगे। ऐसा प्रतीत होता है।

सुलक्षणी स्त्री योग

दारेशो शुभसंयुक्ते शुभखेचरवीक्षिते ।

शुभग्रहाणां मध्यस्थे सत्कलत्रादिभाग्भवेत् ॥

॥ सर्वार्थचिन्तामणि ॥ अ.-6/श्लो.-40

यदि जन्मपत्रिका में सप्तमेश शुभ ग्रह से युक्त, शुभ ग्रह से दृष्ट तथा शुभ ग्रहों के मध्य में हो तो जातक को सुलक्षणी स्त्री प्राप्त होती है।

योग कारक ग्रह : मंगल,गुरु

योग की संभावना : 2 में 1

आपकी जन्मकुण्डली में यह योग पूर्ण रूपेण घटित हो रहा है। फलस्वरूप आपका जीवनसाथी सुलक्षणी होगा। ऐसा प्रतीत होता है।

अतिकामी योग

पापव्योमचरान्वितौ तनुरिपुस्थानाधिपौ कामुकः ।

॥ जातकपारिजात ॥ अ.-14/श्लो.-3 ।

यदि जन्मपत्रिका में षष्ठेश पाप ग्रह से युक्त हो तथा लग्नेश भी पापग्रह से युक्त हो तो अति कामी योग बनता है।

योग कारक ग्रह : सूर्य,शुक्र

योग की संभावना : 16 में 1

आपकी जन्मपत्रिका में यह योग पूर्ण रूपेण घटित हो रहा है। फलस्वरूप आप अतिकामी होंगे। ऐसा प्रतीत होता है।

द्विभार्या योग

लग्नेशेंगे द्विभार्यो जारो वा ॥

॥ बृहद्योग रत्नाकर ॥ पृ. 303 ॥

यदि जन्मपत्रिका में लग्नेश लग्नस्थ हो तो द्वि भार्या योग होकर जार (व्यभिचारी) रहता है।

योग कारक ग्रह : शुक्र

योग की संभावना : 12 में 1

आपकी जन्मपत्रिका में यह योग पूर्ण रूपेण घटित हो रहा है। फलस्वरूप आपके दो विवाह हो, ऐसा प्रतीत होता है।

द्विभार्या योग

रन्ध्रेशेंगे अस्ते द्विभार्यः ॥

॥ बृहद्योग रत्नाकर ॥ पृ. 302 ॥

यदि जन्मपत्रिका में अष्टमेश लग्न में अथवा सप्तमभाव में स्थित हो तो द्विभार्या योग बनता है।

योग कारक ग्रह : शुक्र

योग की संभावना : 6 में 1

आपकी जन्मपत्रिका में यह योग पूर्ण रूपेण घटित हो रहा है। फलस्वरूप आपके दो विवाह हो, ऐसा प्रतीत होता है।

द्विभार्या योग

पापाः सप्तमे द्विभार्यः ।

॥ बृहद्योग रत्नाकर ॥ पृ. 303 ॥

यदि जन्मपत्रिका में सप्तम भाव में पाप ग्रह हो तो द्विभार्या योग बनता है।

योग कारक ग्रह : केतु

योग की संभावना : 4 में 1

आपकी जन्मपत्रिका में यह योग पूर्ण रूपेण घटित हो रहा है। फलस्वरूप आपके जीवन में दो जीवनसाथी आएंगे, अर्थात आपके दो विवाह हो, ऐसा प्रतीत होता है।

गजकेसरी योग

“केन्द्रस्थिते देवगुरौ शशाङ्काद्योगस्तदाहर्गजकेसरीति ।

दृष्टे सितार्येन्दुसुतैः शशाङ्के नीचास्तहीनैर्गजकेसरीस्यात् ।।”

।। बृ. पा. होरा. —योगाध्याय—श्लो. 1 ।।

चन्द्रमा से केन्द्र में गुरु हो तो गजकेसरी योग होता है या चन्द्रमा नीच अस्तादि में न गये हुये शुक्र, गुरु और बुध से देखा जाता हो तो भी गजकेशरी योग होता है।

योग कारक ग्रह : चंद्र, गुरु

योग की संभावना : 3 में 1

आपकी पत्रिका में गजकेसरी योग का सृजन हो रहा है। फलस्वरूप आप धनी, मेधावी, गुणी तथा राजप्रिय सम्मानित पुरुष होंगे।

काहल योग— प्रथम विधि

“अन्योन्यकेन्द्रगृहगौ गुरुबन्धुनाथौ—

लग्नाधिपे बलयुते यदि काहलः स्यात् ।।”

।। बृ. पा. होरा. —योगाध्याय—श्लो. 10 ।।

जिस जातक की पत्रिका में गुरु और चतुर्थेश परस्पर केन्द्र में हों, और लग्नेश बली हो तो काहल योग का सृजन होता है।

योग कारक ग्रह : शनि, गुरु, शुक्र

योग की संभावना : 48 में 1

आपकी पत्रिका के अनुसार काहल योग के प्रथम विधि के अनुसार पत्रिका में काहल योग का सृजन हो रहा है। फलस्वरूप आप तेजस्वी, साहसी, मूर्ख सेना के बल से युक्त, ग्राम पति, मुखिया या ग्राम प्रधान होंगे।

पारिजात योग

“सपारिजातद्युचरः सुखानि ।।”

।। बृ. पा. होरा. —योगाध्याय—श्लो. 34 ।।

जिसकी पत्रिका के “पारिजात” भाग में ग्रह हों तो उसे सभी प्रकार के उत्तम सुख की प्राप्ति होती है।

योग कारक ग्रह : चंद्र, बुध

योग की संभावना : 2 में 1

आपकी पत्रिका में ग्रह “पारिजात” वर्ग में स्थित है। फलस्वरूप आपको सभी प्रकार का उत्तम सुख प्राप्त होगा।

उत्तमवर्ग योग

“नीरोगतामुत्तमवर्गयातः।”

।। बृ. पा. होरा. —योगाध्याय—श्लो. 34 ।।

जिस जातक की पत्रिका के “उत्तमवर्ग” भाग में ग्रह हों तो वह प्राणी सभी प्रकार से निरोग रहता है।

योग कारक ग्रह : सूर्य, गुरु, शुक्र

योग की संभावना : 3 में 1

आपकी पत्रिका में ग्रह “उत्तमवर्ग” में स्थित है। फलस्वरूप आप सभी प्रकार से निरोग रहेंगे।

गोपुरांश योग

“सगोपुरांशो यदि गोधनानि ”

।। बृ. पा. होरा. —योगाध्याय—श्लो. 34 ।।

जिस जातक की पत्रिका में “गोपुरांश” भाग में ग्रह स्थित हो, वह मनुष्य गौ और धन दोनों से युक्त होता है।

योग कारक ग्रह : शनि

योग की संभावना : 4 में 1

आपकी पत्रिका में “गोपुरांश” योग का सृजन हो रहा है। फलस्वरूप आप गो धन अर्थात् पशुओं और धन से पूर्ण रहेंगे।

सिंहासनांश योग

“सिंहासनस्थः कुरुते विभूतिम् ”

।। बृ. पा. होरा. —योगाध्याय—श्लो. 34 ।।

जिस जातक की पत्रिका में “सिंहासनांश” भाग में ग्रह स्थित हो, तो वह प्राणी ऐश्वर्य देता है।

योग कारक ग्रह : मंगल

योग की संभावना : 4 में 1

आपकी पत्रिका में पूर्णरूपेण “सिंहासनांश” योग का सृजन हो रहा है। फलस्वरूप आप विभूति (धन—दौलत, राज—पाट) से युक्त सभी प्रकार से राजसुख से युक्त होंगे। अर्थात् आप ग्राम प्रखण्ड एवं जिला प्रधान होंगे।

वासि योग

“व्ययखेटैर्वाशि दिनेशात्।”

॥ बृ. पा. होरा. —योगाध्याय—श्लो. 51 ॥

यदि जन्मपत्रिका में सूर्य से बारहवें भाव में कोई ग्रह हो तो “वासि” योग का निरूपण होता है।

योग कारक ग्रह : बुध,सूर्य

योग की संभावना : 3 में 1

आपकी पत्रिका में पूर्णरूपेण “वासि” योग का सृजन हो रहा है। फलस्वरूप आपकी दृष्टि मन्द अर्थात् आपमें दृष्टिदोष रहेगा। आप परिश्रमी, नीचेदेखनेवाला एवं असत्यवादी होंगे।

वेशि योग

“धनखेटैर्वेशी दिनेशात्”

॥ बृ. पा. होरा. —योगाध्याय—श्लो. 51 ॥

यदि जातक के जन्मकाल पत्रिका में सूर्य से द्वितीय भाव में कोई ग्रह स्थित हो, तो जातक पर वेशि योग का सृजन होगा।

योग कारक ग्रह : मंगल,गुरु,सूर्य

योग की संभावना : 3 में 1

आपकी पत्रिका में पूर्णरूपेण “वेशि” योग का सृजन हो रहा है। फलस्वरूप आप दयावान, स्थूल शरीर वाले, चतुरवक्ता, आलस्य से युक्त एवं वक्र दृष्टि वाले प्राणी होंगे।